

दिशाबोधः

(सामाजिक उपन्यास)

श्रीराम शर्मा 'राम'

संगीता प्रकाशन

30/64, गली नम्बर 8, विश्वास नगर
गाहदरा, दिल्ली-110 032

सस्करण	पहला, 1989
प्रकाशक	सगीता प्रकाशन 30/64 गली नम्बर 8, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली 110 032
आवरण	जोशी, कला सगम
मूल्य	₹० 45 00
मुद्रक	श्री महावीर प्रिंटिंग प्रेस 27/100 गली नम्बर 7, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली 110 032

DISHA BODH

written by Shri Ram Sharma 'Ram'

Price Rs 45 00 Only

दिशा बोध

1

नाम सुखिया था उसका, परन्तु वह वस्तुतः दुःखिया थी। जिन्दगी का चाप सिर पर उठाए वह पथ की सकरी घाटिया को पार कर रही थी। वभी किसी पत्थर से टकराती, वभी पथ में पड़े शूल की पीडा से पैर को पकड कर रह जाती। उसके प्राणा की तडफ मन की टीस, सागर के गहर अन्तराल की तरह स्वत ही गभस्थ हो जाती थी। वह न किसी से कुछ कह पाती, न सुन पाती। मानो वह तिलों बनी, अपने-आप में उमड-धुमड कर रह जाती थी। पति के निधन के बाद, सुखिया के लिए मसुराल के द्वार अबहद बने थे। वकाव्य को प्राप्त हुई बहिन के पास जब भैया पहुँचा, तो उसे सुनाकर सुखिया की मास ने कहा था, तू आया है तो ले जा अपनी बहिन को। यह ऐसी डायन आई इस घर में, मेरे लाल को डस गयी यह कुलटा है, कुलच्छनी है, मैं इसे घर में नहीं रख सकती। जब मेरा लडका नहीं रहा, तो उमकी बहू भी महा नहीं रह सकेगी ।

सुखिया का भया अभी युवक था। गरम खून था उसके शरीर में। बहनोई के मरने का समाचार पाकर ही वह दौडा आया था। अभी दो वष पूव ही उसकी बहिन का विवाह हुआ था। सिर पर से पिता का साया हठ चुना था, वह अकेला ही परिवार की पतवार सम्भाले हुआ था। जब सुखिया की मास ने कटु वचन कहे, तो वह हत्प्रम रह गया। तुरंत लोम से भर उठा—' मौमी मेरी बहिन का जीवन तो बिगड गया, अब तुम इस तरह के कटु वचन कह कर उसके जडम पर नमक मत छिडको। मैं इसे साथ ले जाऊंगा। तुम बुलाओगी तो आएगी, अन्यथा उसी घर पर

अपनों जीवन बिता-धगी । दा राटी घहा भी मिलगी ।

सुखिया की सास का नाम था यशोदा । जब वह बहू के भया स बात कर थी, तो तभी, उसका पति रामदास घर म आया । उसके भाते-आते बहू के भाई नरपत की बात सुन ली थी । घर के चौक मे आते ही बोला 'क्या भया, किसे दो रोटी दे रह हो । क्या अपनी बहिन को ?'

नरपत बोला 'भौसी फहती है, मेरी बहन अशुभ है । महा रहने योग्य नहीं । डायन है उसक बेट का इत गयी ।'

रामदास का मुह कडवा हो गया, 'राम ! राम ! कसी बात करत हा, तुम ! कोई बहू-बेटो अशुभ होती है, क्या ! मेरा लडका तो अपनी मौत मरा था । उसका इतना ही अन्न जल था, इस घरती पर ।' उसने सास भरी—'भगवान की लीला अपार है । उसका कोई पार नहीं पा सकता । भगवान का नाम सत्य है और सब मिय्या है ।

यशोदा बाली—'तुम बहू को जाने दो । कुछ दिन रह आएगी ।'

रामदास बोला—'अभी नहीं, बेटे को गए अभी महीना भी पूरा नहीं हुआ । लोग सुनगे, तो क्या कहंग । बेटे के मरत ही बहू को निकाल दिया,—यही न ! कभी बुद्धि की बात भी कर लिया करो ।

यशोदा ने स्वर म तीव्रता लेकर कहा—मेरे पास बुद्धि कहा है । भाग्य कहा । मरा हाथी सरीखा बेटा चला गया, कम्बखन औरत का इससे बडा सबूत और क्या होगा ।' वह आद्र हो उठी । उसके मन की कथा हीठा पर उतर आई । वह रा पड़ी ।

रामदास बाहर की ञार लौटा—'शान्त पन, यशोदा ! अपन साथ मुझे भी परेशान मत कर । जब से मलखू गया हं न आया जाता हं—न रात मे सोचा जाता है । लगता है वह अपने साथ मेरा प्राण भी नाच कर ले गया । रामदाम दरवाजे पर खडा हो गया और मुड कर बोला—'आज मुझे लगता है, मैंने अपने मानम से उलीच उलीच कर अपना ममत्व उस मलखू को अर्पित किया था । जाने कहा से वह सुन्दर पछी उड कर इस घर की डाल पर आकर बठ गया था । जब समय आया तो अपने वे सुनहरी पख पसार कर चला गया उमका प्राण-पखेह जाने किम दिशा की ओर उड गया ।'

रामदास के उस करुणा भरे कथन से घर में विवाद की छाया फैल गयी। एक ओर बैठी सुखिया झुककर पड़ी थी। उसका तो सब कुछ चला गया था। कुछ दिन पूर्व, वह सुखी थी, सधवा थी, परन्तु पति के जाते ही, मानो उसका सबस्व लुट चुका था। अतएव, उसकी बेदना जतीम थी। ममूद्र की गहराई के समान थी। तभी नरपत ने कंधे पर चादर रख ली और लाठी उठा ली। झुककर उसने मौसी के पैर छुए और बोला—
'जब खबर दोगी, मैं आ जाऊंगा। सुखिया की ल जाऊंगा।'

यशोदा मौसी चीख पड़ी—'अरे, तू भी मेरी भाषा में बोलता है। मेरा भाष्य तो भगवान ने फोट दिया, अब मेरा तमाशा क्या बनाता है।' नरपत बोला नहीं वह ओसारे में बैठी सुखिया के पास पहुँच गया। उससे बोला मैं जाता हूँ। देर करूँगा, तो धूप हो जाएगा। तू पत्र लिखवा देना। तेरा देवर तो पढ़ता है, पत्र लिख लेगा।' वह चल दिया। बाहर बैठे रामदास के पास जाकर बोला—'अच्छा, मौसा! मेरी राम-राम ला। कोई काम हो तो लिख भेजना। मुझे अपना दास ममझना।'

रामदास बोला—'आत रहो। मौसा के कहने का बुरा न मानना, वह या है ना, उसकी छाती पर चोट पड़ी है। जबान लडका गया है। बड़े जतन से पाला था, मलखू को। जादू-टोन भी कराती थी, पण्डित पण्डिय को भी दान-दक्षिणा देती थी। मलखू बचपन में बड़ा बीमार रहा था, उमे रात रात भर लिए बठी रहती थी।'

नरपत बोला—'मा का त्याग बहुत बड़ा होता है।'

रामदास ने सास भरी—'हा, भैया! इस जिंदगी का बारवाँ एस ही चलता है। औरत मद सभी त्याग करत है, अपनी मन्तान के लिए।' यह बोली—'फिर भी हाथ छाली के खाली! अजीब सिलसिला है, इस जीवन का। भगवान की रचना को कोई समझ नहीं पाता।'

नरपत बोला—'मौसा, यह तो मर्राय है। एक आता है, एक जाता है। यह डेरा उखड़ता रहता है। अच्छा राम! राम!'

रामदास ने कहा—'राम राम! आत रहया। अपनी बर्हिन का चिन्ता न करना। यह घर उसी का है। जगल के भेत भी उमके ह। मौसा की बात का बुरा न मानना।'

नरपत ने चिंचित खड़े होकर बात सुनी और तेजी से आग बढ़ गया। गाव दूर नहीं था, लेकिन सूरज अपनी तेज गर्मी और धूप के साथ ऊपर बढ़ता आ रहा था। वह गाव से निकल कर अपने गाव की पगडण्डी पर चढ़ गया। उसी समय यशोदा घर के अंदर से उठ आई। रामदास की चारपाई के पास जमीन में बैठ कर बोली—'तुम कहते तो हो, मैं पागल हूँ, मूख हूँ। लेकिन मैंने गलत नहीं कहा, दो-चार महीने बहू अपना माँ के पास रह आती। उसके स्वर में कहणा और व्यथा फूट पड़ी— मेरा लडका क्या गया, अब हमारी साँसत में जान आ गयी। जवान बहू है, अल्हड है। इस यह भी सऊर नहीं किस स बोले, किसस नहीं। घूघट काढने की ता इमन कसम खा ली है। जाने मा ने क्या सिखाया। करम फूट गए मेरे तो, जा ऐसी बहू इस घर में आ गयी

रामदास हुक्का पी रहा था। वह प्रात का समय था। किसान अपन खेता में चले गए थे। सब ओर सन्नाटा था। रामदास भी खेत पर जान की बात मन में लिए था। परन्तु धूप बढ़ रही थी। उसका साहस घट रहा था। लेकिन जब यशोदा ने बहू की बात उठायी, तो वह विपाक भाव से मुस्कराया—'सुन, यशोदा! तू अपनी बात भूल गयी। मेरी माँ दिन में कई बार मुझे टकरोरती थी घूघट काढने के लिए। और अब तो युग ही बदल गया। शहर में तो कोई घूघट करता नहीं, गाव-देहात में अभी परदा चलता है। लेकिन इससे लाभ क्या है। पाप करने वाला मात परदा में भी नहीं रुकता।

पति की बात सुनकर यशोदा चिढ़ उठी—'बस, बस तुम अपनी यह वेदान्ती बात रहन दो। थोड़ी बहुत लाज शरम रह गयी है, गाव-बस्ती में तो उम भी तुम सरीख सुघायानी मिटाकर छोड़ेंगे तभी तो गाव नुगाड़े पैदा हो चले हैं। अब तो पनघट पर भी जाने का धरम नहीं, किमी बड़-बड़ा बा। सुना नहीं, य बदजात छोकर पनघट के चारा तरफ चक्कर काटत है। कोई बहने वाला भी नहीं। कोई बोले भी, तो उमग मदन का तैयार रहन है।'

रामदास बोला—'यशोदा भले आदमी अब रास्ता काट कर चलन है। कुछ बहा ता अपनी पगडी उतरवा ना।' उसने हुक्का हटा दिया

जीर कहा— 'तुम ता लडकी की बात कहती हा, सुना नही, जसपत की लडकी घर स गयी, ता लौट कर नही आई । तभी से घग्वाली चारपाड पर पडी है ।'

यशोदा वाली, 'वह लडकी तो खुद भागी थी । उस पर जबानी क्या आई, दीवानी बन चली थी । क्या पता है, वह जीवित भी है, या नही । शर्म आइ हा, तो किमी मुए-पायर मे डूब मरी होगी ।

रामदास बोला—'बदमाश आदमी अपना मतलब निकलने पर औरत का मार भी दत ह ।'

उसी समय एक व्यक्ति उधर स निकला—चाचा, राम-राम ?

रामदास न कहा—'राम-राम, भैया ! वही, रात तुम्हारी तरफ कमा गोर उठा था ?'

'वह रामपत की बहू है न, तो उसका घर पर दा बदमाश चढ आय । शराब पीय थ । रामपत की लडकी का बुला रह थे ।'

'राम ! राम ! यशादा ने कहा—'उस लडकी का ता विवाह हान चाला है । सुना है, लडका रोक दिया ह ।

'हा गार्ची ! लेकिन लडकी खुद अपना चाल चलन ठीक नही रखती । जबान लडकी ह, जब देखो पनघट पर या अपन खेत पर दिखायी देती है । शतान लडके भार की तरह उसके तारा ओर मढरात है । माँ भी लडकी भी नही रोकती । उसकी सुनती भी नही । वह जागे बढ गया ।

तभी यशादा ने पति की आर देया । उमका क्या अभिप्राय था, राम दाम ममज्ञ गया । परतु वह कुछ कह नही पाया । किंतु यशोदा बोली— यह नगी तलवार अब हमारी गदन पर भी चलेगी । मेरा लडका तो गया ही, यह जवान बहू सिर दद बनगी । हमारे मिर फुडवा देगी ।'

तत्क्षण ही रामदास बोला—'तू तो पगली है । सबको एक ही लाठी स हाँकती है । तुम्हारी बहू अब ना समझ नही । बहू चाहेगी, तो मैं उसका दूसरा विवाह कर दूगा । अब तो इम गाँव में अशिक्षित औरतो को पढाया जाने लगा है । दस्तकारी भी सिखायी जाती है । तुम्हारी बहू भी मिलान ना वाम सीख लेगी, ता क्या बुरा है । चार अधर भी पढ लेगी ।

इतना सुनना था कि यशोदा बिदन पडी—'खाक पडे तुम्हारी बुद्धि

पर ! कभी बहू का दूमरा विवाह कर दन का बात करत हा कभी पढाई सिलाई की । घर का काम कौन दभेगा । अब मुझ म इतनी ताबत नही । खेत की कटाई मित्र पर हैं । मैं घर दखूगी या खेत ! तुम्हारी बातें बहू को इस धरती पर नही टिकने देगी ।

रामदास मुस्कराया—'तू तो बहू का उसने भंया क माय भेजती थी । वह चली जाती, ता कैसे काम चलाती ! अब जमाना बदल गया है, यशोदा ! अपन स्वाय क लिये बहू को अघेर म मत रख । हमारी लडकी तो है नही, बहू की उमर भी अधिक नही इसकी जवानी को असमय ही मार दना शुभ नही ।' रामदास ने माम भरी—'रात मेरी चौधरी जगदेवा स बात हुई थी । तुम्ह तो पता ह उमका भए एक लडका जवानी म मर गया था । उसका विवाह साल भर पहल हुआ था । उमने अपनी छोटी-मी बहू की चूडिया नही तोडने दी । दूसरे गाँव मे लडका दया और बहू का विवाह कर दिया । जितना दान-दहज उम अपने लडने के विवाह पर मिला था, उतना ही, अपन पाम मे दिया । वह उहू अब दा बच्चो की माँ है । जाती जाती ह । चौधरी या घर अब उसका मँका बना है । बाल, चौधरी ने ठीक नही किया क्या । उस बहू की जिन्दगी मुघर गयी । यहा रहती, तो कोड की तरह उसम दिल दिमाग म सडा पदा हाती । समूचे घर को सडा दती । चौधरी की जिन्दगी बरबाद कर देनी । यही तो चौधरी ने मुन स कहा, भगवान न ता तुम्हारी बहू के माय माय किया नही, तुम उसकी जिन्दगी बरबाद न करना । कही दूसरी जगह बठा दना । पुरानी बातें अब नही रही, नय जमाने की आर देखना ।

मास रोक कर यशोदा न पति की बात सुन ली । वह चुप रही ।

रामदास बाला—यशावा, तू भी औरत है । जवानी के रम टग दख चुकी है । लडका हो या लडकी चढती धूप की तरह जवानी सभी को अधा बना दती ह । तब पाप-पुण्य लिप पुत का एकार हो जाता ह । वासना का धुआ जब दिमाग म चढता है ता जिन्दगी की असलियत को नही देखने देता । बडे-बडे ऋषि मुनी और तपस्वी इस काम वासना की ज्वाला म भस्त हो गये वे अपना अस्तित्व नही रख सकें ।'

तभी यशोदा तुनन पडी—'दम चुप भी रहा । यह सब पट भरत क

चांचले ह । दो ममय खॉन का न मिले, ता इश्क मिजाजी धूल मे मिल जाती ह । चाहे इस कान से सुनो चाह उस कान से, मैं बहू का दूसरा विवाह नहीं करने दूगी । मैं नहीं बहूगी । वह खुद जाना चाहे, तो जाये । मेरा तो लडका चला गया, अब बहू को भी भेज दो । वह रहेगी, ता मुझे उसी की मूरत मे अपना लडका दिखायी दगा । यशोदा कहरणाद्र हा उठी । आखें भर जाईं । वह आचल म मुह डाल कर पफक पडी ।

सुखिया उस समय दरवाजे की आड म पडी थी । त्रह सास-ससुर की बात सुन रही थी । जब उमने यशोदा का रोती पाया, ता स्वय भी प्रतिभूत हो उठी । वह दरवाजे म हटी और आगे बढ़ कर यशोदा के पास पहुंच गयी । उमन कहा, उठा, जम्मा ! घर म चला । मैंने सब कुछ मुन लिया । वही होगा, जा कुछ तुम चाहोगी । जब भगवान ने मुझे इस घर की ड्यौडी पर चढा दिया ह, तब जयत्र नहीं जाऊंगी । मैं दा अक्षर पढगी और भिलाई का काम सीखूगी ।'

'वाह ! शाबास, मेरी बहू ।' रामदास गगद हा उठा—'मुझे तुम स यही उम्मीद थी । दख लिया न, यह तरी सास अपने पापो मे तुमे बमा बैठी ह । यह गुस्सल तो है, लकिन ममतामयी भी है ।'

सुखिया ससुर मे घूघट करता थी, लेकिन बोलती भी थी । तभी बाली — पिताजी, अम्मा का मुझ पर अधिकार ह । मैं इनकी बहू भी ह और बेटी भी । इस घर को छाडना मेरा धम नहीं । भगवान न जहा एक बार बठा दी, ता बैठ गयी । इतनी उमर मे, मैं व्याहता भी हुई और विधवा भी । अब मेर भाग्य म पति का सुख नहीं, तो दूसरी जगह जान् क्या यह स्थिति नहीं आ सवती ! इसकी काई सीमा नहीं ।'

रामदास के मन म बात थी कि कह द, यत् धाडी भाबुकता है, वास्तविकता नहीं । आदश और ह और जिन्गी मे भी दखी-सुनी बात और । परन्तु वह अपनी बात रात गया । तभी बाना—'बहू, तरी बात तो सान की है । इस पर चल मके, ता अच्छा ह । भगवान तुझे बुद्धि द । तू रहेगी, ता हम ममथने हमारा मन्मू जीवित है । चार साल बाद तेरा दवर भी जवान हो जायगा । उसका विवाह भी होगा । माम के बाद तू ही बुजुर्ग बनेगी इस घर की ।'

यशोदा घर में चल दी। सुखिया भी साथ थी। आंगन में चारपाई पड़ी थी, यशोदा बैठ कर बोली—'देख, बच्चा'। मलछू का पिता भी ठीक मोचता है। मैं भी अपने स्वाय के लिये जिदगी नहीं बिगाड़ सकती। अभी तेरी उमर ही क्या है? नहीं बच्ची है। अभी तो बीम बरम की भी नहीं। तू बही जायेगा, तो मैं तरा रास्ता नहीं राकूगी।'।

किन्तु सुखिया बाली नहीं, वह चुपचाप आंगन की दहलीज पर बैठा रही। उसके एक पैर का अगूठा धरती पर चल रहा था। स्पष्ट था, मास-ससुर की बातों ने उसकी सोई हुई भावना का जगा दिया अतएव, उसके दिमाग में भूचाल उठ आया था। उमर ने तो याग का पाठ पढ़ा था, न त्याग का। यौवनमयी युवती के मानस की आकाशा उसके भी पास थी। वह उसे आदोलित करती थी। अभी तो पति का मर पड़े नहीं हुई लेकिन रातों रात वह मातो रोती रहती या जागती। स्पष्ट था उन दिनों सुखिया अपने भाग्य में शान्त नहीं थी। जब वह खेत पर जाती, भैरव के लिये चारा काट कर लाती, तो तब रास्त में जाते जाते नाग जिस तरह का आवाज बशी करत। उसमें, सुखिया के प्राणा में बरबस ही हिलोर उठ आती थी। मानो गात्र के वे युवक उसके पास काई अमूल्य वस्तु दयत थे। उसके उठे हुए यौवन को घूरत थे। और वह सुखिया थी, निरी बचारी। निरी निस्सहाय। भला उमका यौवन, उसके शरीर का वह उदात्त पक्ष कैसे घुमता। सुखिया उस किस प्रकार लोग की आंखों में ओझल कर पाती। अतएव वह विवश थी। स्वयं ही अपने आपसे हार मान बैठी थी। प्रकृति दत्त आशीष जब उसे प्राप्त था गुलाब की सुगंध के समान उसका यौवन सुगन्धित हो रहा था, तब न तो वह खुशबू का मार सकती थी, न अपने आपका। लोगों की आंखें उस फमाती थी। व उसे भयावह लगती थी। पनघट पर, या खेत पर जब कोई औरत उसकी जवानी या रूप का किसी दूमरी औरत में बयान करती, तो तब भी सुखिया अपने आन में मुकट जाती थी। उम लगना अवश्य ही उसके पास ऐसा कुछ है कि जिसे देख पाकर ये जीरतें और मद उमका उल्लेख करने हैं उमके नये जीर यौवन की प्रशंसा करत है

उसी समय यशादा बोली—'बहू, मच कहा है किसी न, जिसवे पैर न बट विवाई, वह क्या जान पीर पराई? ही, तेरे यह वैधव्य कैसे कटेगा, आजकल यही बात मुझे रात-दिन संघाती है। ऐसा लगता है कि कोई जहरीला कीड़ा मेर प्राणी को कुतर रहा है, मैं किसी में कहती नहीं, लेकिन बेचैन रहती हूँ। मेरा मलखू तो गया, परन्तु अब उसके नाम पर बैठी हुई तू, तेरी जवानी, तेरी रूप मेरे दिन को नाच-नाच नेता है मैं मोच नहीं पाती क्या करूँ, तेरे लिये 'मलखू के चाचा ने शक्ति तो कहा नहीं कि तेरा दूसरा विवाह कर दिया जाय'—तब न-रहेगा बर्मा न बजेगी बासुरी हा, गाँव के लुगाडे तब भला क्या पायेंगे, इस घर पर क्या देखेंगे। तुझे याद है ना, मामराज इमीलिए मारा गया कि लोग उसकी लडकी को उड्डा दना चाहत थे उन पर का धन तो गया ही, बाप भी गया। लडकी धनिया को गुण्डे कहा ले गये, आज तक पता न ही चला। सुना जाता है, धनिया ने ही उन गुण्डों को रास्ता बताया था। बाप को मरवा दिया था।'

सुखिता कहना चाहती थी, सब को एक लाठी से मत हाँको। पर तु वह तब भी चुप थी। मानो उस समय कही अन्यत्र थी।

यशादा बोली—'जमाना बहुत बदल गया है, बहू। आज भैंस के लिये चारा भी नहीं आया। अब तो धूप चढ भाई। चूल्हे में आग सुलगा दे। दाल रख दे। दोपहर बाद सेत पर चली जाना। अब आगे से मलखू का चाचा भैंस का चारा ले आया करेगा। कभी मैं भी चली जाया करूँगी। तरा जगल जाना बन्द कर दूगी। सास के मन का भाव सुखिया नहीं समझ पाई। वह राटी बनाने के लिए चूल्हे के पाम पहुच गयी।

2

रघुनाथपुर गाँव उस जिले में इस बात के लिये प्रसिद्ध था कि वहाँ के डाकू और चोर दूर-दूर तक पहुचते थे। अनेक बार पुलिस ने उस

गाव का घेरा डाला था। कई डाकूआ के घेरा की जमीन तक खोद डाली थी। कई व्यक्ति लम्बी सजा पाकर जेल में बैठे थे और कुछ फासी पर चढ़ा दिए गये थे। लेकिन पुलिस की सख्ती व वावजूद भी रघुनाथपुर गांव के लोग हत्या, लूट और राहजनी सरीस खतरनाक कारनामा का छोड़ने के लिए तन्पर नहीं थे। माना उम गांव के पानी में ही यह जसर था, अथवा वहां की मिट्टी में। जारावर एम ही मरवार और कुछ व्यक्ति म म एक था। वह नया जवान था। बड़ावर पटठा था। देखने में सुंदर। किंतु उम अल्प आयु में ही वह कई खून कर चुका था। ताबा रूप्य का मात उसने विविध स्थानों पर जाकर लूटा था। जारावर ने अपना एक दल बन रखा था। उसका संगठन जमेद था। पुलिस की चप्टाएँ विफ्त रहती न जारावर पकड़ा जाता, न उसका वाइ साथी। वह जयिवाहित था। पुलिस का और गांव के लोगों का अनुमान था कि जारावर खूखार जोर नशस भेड़िया तो था ही, दुर्दकित भी था। वह शराबी था नारी-लोलुप था। विस्मय की बात यह थी कि अपन गाव में उमन न तो किसी को सताया, न किसी के यहां डाला। अपितु हाता यह कि जोरावर गाव के किसी भी निबल अथवा बशकत परिवार की सहायता करना अपना मानवीय कर्तव्य मानता था। गांव की कई विधवाओं की उसने इमलिए मदद की, अधिक कठिनाई के कारण वे अपनी पुत्रिया के विवाह नहीं कर पाती थी। पुलिस का विश्वास था कि जोरावर गांव में आता जोर किसी न किसी परिवार में आत चित्ताकर भार के अघेरे में अपन ठिकाने पर लौट जाता था। वह उमी परिवार का एक सदस्य था, जिसका मुखिया चाधरी रामदास था। वह जोरावर का ताऊ था। इस पता था कि ताऊ पाप को पाप ही कहता है, पुण्य नहीं। इसलिए पुलिस का भरोसा था कि रामदास इस बात का नहीं छुपायगा कि जारावर घर पर आया या नहीं। बराबर में ही उमका घर था। दरवाजे दो थे लेकिन बीच की दीवार एक। मलखू मरा ता जारावर उस घर पर आत ही रा पड़ा था। वह रामदास के घर पकड़ कर बोला था, मैं तुम्हारा ही सेवक हूँ। वह मलखू का अपना बड़ा भाई मानता था। उम रात जोरावर ने सुधिया के भी पैर पकड़े थे और

भाभी कहकर उस सम्बोधित करता हुआ बाला—'मैं तुम्हारा सेवक हूँ। आधी रात हाजिर रहूँगा। और नीटा की एक बड़ी गड़ड़ी सुखिया के परोस रख कर तुरन्त ही उस घर में पलायन कर गया था। पुलिस का भरोसा था कि ऐसी अवसर पर जोरावर आयेगा, इसलिए जब वह अदर मकान में सुखिया के चरणों में झुका था ता तभी, पुलिस का थानेदार रामदास के पास आकर बैठा था। दो घंटे पूरे ही, वह अपने पुत्र मलखू को चिता पर रख कर लौटा था। उसका पुत्र किस तरह जला, प्रचण्ड आग में किम प्रकार भस्मीभूत हुआ। यह कथन और व्यापक दृश्य रामदास की आँखों में तब भी धूम रहा था। उसी समय जोरावर दीवार पार कर पलभर में नौ दो ग्यारह हो गया था। निराश और चकित बना दरोगा उस मकान से लौट गया। रामदास उस समय स्वयं करुणा से और मन से हाँहाकार से भरा था। वह दरोगा को कुछ बताने की स्थिति में नहीं था। वह लाचार था। विधवा के क्रूर पदाघात से स्वयं तिलमिला उठा था।

आश्चर्य की बात यह थी कि जब जोरावर गाव में आकर रामदास से मिला फिर तार्ड से, ताँ उसके बाद ही, एकान्त में बठी सुखिया के पास जाते ही, करुणा से बनकर वह उठा था—'भाभी' मैं तुम्हारा सदा सेवक रहूँगा। ये शरय दिया जाता है किसी को बताना नहीं। यह सहायता नहीं, अतिकार है, तुम्हारा।

जब जोरावर उस घर में पलभर में पलायन कर गया, ता तभी, यशोदा ने सुखिया के पास आकर पूछा—'क्या कहता था, यह जोरावर? अब तो इस घर इसका आना भी भयावह लगता है। मन कापता है।'

सुखिया की करुणापूर्ण आँखें आसुओं से लालित थीं, तब यशोदा पास पहुँची, ता वह कुछ कह नहीं पाई, वेदना से परियुक्त आँखें ऊपर उठा दीं। वे उसके गौर गालों पर निक्ल आई थीं।

यशोदा लौट पडी और कहती गयी—'अब इस जोरावर में मतक रहना है। काला नाम है उसका डसा बचेगा नहीं है, री बहूँ। जब मलखू था, तो वह जोरावर उसे अपना बड़ा भया मानता था। उसका सम्मान भी करता था। अब वह तो रहा नहीं। इसका रास्ता साफ है।

गया। अपना सगा सहादर ह, ता इममे बचकर रहा भी नहीं जा सकता। जानती तो है तू, तालाब मे रह कर मगर मे बँर नही किया जा सकता

यह बम्बल जोरावर आदमी को तिनके की तरह तोड कर फँस देता है जाने कितने घरों का नाश कर दिया, इस जल्लाद ने। यह ता आदमबोर ह। सुनती हू, श्मशान मे कुछ मुरदा खाने वाल जानवर रहते है लेकिन यहा तो यह जोरावर ही

उसी समय रामदास घर मे आया। कुछ देर पूब घर व आगन मे औरतें एवत्र थी। उनमे जारावर की मा भी थी। जब वे सब लौट गयीं तो घर मे आते ही रामदास बोला—'मुनो यशोदा जब भगवान एक काम बिगाडता है, ता तब और बिगट जाते है। यह जारावर रूप बदल कर श्मशान मे आया था। वहा भी पुलिस थी। लेकिन क्या मजाल कि काई उसे पहचान ले। बचपन मे उसके एक हाथ की उगली बटी थी न तो मैं उसी हाथ को देखकर पहचान बठा था। लेकिन चुप रहा। यहा घर आकर वह मेरे पैरो मे झुका था।

यशोदा बोली—'मेरे पास भी आया। पैर छू गया। कोठे पर बैठी बहू के पास भी गया था। उसने बहू से क्या कहा, यह तो मैंने नहीं सुन पायी। परन्तु यह सिलसिला अच्छा नही। माप मे खेलना विपत्ति स खाली नही।'

रामदास बोला—'बहुता क्या, सात्वना दे गया हागा। अब उसका यहाँ आना अच्छा नही। मलखू या तो दूसरी बात थी।

यशोदा ने सास भरी—'वह आए, तो उस राका भी नही जा सकता। लगा सहादर है, काई गँर नही। वह बाली—'कोई भला आदमी हो तो समझा दिया जाए। वह तो जगली है। खूखार है। किसी की गदन मरोड देना उसके लिए बठिन नही।

अजी उमके पाम रिवाल्वर रहता है। यह गोलिया मे भरा होता है। जब रात मे चलता है तो स्टेनगन उसके साय होती है। कई बार तो जोरावर की पुलिस से मुठभेड हुई है, सदा बचकर निक्स जाता है। हिम्मत की बात है आज भी पुलिस के सामने आया और चला गया।

यशोदा बोली—'वह तो राक्षस है। अपनी जान हथेली परलिये

फिरता है। पुलिस भी डरती है उससे रुपया भी खाती है। पोई कहता था कि जोरावर भी धान में रुपया पहुँचाता है। वह पिछला धानदार था न उमकी बेटी के विवाह में पैसा दिया था।'

रामदास बाहर की तरफ लौट चला—'अधबूटू को समझना है। यह जोकर जास्तीन का गाप है। इसका काटा नहीं बचेगा।'

उसी समय यशोदा ने सुखिया को सुनाया—सब भाग्य की बात है। इन जोरावर के पैदा होने पर गाव भर की दावत की थी। पण्डित ने मंत्र देखकर बताया था, बड़ा भाग्यवान रहगा तडका' वह बोली—'खाक पड़े उस पण्डित पर। मैं न भी क्या जमा—एक डाकू! खूनी!'

सुखिया बोली—यह किसी के हाथ की बात नहीं अम्मा।

अम्मा कहना चाहती थी कि जोरावर की मा भी कम नहीं। बाप ने भी जितना लिया, दिया नहीं। लेकिन वह चुप रही, कुटुम्ब की बात थी। दीवार के भी कान होते हैं। उससे कहा—'बहू आगन में झाड़ू दे दे और देख, मुकेश भी शहर से आता होगा। आज उनका आखरी परचा था, तभी तो वह भैया की अर्धों के साथ नहीं जा सका। रोटी चढ़ा दे पेट ता भरना है। मलखू के पिता ने तो आज सुबह से मुह में टुकड़ा नहीं डाला। मेरी भी आँतें सुकड़ रही हैं। बहू आगन की दहलीज पर बैठ गयी। बेटे की याद आयी तो भभूका-सा पेट में उठा। वह रो पड़ी। तभी बोली—'हाय! मुझे क्या पता था कि मेरे बेटे को ऐसा बुखार चढ़ेगा कि फिर उतरेगा नहीं। पानी की तरह पैसा बहा दिया। जिसने जो कुछ कहा, वही किया। मैं तो पण्डित-पण्डिया तक को नहीं छोड़ा। वह सब किया, जो पहले नहीं किया था। बाहर से आता था, तो पहले मुझे पुकारता था। उसके मुह से निकला 'मा' मेरे प्राणों में हलचल मचा देता था। मुझे भी 'बेटा' कहने लगता था कि सब कुछ पा गयी हू। घरती पर रहकर भी मैं आसमान में उड़ी जाती हू?'

सुखिया चूल्ह पर बैठी आग सुलगा रही थी। सास जो कुछ कह रही थी उससे वह भी दुखित थी। प्राणों में हलचल थी। मा का बेटा गया, तो वह भी पति विधवा बन गयी थी। पिछली रात में ही मलखू बुखार

की गर्मी में बड़बड़ाया था। उसने आँख खोलकर सुखिया को बुलाया था, अपने बाप के घर चली जाना। अरेली मत रहना। कोई दूसरा साथी ढूँढ लो, और तब सुखिया बीमार की चारपाई की पाटी पर अपना मिर पटक बठी थी। उसके मुँह से हाय ! निकली थी। वह कुछ कह नहीं पाई। समुद्र में उठे ज्वार-भाट की तरह उसके मनोलोक में भी भूचाल उठा था। वह उसे समुद्र की लहरों के समान कहीं-से-कहीं उछाल रहा था। वह बार-बार काँटती और अपना मिर दीवार पर दे मारती।

सुखिया ने चूल्ह पर दाल रख दी और आटा गूँथ दिया। उसी समय रामदास का छोटा पुत्र शहर से लौट आया। भया को डाँकर जैसे वह लुट चुका था। उदास उमन बना, घर के जीमार में बठा था। तभी यशोदा पाम आर्ट, अर, कुछ खा ले। मूँह झुठला ल। सुबह से क्या कुछ पाया हागा ? तरा भैया ना गया, अब क्या वह वापिस आएगा।

मुकेश ने छोटा पर मुँह रखा था। वह राँ रहा था। तभी रामदास ने पास आकर कहा—'यह रोना तो जित्नी भर का है। इस घर को दाग लग गया। अब तू उठ। दूध, भैंस भी सुबह से भूखी खड़ी है। उसके सामने चारा डाल दे वह थोड़ा बहुत दूध दती है भूखा पट होगा तो वह भी नहीं मिलागा।'

मुकेश अभी पन्द्रह बप का था। पास के कस्बे में उसकी परीक्षा का सेक्टर था। उस दिन सुबह से निराहार था। उसका भया रात में मरा था। घर में कोहराम मचा था। रामदास की प्रेरणा पर मुकेश परीक्षा देन गया था। पैर नहीं उठन ये कस्बे की ओर ! परंतु उसे जाना जरूरी था। परचा न दता तो वह समूचा बप बकार जाता। लेकिन घर पर विषादमयी छाया फली थी। मुकेश ने भाभी से कुछ कह पाया न मा से। घर में बड़ी एक छाटा था तो दोना में लानता था। कोई बस्तु पान के लिए जिद्द करता था। लेकिन उम दिन वह घर आया। और चुपचाप बठ गया। जब पिता ने भय को चारा डालन का बात कही, तो वह उम काय का सम्पादन करन लगा।

मा ने कहा—'भय का पानी पिला दे बेटा। प्यासी हागी। बिना बालना जानवर है, इसकी गुध तो स्वयं लेनी होगी।' यशोदा ने पास

बैठे पति की ओर दया—'उसने भी मुह नहीं झुकाया। चना-चनेन-साऊ?'

रामदास वाला—'मेरा मन नहीं करता। आज खेत में पानी देने का जोर आया था वह भी निबल गया।'

यशोदा वाली—'तुम्हें तो खेत के पानी की सूझती है। मेरी तो दुनिया लुट गयी। बटा गया, सब कुछ चला गया।'

रामदास वाला नहीं, वह स्वतः ही द्रवीभूत बना पीढा का घूट भर कर रह गया। ऊचे स्वर में यशोदा बोली—'बेटा मुवेश, देख तेरी भाभने चून्हा मुलगा लिया है। पिता की चिलम में तमाखू आग रख दे। यह ता दिन में दस बार हुक्का पिया जाता था, आज एक बार भी नहीं? कुछ टाया भी नहीं। जब भगवान हमारे खिलाफ है, तब भला किसे दोष दे। सब अपने मुकद्दर का खेल है।'

रामदास वाला—'यशोदा, वह है न पंडित चण्डीदाम, अर्थी के साथ गया था। जब लडन की चिता जल उठी थी, तो वह चण्डीदाम मेरे पास जाकर बस गया। वह बागह वष काशी में पड़ा था। बड़ा विद्वान है। भाग्य का हठा है। गाव में पड़ा है। कहीं किसी शहर में होता, तो विद्वान पंडित कहलाता। अच्छा पैसा कमाता।' उसने सास भरी ओर कहा—'चौधरी रामदास, कहने का तुम वाप हाँ और जा चिता में जल रहा है, वह तुम्हारा बेटा, लेकिन यह दुनिया के नात रिश्ते थोड़े हैं, बेकार हैं। सबके अलग-अलग रास्त हैं। य दुनिया के सम्बन्ध कच्चे धाग में बंधे हैं। वह मुझे सात्वना दे रहा था।'

यशोदा रुद हाँ उठी—'अजी, छाँटा भी उस पंडित की बात। उसका भी एक लडन मरा था। तब मैं गयी थी, उसके घर पर वह वेदान्ती पंडित रो रहा था और छाती पीट रहा था। कबनी और करनी में बड़ा अंतर होता है। यह माया मोह मनका मताता है, जिसका जितना सम्बन्ध है, उतना ही कालता है मालता है, छाती में दद पदा करता है।'

रामदास ने हुक्के में दम मारा और घना-घना धुआँ ऊपर की तरफ छाड़कर बोला—'तू ठीक कहती है यशोदा। यह मायावी ससार है।'

मेरा मलखु इधर कुछ समय से अजीब तरह का व्यवहार करने लगा था । पिछले दिनों जब खेत कट रहा था तो मेधा चमार उधर जा पहुँचा । वह गरीब तो है ही, अपाहिज भी है । मलखू न गेहूँ की बाला से बधी एन गठरी उसे उठा कर दे दी । वह चेता है न, ता उसन आकर बताया था । उसी ने कहा—‘मलखू चौधरी का अब स्वभाव बदल चला है, पहले किमा को एक दाना भी नहीं देता था । गुराँता था, मारता था ।’

यशोदा बोली—‘हा, अब उसकी ऐसी आदत बन चली थी । पहले ता मैं किसी का कुछ दे दती, तो डाटता था । कहता था, खेत का दाना बड़ी मशक्कत से आता है । खून-पसीना एक होता है । आसमान आग उगलता है और धरती गरम तबे की तरह तपती है । किसान का शरीर झुलस जाता है । बड़ी मेहनत का दान है, किसान का ।’

रामदास बोला—यह बात तो ठीक है । बड़ा थम की कमाई है, खेत की मिट्टी के साथ मिट्टी बनना पड़ता है, तब भा भगवान की इच्छा पर है । चार दान घर में जा जायें, तो बड़ी बात समझो !’

यशोदा ने सास भरी—‘हा, यह तो है ही । अभी तीन बप ही बी है, पकी फसल ओला न चौपट कर दी थी । राए म एक आने का अनाज भी किसानों के घर में नहीं आया । उसने कहा—मलखू के चाचा, तुम्हारा वह बेटा तो जैसे खुद ममझ गया था कि अब उसे जाना है । इस ससार की सराय से उसका डेरा उखड़ना है । इसीलिए तो वह अब गुस्सा भी बहुत कम करता था । कोई कुछ मागता, ता द देता था । पिछन दिना फसल का कई मन अनाज और धान उसन चुपचाप ही जान किस-किसका दे दिया था । वह तुमसे डरता था । मुझसे भी बाख चुराता था । घर के किमी आदमी को पता नहीं चलन देता था ।

रामदास ने सातोप की सास ली अच्छा करता था । अपना जम सुधारता था । इन्सान लेता तो है, दता नहीं । तुम्हारा बेटा दन लगा था, यही उसका पुण्य का काम था, इस बार मन्दिर के पुजारी को भी उसने दान मन अनाज दिया था । पुजारी ने स्वयं मुझसे कहा था । रामजी दास गरीब ता है ही पिता कुछ दिय, लडका का उसकी समुराल भज रहा था । तुम्हारे मलखू का पता चला तो गाव के दुवानदार से एक साडी ले,

घर रामजी दास की औरत को द आया । पिछले दिना उम दुकानदार का रपया दिया था ।'

यशोदा न पूछा—'तुम्ह कौमे पता चला ?'

'अजी, बात क्या छुपी रहती है । स्वय दुकानदार न मुझे बताया था । उसी न कहा था, अब तक मलखू चौधरी दिल का उदार हो चला है । भगवान भी उमे दे रहा है । फसल अच्छी उठ रही है ।'

यशोदा बोली—'इधर कई वप से भगवान ने कृपा की है ।

मलखू की मा, जैसी नीयत बसी वरकफ्त । भगवान दयालु है । मय देखता है ।

उसी समय छाटा पुन घर म से आया, चाचा, राटी खालो ।

यशोदा बोली—'अर, यही ला दे । पिछल दिना वर्षा क्या हुई इधन भी गीला हो गया । तरे चाचा घर म रोटी खायगे तो बहू घूषट करेगी, धुण मे आयेँ खराव हागी ।'

मुकेश लौट गया । यशोदा भी उठ चली । जाकर दखा कि भैम ने चारग खा लिया था । वह यशोदा की ओर देख रही थी । शायद कुछ माग रही थी ।

रामदास बोला—'दिन छिप चला है, भैस का दूध निकाल ले ।'

लडका मुकेश घाली मे दाल और रोटी लेकर आ गया । जब रामदास खान लगा, तो तभी पडौम की हिरिया बहा आयी । वह बूझा थी । 'रामदास से साला बडी थी । उसे देखकर वह बोला—'आजा, चाची । भेटी खा ले ।'

'बा, भया । भगवान ज्यादा द । उसन लम्बी सास ली और कहा—'इसी चबूतर पर मलखू बैठता था । दिखता था । सच्चा चौधरी लगता था । मैंने उसे कभी अनेला बैठा नहीं दया । कोई-न-कोई उसने पास बैठा दियाई दता था ।

यशोदा भी बहा आ गयी । बात सुनकर बोली—'चाची, बहू पछी तो उड गया । अब जान किम पड की डाल पर जाकर बैठे हा होगा । रात जब प्राण निकले, ता उसने पहले उसने एव बार मेरी आर देखा था । 'मा' कह कर चप रह गया था । जरूर उसके मन म तडप थी ।' पतना

कहत ही ही यशोदा के मन का कण्ठ भाव तिलमिला उठा। यह ने पक्षी।

रामदास बोला—'अब भगवान का नाम लो। प्रायशः करो वह सुन्दर पक्षी जहा जाए, मुग्ध से रह। उमे शांति भिने। हमारा मन्वन्ध तो समाप्त हुआ। हम न बाप रह, न बेटा। यह हम मायाजाल से निकल गया। जाने कहा गया।'

हिरिया ने कहा—'हा, भया। जब तब मांग है तब तब जहान है। हमारा मन्वन्ध है, अजीब गोरमन्ध है, हम जिन्दगी का।'

उम समय चरवाहा और चौपाय जगल से लौट रहे थे। कुछ किमान बाघा पर हवा रहे, बला को हावत हुए अपन अना धरा की आर बढ़ रहे थे। मायें रमा रही थी और उनके बच्चे दौड़न हुए अपनी माताआ के साथ आगे बढ़े जा रहे थे। उमी और दग्धत हुए रामदास वाला—'दवा, चाची। यह मनुष्या की दुनिया है। यह भी जन्मा पराया ममज्ञत है। बच्चे किम तरह दौड़न है अपनी माताआ की आर य माताए भी किस तरह हूलसती है, अपन बच्चा को दप-दप। बटा अजीब सभार है यह। उमन कहा मुझे आगे भी याद है, यह यथादा अपन मलजु के लिए प्राण तन निछावर करती थी। कभी उसे किसी प्रकार की शारीरिक बीमारी होती, तो रात भर लिए बैठती रहती। मैंन कई बार कहा, तू औनाद का क्या सहगी स्वय मर जायेगी तब न रहेंगा डोल, न बजेगी वासुरा।'

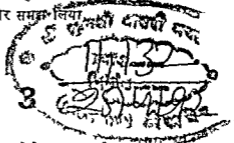
हिरिया बोली—'भया, ऐसा ही होता है। औरत पट फाडकर और सिर से कफन बांध कर औलाद जनती है, उसे जन्म देती है। तभी तो मा जन्मदात्री कहलाती है। मा बचन के लिए औरत अपना सबस्व अपण कर देती हैं।'

रामदास रोटी खा चुका था। लडका थाली जोर लोटा ले चला। तभी वह बोला—'बेटा चिलम भी भर देना। अब पडगा रात भर नहीं सोया। सिर भारी है। शरीर टूट रहा है।'

हिरिया ने माम भरी—'अब जिन्दगी भर मोत रहना।'

रामदास वाला नहीं। उनके मन से था नाद तो चनी गयी। तब भी गया। अब तो जिन्दगी का अपसाद, मन की पीडा और

न्यव्या का बोल सिर पर ढोत रहना पड़ेगा, बूढ़ापा कैसे खराब होता है, यह मैंने स्वयं देख लिया और समझ लिया।



यह स्पष्ट था कि रामदास कोई अजूबा नहीं था। उसी मन ममता का एक प्रगाढ़ श्रोत उफान रहा था। गत आधी स ऊपर जा चुकी थी। चांद निकल आया था। रामदास उठ बठा। लाठी उठा नी। वह चारपाई छोड़ कर जंगल की ओर चल दिया। जिधर उल्लेख सेत थे, उससे कुछ दूरी पर ही श्मशान भूमि थी कि जहाँ उसका मलखू अग्नि को समर्पित किया गया था। दूर से ही रामदास ने देखा कि एक चिता जल रही थी। उसमें रखा मुदा जल चुका था, बवल कुछ माटी लकड़ियाँ चटख रही थी। हवा का स्पश पारर उन चिता क अगर परम्पर टकरा रह थे और दूर-दूर तक प्रज्वलित होकर प्रकाश कर रह थ। बलात् रामदास के पैर उसी ओर बढ गए। समीप जाकर उसने देखा और उस लगा कि बड़ा भयावह दृश्य था वह। एक पड पर उल्लू बठा था और वह अपनी भारी आवाज म बोल रहा था। कही सियार चीत्कार कर रहा था। रामदास के पुत्र मलखू की चिता ठण्डी पड चुकी थी। बवल एक दो लकड़ियाँ अभी जलनी भय थी। रामदास का पता था कि वह लकड़ियाँ जिस पड की थी, किसी समय स्वयं मलखू उहे काट कर लाया था। उसका विचार था कि उस पड क गुद्दे बड़े काम क थे। वह बड़ई स चिरवा कर उनकी अलमारी बजावदगा। यशादा का मत था कि उन लकड़ी का एक बड़ा मड्डा बन मवेगा। घर की कीमती वस्तुएँ उसम रखी जा सकेगी। किंतु जब स्वयं मलखू का निधन हुआ तो वे लकड़ी के गट्टे गान्गी में डालकर श्मशान पहुँचा लिय गये। व मलखू की छाती पर रखे गये

रामदास अपने पुत्र मलखान—मलखू की चिता के समीप छडा था।

साय साय करती हवा चल रही थी। वही दूर घुंते भाव रह व। जब रामदास उस स्थान पर घडा था, तो एक गीदड उस ओर जाया और रामदास को खडा दख, किंचित रुका और फिर आगे बढ़कर अदृश्य हो गया। उसको पता था। वचन से सुनता आया था कि उस रात के मनाट म भूत प्रेत जलती चिता के आग-पाम घूमत हैं। वे नाचने हैं, किलकिलाते ह। चूकि रामदास जीवन म प्रथम बार के समय उस स्थल पर पहुचा था इसलिए, वह स्वत ही उन भूतो की कल्पना करके सिहर उठा था। संयोग की बात यह थी कि उसी समय उस जलती चिता के समीप उसे कोई बैठा दिखाई दिया। तब परवस ही, वह भय संकाप उठा। तब, वह उस स्थल से भाग जाता। परंतु उमर पर भारी हा गया थ। सुन पड गये थ। मुह सूख गया था। आखा के आग पधेरा छा गया था।

तभी आवाज आई—'कौन, चौधरी रामदास—'

तब वह और अधिक सिहर उठा। कापती आवाज म वाला—'हाँ, मैं रामदास।'

'जन्ठा पुत्र की जली चिता दखन आये हो। अब क्या रखा ह। राख का डेर है।'

रामदास सम्भला कौन भगवाना—

हाँ, चौधरी। वह व्यक्ति लाठी क सहार रामदास क पास उठ आया। समीप आकर वाला—'यह चिता मरी पत्नी की थी। हम दाग का साठ साल का साथ। बड़ी फरमावरदार थी। मदी हित्नी थी। वह थी, तो मैं सब जोर से सिक्कुड कर उसी की नीमा मे बधा रहता था।

रामदास बडे ममत्व के साथ मुस्कराया—'मैंने भी तरी पत्नी का दखा ममशा था। कई बार खेत पर काम करने आई थी। मचमुच, पत्नी भक्त था। उसने साम भरी तो वह चली गई। कोई तबलीफ थी क्या अब तू अकेला और एकाकी बन गया।

भगवाना बोला—'चौधरी, मैं तो जाति का चमार हू। जिन्दगी की बहुत कमजोर धरती पर खडा हू। जब मैं लडाई छिटने पर फौज म चला गया था तो घरवाली न कई चिट्टियाँ डलवाई, तुम लौट आजा।

हम एक रोटी के दो हिस्स करके पट भ ले। नत्र में नी फौज म नही टिक पाया। कई बहाने बनाय और त्याग पत्र दवर चला आया।

रामदास बोला—'फौज मे रहता ता काम का जादमी बन जाता। तब ता तरा शरीर भी लम्बा चौडा था। कछावर जवान था। अब पेंशन पाता। आज अपनी सरकार है ना, फौजिया का बडा सम्मान करती ह। तू भी उनकी पक्ति म खडा होता।

भगवाना क्षणिक चुप रह गया। तभी बोला— चौधरी मैं हें ता गवार परतु इनना समझ पाया हू, जिदगी म यदि दा प्राणी मिलकर बैठ जाये, दोना के प्राण मिल जाये, ता उत्स बडा गुप्त रस धरती पर डूमरा नही। मेरी घरवाली एमी ही थी। मेर पथ पर अपनी आखें बिछाय रहती थी। अब मुझ स किसी किसान के बडा काम ता हाता नही, रापी और जूनी गाठन का सामान लकर पाम के रम्ब मे चला जाता हू। खया बारह आन ले आता हू।'

रामदास बोला— तरी घरवाली का नाम भागवती था न, 'भगो कहलाती थी वह।

भगवाना बोला—'हा, चौधरी। उसका नाम भागवती था। मेरी तरह उनमें भी बडा सघष किया। विपत्तिया जब एक बार हम दानो क पर पकड बैठी तो उसने छाडा नही। भागवती के चार लडके और दो लडकियां पदा हुई थी। लडकिया ता ह, लडका एक नही। दा तो जबान बनकर मरे थे। बमर टूट गई, बेचारे की। फिर भी उसे मेरा ही ध्यान रहा।'

रामदास बोला—'ता इस समय बने आ गया। मैं तो खेता की तरफ गया था। इधर भी बढ आया।'

भगवाना बोला—'चौधरी, मन नहीं माना। घर सूना था। चार पडोसी आ गये थे, ता उसकी लाश को अर्धी पर डालकर ले आय। लेकिन मुझे तो वह घर काटता ह। डर लगता है। लोग कहन ह कि शरीर से निकली आत्मा अमर होती है। वह मरती नही। वही दूर नही जाती। यहा आकर मैं भी अपनी भागवन्ती की आत्मा को दख रहा था। उसरी चिता की जलती हुई लकडियां चटख रही थी, ता मुझे लग,

किस पर छोड़ गई। जीत जी ता यह एसा नहीं करती थी। अभी पिछले दिना की बात है बीमार थी, आशक्त थी, लेकिन जब उसने सुना कि मैं बेसन का चीला खाना चाहता हू तो तुरन्त उठ बठी। चूल्ह म आग थी। उस पर तवा रखा और चीला बना डाला। बस, वही उमका अन्तिम समपण था। फिर चूल्ह पर नहीं बैठ पाई।

रामदास बोला—'लेकिन यहा इस भरी रात म क्या आ गया। उर नहीं लगा।'।

'न चौधरी मैं अपनी भागवती को साथ देपता हू वह शरीर म भस्वरूप हुई है मन और जात्मा से नहीं। वह जरूर मेरे जाग-पाम होगी।

'अर पगले! मेरी तरह तू भी जभागा है। म भी ता अपन मलख को देपन यहाँ आ गया। यहाँ मला क्या रजा है राग का डेर ह? उसने मास नरी—'जरे भगवाना! यही ता भगवान की लीला ह। उमका खेल है। यह जिन्दगी तो मेला है। तो विछड गया। वह फिर नहीं मिलता। किसी दूसरे जन्म म साथ होता हो, ता इस कौन जानता है। बडे बडे पंडित भी सिर खपा कर रड गये। उस भगवान का रहस्य नहीं पा सके। आ, चल गाव की तरफ लौट जा। अपन पर जाकर पड।'।

भगवाना विलख उठा—'अब मेरा कोई घर नहीं, चौधरी! घर ता घरवाली के साथ गया। वह क्या मरी मुग को मार गई। अब मैं उमी को पाजता हू। उसे पाना चाहता हू। जरूर मेरा उमका कइ जन्म का साथ रहा। मुझे भरोसा है वह अवेली देर तक नहीं रहगी। मुझे बुला लेगा। मेरा हाथ पकड लेगी।

चौधरी रामदास उम बद्ध भगवाना को देत्र स्वय भी करण हा उठा। उमके गल मैं कुछ आ गया। जब वह बार-बार धूक क साथ उसे मटकन लगा ता तभी दूर गडे मियार ने गोर मचाया। श्मशान हा वह भयावह दृश्य और अधिक बठोर हा उठा। तभी रामदास न गांव की ओर देया—'आ चल मेरे साथ। आज कुछ खाया भी था या नहीं।

भगवाना बोला—'बल पडोम की बहू दो राटो दे गड थी व भी

रखी ह। पाइ नही गइ। गल म नही उतरी। लगता ह, भागवती गइ ता अब खाना भी गया। एमे ही एफ दिन मर जाऊगा। अपनी कोठरी मे मरा पडा हूगा। किसी पडौसी को सुध आएगी ता में भी इस धरती क टुकडे पर आ पडूगा। घर चल दिया। गाव के छोर पर आकर वह लकड़ी का सहारा लिए अपने घर की ओर चल दिया। लेकिन रामदास उम समय घर नही गया। उसकी इच्छा मंदिर पर बठन की हुई। आश्चय जा व्यक्ति कभा मंदिर की प्रतिमा का हाथ जोडन नही आया। उस मंदिर के चबूतरे पर भी आकर नही बैठा, वह तब उस रान के मनाट म मंदिर के चबूतरे पर जा बठा। मंदिर के द्वार सीकचे के थ। मलाखो के पार दीपक जल रहा था। प्रतिमा का स्वरूप भी दिखाइ दे रहा था। देवता का वह मीदय माना उस कक्ष वन रामदास व प्राणा म हलचल मचा गठा। उस लगा इस देव प्रतिमा म कुछ ता है। यह मदा मुहागिन ह। मुस्वराती है। भक्तो क आसू देकर इसकी मुस वान यथापूर्व बनी रहती है रामदान को याद आया, एक बार उसकी पत्नी यशोदा न उसम कहा था यहा घर पर बठे हुक्का बजात हो कभी मंदिर पर भी जाकर बठा करा। काई-न कोई क्या वाचक जाता है तुम भी राम-नाम की कथा सुन आया करा। लेकिन रामदास ने उस समय मुह बनाकर कहा था, यह सब ढाग है, मिथ्या है। यह भी पट भरन का एक तमाशा है। कभी भगवान शकर या राम का स्वरूप दर्शाया जाता है कभी भगवती जगदम्बा का में कहता हू यह सब कोरा रहस्य है। यह किसी की समझ म नही आता।'

तत्र उपेक्षा स यशोदा वाली—'ता तुम्ह क्या अच्छा लगता है। वम जब देवा मेर दूगे से लग बठे रहत हा। बहुत हुआ ता अपने बच्चा को प्यार करन लगत हा। मैं कहती हू दुनिया इतनी छाटा नही है। बहुत बड़ी है। भगवान की लीना भा अपरम्पार है। बीबी बच्चे ता एक दिन नही रहत, राकिन भगवान का अमर गान सदा गूजना रहगा।

लेकिन उस रान क समय जब कि स्वयं रामदास व प्राणा का प्रदन उम व्यक्ति कर रहा था मन प्रदश रमुद्र ने भूचाल की तरह कालाहल म प्राप्त था ता तब वह स्वत ही बोला— हाय। वह बूढ़ा घमार

भगवाना अपने मन की कितनी गहरी व्यथा को लिय इस रात के सनाट में, पत्नी की जलती हुई चिता के सामने बठा था और मैं, हा, र, रामदाम' तू भी तो अब भगवाना की तरह अपनी मानसिक कष्टना का लिय पुत्र की चिता के समीप जा उडा हुआ था भला वहा अब क्या रखा था। हाउ-मान का शरीर भी नहीं था। वह भी जाग की लपटों में स्वाहा हो गया था। अब तो वहा राख का ढेर था। कल लाग जायेंगे और चिता की उस गण में स मलखू की चद हड्डिया चुग कर न जायेंगे तब उह गगा क प्रवाह में छोड, जायेंगे। बाह, रइसान। बाह रे ससार।

तभी रामदाम ने मन्दिर के अंदर जलत हुए दीपक की आर देखा। दयता की मुक्ति तब भी मुस्करा रही थी मानो रामदास पर हस रही थी। जीवत में प्रथम बार उमे गगा, वह भी कोरा अहमय है। घमण्डी है। स्वार्थी और स्वेच्छाचारी है। उमने निमी को नहीं बटशा। स्वयं अपने आप को ठगा, घरवाला का और गाव के समाज को ठगता रहा।

रामदास स्वत ही सहम गया। मानो वह अपने-आपसे डर गया। वह स्वय ही भूत था। दुर्दांत भेडिया था। रामदास की स्वास रुक चली थी और आखा के समक्ष अधेरा छा गया था। उसी समय उसकी आधे के समक्ष थापा, गाव का वह रणधीर, जिसे धोखे से छल से रामदास ने इसलिये मरवाया कि उसके हिस्से की जमीन वह स्वय हडपना चाहता था। रणधीर की औरत अभी जीवित थी। वह मजदूरी करके अपने बच्चों का पेट पालती थी। चूकि गाव में उसी प्रकार का दम्भ और छल प्रपच चल रहा था। चोर चार मौसरे भाई की परम्परा ने जोर बाध रखा था, इसलिये रामदास न निर्वाध रूप से अपनी जमीन बढा ली थी। रणधीर के पिता को कुछ रुपया उधार दिया था और उसका सेत हरन कर लिया था इसलिये जब वह पिता मरा, ता उस से एक सप्ताह पूव ही, रामदाम उनके घर गया और उस बीमार पडे अशक्त व्यक्ति को धीरज देता हुआ बोला था, मैं तुम्हारे साथ हू, इस कागज की मियाद समाप्त हो रही है। अगूठा लगा दा। मेरा रुपया तो जब मिलेगा, मिल जायेंगा, तब तक मैं तुम्हारा सेत जोतता रहूंगा

रणधीर व पिता न जगूठा लगा दिया। तभी उसने कहा था रामदास चौधरी मैं नहीं बचूंगा। डाक्टर जवाब दे गया। तुम मेरा बच्चा का ध्यान रखना। खेत वापिस दे सको, तो दे दना। रणधीर अपना उत्तर देगा। अभी छोटा है पर दादा यहाँ रात खेत गतने लगगा।

तब दिन रणधीर का पिता तो चला गया। उसका घर अभावग्रस्त था ही अनाथ भी हो गया। तब रणधीर की माँ अपना खेत वापिस देने रामदास के पास पत्नी तो जगन विद्वान भाव ने मुह बनाकर कहा था एक हजार रुपये दिये थे चाँदा के भिका, सूद लगाकर वह दे जाओ और मत ले लो। किन्तु उस बेचारी के पास अपना कहा था। जिन तरह टाली हाथ जाय उम्मी तरह नोट गयी। सयाग की रात, उसी समय एक व्यक्ति रामदास के पास आया और रहस्यभरी आवाज से चौधरी का दरवाजा बाला— मुना तो हागा तुझे, साप के बच्चे साप हान है केंचुए नहीं।

चौधरी रामदास ने कहा— क्या मतलब। मैं समझा नहीं।

एक साल बाद समझ जाआग, चौधरी! रामलखा का बेटा रणधीर अब जवान हो चला है। एक दिन मन्दिर पर बैठा कह रहा था मेरा पिता कभी मुकरा नहीं। मार नहीं खायी। मैं चौधरी रामदास से खेत ले लूंगा। छोडगा नहीं यह गाता है। धी मीधी ऊंगली से नहीं निकलता टेढी करके निकाला जाता है।

सुनकर रामदास ने हू किया और चुप रह गया। उम्मी सप्ताह रामलखा का यहाँ किस तरह गायब हुआ, कहा गया इसका पता नहीं चला। उसकी माँ पुनर्जन्म मंगी परन्तु देहा भी धक्का मिल। पुलिस ने अपना निष्पत्ती गारंत्वना नहीं दी। तब गाव में यह बात पत्नी थी कि चौधरी रामदास ने पुलिस का अपना लिया था। तबका उम्मी ने मरवाया और लाने की गफिरता भी हागी।

उस समय मार की पीरी पट चला था। रामदास के एक अपराधों के ममान अपने स्थान से उठा और मन्दिर के मीकचा पर अपना माथा पटक यटा। तभी चौधरी उठा— 'म हत्यारा है। धातव है। रामलखा का पुत्र रणधीर मैंने मारा, तो भगवान ने मेरा पुत्र छीन कर दण्ड दिया

है गाव नहीं जानता तो क्या हुआ भगवान जानता है, मरा मन जानता है ।

मन्दिर के सीढ़ियों पर रामदास ने अपना माथा जोर से पटक दिया था । उनके मन का आवेग इतना तीव्र था कि यह उसका आघात सहन नहीं कर पाया । खून निकल आया । वह रामदास के कुरते पर टपक गया । वह पीछे नहीं हटा, उमी घर के पास घड़ाम ने पछाड़ खा गया

भार हो गया था । मन्दिर का पुजारी आ चुका था । किन्तु देवता के दर्शन करने वाले नर नारी यह देखकर चकित थे कि चौधरी रामदास मरा नहीं था । मुच्छित बना उस मन्दिर के द्वार पर पड़ा था । यशादा भी वहाँ आ गया । वह बिलक पड़ी । गान की सहानुभूति मिमट कर उन दोनों का समर्पित थी । बाइ कह रहा था, हाय ! चौधरी लडक की मौत का सदमा नहीं कर पाया । लेकिन उस भीड़ में कोई एमा भी था, जो कह रहा था, पाप का फल पाप ही होता 'पुण्य नहीं' रणधीर की माँ अब रात रात अँधी हों चुकी है, अपन बेटे के लिये

4

हवा का एक पाका आया जोर वह चौधरी रामदास के मन का मन्तुलन छोड़ गया । रामदास मन्दिर से उठ आया, परन्तु घर आकर उसने धारपाद पकड़ ली । गाँव का वैद्य ने यशादा को दिलासा दिया, पुत्र की मौत का गम बढ गया, अय्यर बाद अय्यर गग नहीं । तैरित चौधरी बार बार चीकता था, विम्बारित बनकर अपने चांग धार उता था । कुछ गान के लिये दिया जाता, ता टाकी ओर म भी मुह फेर नेता था । जो ध्यमित दिन में अनक बार हुक्का पीता, अन्न वह भी उस अच्छा नहीं संगता था ।

उस घर पर यशोदा व सिर पर एक नयी पर्शानी मवार थी माना भूत की तरह उस स कार्द चिपट गया था। वह डरा रहा था। ससुर की उस नयी अवस्था का दख, मुदिमा ने अपन पति के बिछाह का दद भुला दिया था। किसी औरत न उम रणधीर व मरन और उसकी मा के रोदन भर चौकार का हान दना दिया था। उसके मन म भी उस बात से प्रतिरोध पैदा हुआ था। मुखिया को इस बात का पता था कि उसका पति मलखू अपने पिता की उस बुर्दावत अवस्था स, मन के क्रर भाव मे महमत नहीं था। उसने कई वार कहा था, वह जमीन लौटा दा जाय। उममे बहुत अपमानित किया ह। मूल और सूद दोना का भुगतान हो चुका है।

परतु रामदास पुत्र की बात से महमत नहीं था। उमका मत था, इस तरह की उदारता और अव्यवहारिकता इंसान को ऊपर नहीं उठने देती। उसे भूखा मारती है और उमने पुत्र व समक्ष ताव के कई उदाहरण पण कर दिये। लाला रामदत्त निधन से किस प्रकार धनिक बना, यह पुत्र को बताया। चौधरी जसपत केवल दस बीघे खेत का स्वामी था, अब पाँच सौ बीघे जमीन का गाव मे जमीदार है।

लकिन पुत्र जवान था। उसका उदाम पल उज्ज्वल था। उस पता था कि पिता मे जिन कमिया के उदाहरण दिये, हे अभाव की अवस्था मे सुखी थे, सतुष्ट थे, परतु धनवान बने, तो जीवन की अशांति, यथा वह अपने साथ समेट बठे थे, लाला के पास धन था, परतु वह लकवा का रागी बन कर दो बष से बिस्तर पर पडा था। उसका पुत्र बाप की मौत चाहता था। पिता द्वारा उपाजित किया धन वह न केवन अपना समक्ष बैठा, अपितु पिता के रोग पर पैना पच हो, यह उसे पसंद नहीं था। फलस्वरूप पिता उस पुत्र की दष्टि मे उपेक्षा का पात्र था रहा जसपत चौधरी, उसने जीवा की विदशता त्रया और कायरता अकथनीय थी। जब एक वार उमक घर पर डाका पडा, तो डाकू उसकी पत्नी को मार गये। उमका धन और जेवर लूट ले गये। यद्यपि जसपत चौधरी जान से नहीं मारा गया परतु आसुओ ने उसका आवे पाड दी थी, हाथ काट दिय थे वह मतीम था मर जाता तो चन पा सकता था

तब रामदाम झल्ला पड़ा था—'चुप रहो ! चुप रहो ! मेरे सामने पड़िताई का राग मत अलापो । अभी तुम जिंदगी भर उदर नहीं जानते । समझते नहीं, यह मजिल किस तरह पूरी की जायेगी । उसने कहा—'बेटा, जब मेरे पिता मरे तो उनके पास सिर्फ बीस बीघे के खेत थे । अब भगवान की मीज है । पचास बीघे जमीन हो गई है, तुम दोनों भाइयों के पास । मैं मर जाऊंगा, तो तुम और मुकेश आधी आधी बांट लेना ।'

उसी समय मलखू कातर हो उठा—'आप बहुत आग की बात सोचत है । पता नहीं, तब तक किस राजा का राज हो हा अभी अब तो लड़ाई होकर चुकी है । हिटलर मारा गया । दुनिया के बहुत से राज्य तबाह हो गये । भारत में भी जिस-जिमकी तूती बोलती थी, उनमें से एक भी दिखाई नहीं देता । वापू ! सूरज नहीं छिपता था अंग्रेजी राज्य में । लेकिन अब देखो, क्या हाल है ? कछुबे की तरह ब्रिटिश राज्य सुकड़ गया है । गदग भी दिखाई नहीं देती । न पर और पजे—आधी दुनिया को ब्रिटिश राज ने कुतर लिया था ।'

अरे, ओ वेदाती के बच्चे ! तू समझता क्यों नहीं, यह ससार परिवर्तनशील है । यह राजा ब्रिटिश राज की बात लेता है, मैं कहता हूँ, बड़े-बड़े योद्धा और शूरवीर तबाह हो गये । यह तो परिवर्तनशील ससार है । सब जानते हैं, यह ससार मिथ्या है । झूठी माया है फिर भी लोग हाथ पर-हाथ रखकर नहीं बैठ सकते । आदमी चलता है । सफर तय करता है । सुना नहीं, महान सिक्न्दर का नाम ! वह यूनान से चलकर भारत पर चढ़ाई करने आया था । उसने बहुत से राजाओं को परास्त किया । उसका अपना इतिहास बना था । उसका शीय, उसका साहस इस और से उस ओर तक प्रचारित हो गया था । उसने इस देश की धरती को कपा दिया था । तभी तो सैकड़ों वष बीत गये पर उसका नाम लिया जाता है । सुना नहीं, वीर योद्धा वसुधरा—

मलखू कुछ बोला नहीं । पिता से विवाद करना बेकार था, पिता ने दूसरा से जो कुछ सुना, वह जवान पर था, कहा जाता था । उसे पता था कि पिता अधिक पढ़ा लिखा नहीं, लेकिन दूसरों से सुनी वाणी को

दोहराता सरल काम था। यही उमका मिथ्याभिमान था।

कदाचित्त सुप्रिया व अतिरिक्त अगर किमी को पता नहीं था कि मरन के दो दिन पूर्व स्वयं मलखू न सुप्रिया स कहा था इस घर का पाप जाने किस किसका मारेगा, न डूबेगा पाप जहर फनगा और पूनगा।

तब सुप्रिया बोली नहीं थी। आपने पापा के किमी वान म पति की उम अमरवाणी को छुपा बैठी थी। यह स्पष्ट था, पिता की तरह बेटा भी न तो माक्षर था, ना ही किसी मम्म समाज में उठता-बठता था। फिर भी, उसका हृदय पिता से अधिक् निमल था। उसने किमी को ठगा नहीं लूटा नहीं। उमका उदात्त वक्ष ऊचा और तवल था।

फलस्वरूप, कई दिन के बाद रामदास स्वस्थ बना। अभी पुत्र को मर पूरा एक मप्ताह नहीं हुआ था, रामदास फिर यथापूर्व स्थिति स पहुच चुका था। रात आधी से अधिक जा चुकी थी। तभी सहसा यशोदा की आंख खुली। तभी उम लगा कि घर म कोई आया है और गया है। भतएव, वह सशक भाव म उठी और सवप्रथम उस धार गई जहा सुखिया सो रही थी। वह गहरी नीद म था। उसके गने म बलगम बोल रहा था और वह खरटे ले रही थी। फिर वह बाहर के ओमार म पट्टची। दखा, रामदास भी चादर ओढे सो रहा था। उससे कुछ फासले पर छोटे पुत्र मुखश की चारपाई थी। वह निर्बाध रूप म नीद की सास भर रहा था। तकिन यशोदा के मस्तिष्क म शका था। उसका दिल तब भी धडक रहा था। उसी समय एव परछाई फिर सामने स निकली और गायब हा गई। सहसा कापत स्वर म यशोदा चीख उठी— 'कौन !'

किंतु वहा काइ था नहीं। दिखाई भा नहीं दिया। आवाज सुनकर रामदास ने मुह स चादर हटाई— 'क्या है। कोई है क्या !'

यशोदा पति की चारपाई व निकट पहुच गई। वह बोली, 'दिखाई तो दिया नहीं। मुझे लगा कि घर म कोई आया था। अना-अभी यहा भी काइ आता नगा था।'

रामदास उठ बठा। वह लाठी उठाकर ओमारे से बाहर निकल गया। जाकर दवा मि भन भी अनन खूट से बड़ी थी। चौधरा को घर के चबूतरे पर पडा देज, कुछ दूरी पर उमस्थित अपन मजान पर बठा

शकर नाम का व्यक्ति बाला—'चौधरी, क्या बात है, अलि लोकिदार भी नहीं आया। कल किमी नकब लगान ब्राल चरि ने जमने बंट भर ही थी। सिर म चाट लगी थी।'

कुछ पग रखकर रामदास उस शकर के पास पहुँच गये। उससे बोला—'तुम सोये नहीं।'

शकर बोला—'कुछ सोया था, जाग गया।' गान का रागी है, इसलिए रात म भी चैन नहीं मिलता।' वह बूढा था, अशक्त था।

रामदास न लम्बी सास भरी 'चचा, समय समय की बात है। तुम्हारा भा एक जमाना था।'

शकर उत्साहित हो उठा—'तब तो आदमी को आदमी नहीं समझा जाता था। किमी ने जग आख दिखाई नहीं कि मैं लाठी उठा लेता था। अजीब दिन ये थे। कहत ह क्या जवानी अधी होती है, तो मैं भी अधा बना था। आज माचता हू, जिदगी का वह पक्ष भी अच्छा नहीं था। निदय था, पूर था। मैं आदमी नहीं बना, दानव बना रहा।

रामदास लौट पडा और बोला, 'हा चचा। आसमान की चढती धूप और इन्सान की जवानी अच्छे-अच्छो के होश उडा देती ह, मैंने तुम्हारा वह मम देखा था।'

वह फिर अपनी चारपाई पर आ गया। यशोदा तब भी वहा खडी थी। जब रामदास चारपाई पर जाकर बठा तो वह जल्दी से बोला—सुनी कुछ इस शकर चचा की बात। अब भक्ताई छाटता है। धर्मावतार बनता है। अब बूढा है ना, माम का रोगी ह, तो अपने लिए पर पछताता है। जब जवानी थी, ता तीसमारखा बना था। आदमी का आदमी नहीं समझता था।

यशोदा बाली—'काई बसर नहीं करता। किमा। कहा तो है यदि जवानी मही बीत गई, तो दुढापा भी सही सलामत बीत जाता ह मैं तो रोज दयती हू इन शकर को, रात मे चारपाई पर बैठा दिखाई नता है। अब घरवाली ता है नहीं, जिसे परवाह हो अपन आदमी की। वह होती, ता पास जाकर बठ जाती। दिलासा देती। चिलम म तमाखू और भाग ग्य लाती। बहू है, उसे क्या चिंता? समुर भरे तो, जिये ता।

लडका भी पुरटि भर रहा होगा । अब बचारा अक्ला है, एकाकी बना है ।’

रामदास बोला—‘यह शकर भी नाबदान का कीड़ा ह । घरवाली को कभी शात नहीं बठने दिया । आय दिन मारता था, लडता था । उसके सिर के बाल पकडकर खीचता था । यह ता पूरा नर पिशाच बना था, औरत के लिए ।’

तब यशोदा के मन म बात उठी थी, औरत के लिए कोई आदमी देवता या उदात्त नहीं बनता । किमी ने सच ही कहा है, गरीब की जोरु सबकी भाभी । और अब तो खाते-पीते घरा मे भी औरत अपन आदमी की पर की जूती बनी रहती है । कडवा और नीम चढा आदमी हो दूसरी औरता स इग्क लडाता हो, तो तब और अधिक शामत आती है, घरवाली की । उसन लम्बी सास भरी और छोड दी ।

तभी चौधरी ने पास बठी यशोदा की ओर दखा । उसन कहा—
‘क्या सोचती हो । बडी लम्बी सास भरती हो ।’

तब यशोदा न मन की बात बदली नहीं । वह बोली—‘औरत की जाति तो दुख सहन के लिए होती है । याद है न, जब मैं तुम्हारे घर म आइ, तो कई वष तक कोई सत्तान न होन पर तुम्हारे पिता और मा दूसरा विवाह कर देने की बात सोचत थे । और जब बच्चे होने लगे, तो तुम मुझ पर गुरात थे, लडते थे । उन बच्चा का अभिशाप मानत थे । उसने कहा—‘यह रहो, मरे चार बच्चे रहे नहीं । भगवान को प्यारे हो गये । और जब यह पाचवा पाला-पोसा तवान पठठा मलखू भी चला गया । एक दिन मंदिर चली गयी थी, पडोसियो के साथ । कोई पडित क्या कह रहा था तभी उसने बताया कि यह औरत मद का जोडा यो ही नहीं बन जाता । बडे अच्छे सस्कार दाना को एक दूसरे स राध पात हैं । दोनो जिन्दगी का लम्बा सफर साथ-साथ चलकर पूरा करत हैं । ममता मोह, राग द्वेष, लेन-देन और जिन्दगी के समूचे व्यवहार साथ-साथ मिलकर निपटात ह । जब दोना मे स एक छूटता है मर जाता है तो तब औरत हो या मद । हाथ मलत ह । पछनात है । याद करके सिर घूमत है । अपन किये पर रोत है ।’

रामदास बाला— हा, यशोदा ! बाद म मय पछताते हैं ।’

अजी कोई न भगवान को मानता है, न धर्म को । यह कोई नहीं साधता यह जूड़ी का सयाग जान किस जन्म के किए धरे अच्छे पुण्य प्रताप से प्राप्त होता है । यदा आत्माएँ सहज म नहीं मिल जाती । यह तो युग-युगो से चलता आया मेल मिलाप किसी-न किसी जन्म म फिर शरीर म प्रवेश कर जाता है ।’

रामदास ने अपनी मफेद मूछा पर हाथ फेरा और कहा—‘एक बात बहू । मुझे अपना मलखू स्वप्न म दिखाई दे जाता है । एसा लगता है वह मेरे आस-पाम ही घूमता है ।’

तभी यशोदा उत्साहित स उठी—‘मलखू ब चाचा, यही तो आज दिखायी दिया । एक बार आख खुली तो फिर लगी नहीं । यहा ओसारे म भी कोई मेरी आखो के सामने घूम गया ।’

रामदास बाला—‘वह तरे मन का धर्म था । जब आखो के सामने बाहर छाया रहता है, ता कुछ माफ दिखाई नहीं देता । धुध मे छाया नजर आती है ।’ उमने कहा— हा, तेरी यह बात तो ठीक है । औरत हो या मद, जीतजी अपनी आदमी पर को नहीं देख पाता । कोई सोचता नहीं, इम छोटी-सी जिदगी मे’ कुछ कर ले, कुछ सोच ले’ की बात लागी के दिल म नहीं उतरती ।’ वह बाला— ‘तू तो आदमी की बात करती है, याद है जगू की औरत ने क्या किया था ? अपने आदमी का जहर देकर मार दिया था ।’

तुरत ही यशोदा बाली— ता उसका परिणाम क्या रहा । खुद भी पकड़ी गई और मुह लगा यार भी । दोना को काले पानी की मजा हुई थी । कम्बख्त ने अपना जीवन का बरवाद किया ही, घर भी छो दिया ।

बस, समझ ल भगवान का दिया यह जीवन कोई गुरु काया नहीं । इसकी पूजा नहीं करता । इसे नाबदान के कीरे की गुरु गन्द पानी मे फेंक देता है । वासना का शिकार बन जाता है, मरु आदमी औरत भी पीछे पीछे चलती है । वह भी अपनी शरीर म कभी नहीं करती ।’

उसी समय यशोदा के मन में बात आई। आज यह मलखू का चाचा बड़ा धर्मावतार बना है। पाप पुण्य की बात करता है। इसान के जन्म-जन्मा को भगवान का प्रसाद मानता है। वह महज भाव से मुस्करा दी—‘लगता है, अब तुम्हारा मन बदल रहा है। कुछ और साच ग्हा है। पुरानी चादर उतार दी है, नयी ओढी है।’

इतना सुनकर रामदास स्वत ही खुला—‘मैं आजकल मन्दिर पर चला जाता हूँ। वहाँ एक महात्मा आया है। बड़ी अच्छी बातें करता है।’

यशोदा बोली—‘हा सुना तो मैंने भी। वह भा मुलफा पीता होगा। गाव के लाग ने जाने हगि।’

‘नहीं नहीं वह धूनी रमाने वाला बाना नहीं। वह तो गखवे वस्त्र पहनता है। मन्दिर की कोठरी में ठहरा है। यादराम लाला ल आया था। एक मास यहा प्रवास करेगा। फिर यहा म किमी तीय स्थान पर जायगा।’

यशोदा बोली—‘मुझे ता इन साधु-सयामिया पर भग्गेमा नहीं। बचारी हन्मणी जाज तक सिर पकडकर रोती है। एक नयी उमर का साधु आया था उमी के साथ लडकी भाग गयी थी।’

रामदास वाला—‘और जमना का लडका भी ता भाग गया था किसी साधु के साथ। दस वष बाद मन्दिर पर गया था। सिर की जटाएँ बडी थी। धूनी रमाता था। खूब मुलफा पीता था। मा बाप बहुत रोय के उसके लिए परत उसे ता हराम के माल खान का भजा जा गया था। खुला बछेरा था खूट पर नहीं बघ सकता था।’

अजी मुझे ता डर लगता है इन साधुआ से। इनम चार डाकू खुनी भी मिलेंगे। बहू-बेटिया की जावरू उतारन वाले डकत इन्ही साधुआ में दिखाई देंगे।’

चौधरी रामदास के मन में विपरीत बात थी। वह वाला—‘जो कुछ मैं पहले नहीं समजता था वह अब मानता हूँ। मैं तुझे बता दूँ जिन दिन हमारा मनखू मरा था। उसी दिन भगवाना चमार की घरवाली भी नहीं थी। मैंने तुझे बताया नहीं, मैं उस रात शमशान में चला गया

था। वहाँ जाकर देखा कि भगवाना अपनी औरत की जलती चिता को देख रहा था। तब वह रो भी रहा था। मुह से कुछ कह भी रहा था।

यशोदा चकित हो उठी, उम रात में। वह बूढ़ा डरा नहीं। वह तो चल नहीं पाता, वहाँ कैसे पहुँच गया। बुढ़ापा खराब हो गया। बेचार का। भागवती बड़ी ममता रखती थी, अपन आदमी से। मेरे पास भी कभी-कभी आ जाती थी। मैं कुछ देती तो पल्ले में बाध लेती। मलखू के विवाह पर चार लड्डू और आठ कचौड़ी द दी थी तो उह घर ले गयी। मैंने कहा था, यही खा ल तो बोली, न चौधरन। अपने आदमी के साथ खाऊगी। तब मैं उसे माग भी द दिया था। और चार कचौरी दे दी थी।

रामदास बोला, 'मचमुच उसे बड़ा लगाव था। अपनी घरवाली से। वह लाठी का सहारा लिए श्मशान में पहुँच गया। जा कुछ उमके मन में था, उज चिता ने पाम बैठ कर बहता रहा। उस भरोसा था कि उसकी औरत सब बात सुनेगी।' बहता था, हम दोना का साठ वप का साथ था। हम दोना गरीब थे तबिन जब पाम-पाम बठने, तो किसी अमीर से कम अपने को नहीं समझते थे।

बखस, यशोदा हँस दी—'मचमुच था तो उन दोना का एसा ही साथ। एक को दूसरे के और चन नहीं मिलता था। जब भगवाना कस्बे में जाकर जूती गाठन का काम करता तो वह भागवती भी साथ जाती थी। वहा अपन आदमी का हाथ बटाती थी। बड़ी ममतामयी थी। वह भागवन्ती। जान किस तरह चमार के घर में पहुँच गयी। वह तो शरत सूरत की भी अच्छी था। किनी बड़े घर जान लायक थी।

रामदास वाचा—'सयोग ता उन दोना का था। जूती बदी थी। भगवाना चमार था, गरीब था। नतु भागवती को पानर वह दिल से मालामाल बना था। दोना न एन दूसरे का मगहा था। ममता में पली थी, वह जोड़ी। उमन बहा— मैं जब श्मशान में लौटा तो, तभी। रास्त में पड़े मन्दिर पर जा बैठा था जान कमी हिलार मन में आयी, मन्दिर के मीठचा पर मिर पटक दिया। माथा फूट गया। लोह का मत्ताव लगा था। तभी तो मैं बेहोश बना था। अचरज तो यह कि मैं

उसी रात उस भगवाना की प्रतिमा को अपन प्राणा म उतार पाया था उस रात ही मुझे जाने कृत्या का ध्यान हो आया । मैं कैसे-कैसे काले कारनामे किए वे सब मेरे हृदय पटल पर भूत प्रेत की तरह उतर आय थ । मैं काप गया था

एकाएक यशोदा न पति का क धा पकडा अब छोडो इन बात को । दखो, तुम्हारा गला भर आया । रोना आ गया । लो, मैं चिलम भर लाती हू । तम्बाकू पीना और कुछ दर के लिए फिर मो जाना ।

यशोदा क जाते ही रामदास फिर पड गया । आखा म आसू थे और वह चादर से मुह ढक कर किसी बालक क मसान फुफक पडा था

5

उन दिना मुखिया का मनस्ताज उत्तरोत्तर बढ रहा था । मलखू के मामन जोरावर चोरी छिप आता था । और वह दवर क नान मुखिया स हस बोल जाता था । एक दो बार उगके लिए बनारमी साडी भा ल आया था । चूकि वह उमी परिवार का एन मदस्य था इसलिए उमे आन से रोका भी नहीं जा सकता था । बस भी मलखू का जारावर से अधिक स्नह सम्बध था । जय भी आता छोट भाई के नान मलय का कुछ-न कुछ द जाता था ।

फलस्वरूप मलखू के निधन के बाद जब जारावर अपन घर का छन जादकर रामनाम क घर म प्रविष्ट हुआ, ता उम समय वह सभी को आ ज बाराबर मुखिया क पाम पहुचा । सदा की भाति उसके पैर छुडर पाच हजार दया की गह्री उगकी गोद म रख कर बोला— भाभी मैं हू ता धूनी और डाकू पर तु तुम्हारा गवक हू । मलखू भया जहाँ गया है यहाँ म सौटा कर नहीं लाया जा सकता । तुम्हार अभाव का पूति भा मैं नगी कर सकता । यह स्रण रथा । न ताऊ का बताना न ताई का । अब

तुम्हें अपनी जिंदगी का दुःख-सुख स्वयं दखना पड़ेगा। यह स्वार्थिया का समार है। यहाँ किसी का किसी में कोई सम्बन्ध नहीं। मर कुछ बनावटी है। स्वाध पर आधारित है। जिस छम्मे के सहारे तुम कड़ी थी वह टूट गया। भया मलखू सदा-सदा के लिए नाता तोड़ गया

यह केवल आश्चर्य ही था कि जब जारावर उस घर की दीवार फाँद कर अदृश्य हुआ तो तभी यशोदा न सुखिया के पाम जावर कहा। अरी, जारावर था? क्या कहता था? उसन सास भरा कहता क्या वह भी मलखू के लिए रोता होगा। बड़ा प्यार था दानाम। आखिर चाचा तारु के य दाना भाई थ।

जब यशोदा घर के आगन में गई तो सुखिया न अपना बगम खाला और कपडों के बीच में वह नाटा की गड्डी रख दी। ताला लगा दिया। लेकिन उस दिन, सुखिया की छाती में जब एक बार धड़कन उठी, तो वह सहसा शांत नहीं बनी। मलखू के सामने जारावर आता था हसी मजाक करता था। काई-न-काई सौगात भी भाभी के लिए ले आता था ता तय, सुखिया उस जायया या अजूबा नहीं मानती थी। भाभी-देवर का नाता था, इसलिए जारावर के उस पहचान का सामान्य समझती थी। किंतु उस दिन पाच हजार रुपये के नोट मारो उसकी आँखों में जड़ रहे थे। गल में कुछ आ गया था। वह सटका नहीं जा रहा था। एक अदृश्य भय सुखिया के मन का किमी कीड़े के समान किरोद रहा था। वह उस पाटा दे रहा था। सुखिया के मन में बार-बार आ रहा था। मुझे जारावर में स्पष्ट नहीं लगता था। लिये भी तो अम्मा से कह देना था। जब वह चोर हो गई है। अपन आप में जवराधी बनी है। अभी ता पति को गय दर नहीं हुई, अपना तमाशा बना देना चाहती है। घर में झाड़ लगाती, रोटी बनाती, भैंस के लिए चारा बाटती तो उसके मस्तिष्क में एक यही बात गूँजती, जब तेरा क्या होना वाला है। सुखिया। क्या किसी का प्रेमिका बनगी रखैल बनगी इस तरह ता तू न दीन की रहगी न दुनिया की जारावर डाकू है, छूनी है। शराब पीता है। वह देवता नहीं, दानव है औरत की अस्मत् का लुटेरा एक दिन प्रात के समय रामदास घर में आया और हाथ में पकड़ी लाठी

को एक पत्थर पर बजाकर वाला— मलखू की माँ कहीं है तू ! मरी बात मुन !'

यशोदा कोठे में बाहर निकल जाई। चौपरी वाला— मैं अभी औरता के स्कूल में गया था। वहाँ की सब बातें दूँ आया और मन्थ जाया। मलखू की बहू अब वहाँ जाया करेगी। चार अधर पढ़ लगी और मिलाइ का काम सीख लेगी !'

इतना सुनना था कि यशोदा तमक उठी—'ता घर का काम कौन करेगा। एक नौकराना लाकर बैठा दो। जब मेरे शरीर में इतनी शक्ति नहीं कि इस घर के बखेड़े का महार मकूगी। एन काम तो है नहीं अनक काम है। किसान का घर है। जगल का भी काम है। अब खेत कटेंगे अनाज जाएगा। घर का धंधा तो ही ही भ्रम का काम है। उसका पेट न भरागे तो एक बूढ़ दूध नहीं देगी। छाल तब का तरसाग।

'जाह ! मूख औरत जमान भर के काम गिन दिये तू न तो। बहू न होती तो क्या करती। अत्र इसकी भलाई की बात माच। निफ चार घंटे लगेग स्कूल में। मैं किसी चमार या चमारिन में बात कर लूंगा। उसे जान दे। कुछ धन मके तो धन दे। वह रामसहाय पंडित है ना, रात देर तक भर पाम बठा रहा। बड़ा समझदार है वह। विद्वान तो है ही। बनाता था, बहू समझदार हागी तो अपना थलग स्कूल चला मकेगी। सरकार भी मदद करगी। अब वह बेटों का जगल में खेत-क्यारी देखन का समय नहीं रहा। सुन लिया न, रहमत मिया की तबान लडकी खेत पर मरी पड़ी थी। किमी न गडास में चार टुकड़े कर दिए थे उमके। किसी बदद न कमके बदन के कपड़े तब उतार दिए थे। नगा पड़ी थी। गदन वही धड वही।

यशोदा बोली—'अजी, उमकी बात छोड़ो। जितन मुह उनना बात। मुझे तो बताया है कि वह लडकी जाने किम किस स दास्ती गाँठ बैठी थी। गाव के लुगाडे जाके पीछे लग रे। मा-बाप भी उमकी कमाई खात थे।

मुनकर रामदाम जट्टा-मा हो उठा— तू औरत जात है ना इगी तरह की बात कहती है। यह नहीं समझनी। आज जमाना कितना

पराब ह । जब गाव के जवान लडके बदचलन बन चले है । तब भला घरा की वह-बेटिया किस तरह अपनी लाज रखेंगी सुबह शाम पनघट पर देखा, ये बदजात लडके कुए के आम-भास मडरात रहते है । चौधरी नरपत ने एक बार कह दिया था ता अगले दिन ही उसके दोनो बैल खाल लिए । वह तो कई हजार की चोट खा गया और मुना है वह मेहतर है, बडा जवामद बना फिरता था, निहाला के लडके को डाट दिया था । उससे कह दिया था, गाव म बदभाशी करगा तो पुलिम के हाथो हवालात मे बन्द करा दिया जायगा हाँ तब एक सप्ताह भी नही बीता था, उसका मेत कटकर अभी मशीन पर नही गया था नि उसम आग लगा दी गई । बेचारे का हजारो रुपय का अनाज पलभर म राख का ढेर बन गया । उसे लडका का विवाह करना था वह रक गया ।

यशोदा दहलीज पर बैठी थी । पति की लम्बी बात सुनकर बोली नही, चुप रह गई ।

रामदास बाला—‘तुम कल सुबह वह का ल जाना । नाम लिखा आना । फीम का दस रुपया लगेगा, वह द आना । बहू को कुछ दिन वहा जान दा और देखा, क्या परिणाम निकलता है । अब तुम्हारा मुनेश भी बालेन मे जायगा । वहा रहगा । सप्ताह म जाया करेगा ।’

‘तो बस, एक म रह गयी इस घर की चक्की म पिमन के लिये । जिदगी तो बीत गयी, इस घर म मरत खपत अब बुढाप म भी चैन नही ।

रामदास न सास भरी—‘भाग्य की बात है । हमारा-तुम्हारा मुक-हर अच्छा नही । जब इतनी लम्बी जिदगी कट गयी तो अब क्या है । थाडी सी फुलम रह गयी है । मह भी कट जायगी ।

‘अजी यही रटनी मुश्किल है । बचपन गया, जवानी गयी लकिन यह बुढाप चैन से नही कटगा । भगवान जा अब और क्या क्या देखना पड़ेगा ?’

रामदास क मन को यशोदा की बात छू गयी । उमे भी लगा, मच-मुच यह बुढाप बडा दुःखदाई है । मलखू गया, तो हमारे कपन मे कील

इस महीन में भी एक लडका मारा गया। सुना है, वह जिस लडकी से इश्क करता था उसका एक दूसरा चहूता भी था, उसी ने मौका देकर छुर से पट फाड़ डाला। कई दिन तक लाश खेत में पड़ी रही। चील-कौवे खाते रहे। जब बदबू फली तो तब वान फूटी थी।'

रामदास बोला—'मुझे पता है। गांव में इश्क मिजाजी का दौर तजी से चल रहा है। बेशर्मी बढ़ रही है। लाज शरम जाती रही।'

चादराम का घर आ गया। वहाँ जाकर देखा कि पड़ोस का गजराज पुलिस ने पकड़ रखा था। पास के खेत से बक्सा बरामद कर लिया था। गजराज का इमका साथी फरार था। पुलिस के दरोगा न जब सब वैफियत बताइता दाना चौधरी उस गजराज को देखन लगे। वह हाथों में हथकड़ी पहन सर झुकाव बैठा था। कुछ फासल पर उसका पिता भी था। वह भी मिर झुकाव हुए था। बट न बाप को घरती में गाड़ दिया था।

दरोगा बोला—'चौधरी इस गजराज का यह चौया काम है। एक अपराध में तो यह छूट गया था। दो में सजा पाई। अब यह कम-से-कम चार बप को जेल में जायगा। यह जवान गाँव के चारा का सरगना बन चुका है।'

जागीरसिंह ने पूछा—'यह कैसे पता चला कि इस गजराज ने चोरी की?'

दरोगा मुस्कराया, 'चौधरी हमारा यही तो दिन-रात का काम है। एक लडकी ने यह भेद छोला। वह उस खेत पर घास खोदने गयी थी यह गजराज उसे देख नहीं पाया। वहाँ से बक्सा उठाने गया था। हथौड़ी ले गया था। उसका ताला तोड़न को। लेकिन जब खेत से बक्सा उठाकर चला तो लडकी चीख पड़ी चोर। चोर। हमारा सिपाही भी उस ओर टोहन गया था। दरोगा बोला—'लेकिन इस गजराज ने बुद्धिमानी की। हाथ की हथौड़ी लडकी के मिर दे मारी। वह चीख पड़ी। की आवाज सुनत ही सिपाही दौड़ा, एक और आदमी भी। यह गजराज उस महोश बनी लडकी के मिर में इमकी हथौड़ी मारने ही वाला था, उस लडकी को जान में मार देना चाहता था कि तभी

आदमी की मदद म पकड़ लिया । बागा भी हाथ आ गया । दगो वह बैठी है लडकी । बागरी अभी दग-बारत यप था तो है । हाथ म आन ही पुलिम ता गिपाही माथ न आया ।'

चौधरी बाला—'विगकी है यह लडकी ।'

तब बताया गया—'नत्पन रमार की । मुबह बेटी घाम ल आती, बाद म मा । वह पास बाजार म बचकर घर का पाम चलता । नत्पन तो पिछन दप मर गया था । या बेटी का छोड गया । ए लडका ह, यह पर स चाहर है । या राप म अलग हा गया था ।

रगोगा र गिपोट रिउ ली थी, बमान ल लिण व । यह था का ओर चल दिया । चौधरी बाला—'घर चला कुछ छा-नीकर जाना ।'

नही चौधरी । अभी एव और गगह जाना है । वही ता डाका पडा ह । एन जाग्मी मारा गया । काफी सामान गया ह उम घर मे । सुम्हार गाव का जाराग उन डरैवा का सरदार था । डाने का मचालन नही कर रहा था ।

जागीरमिह बोला—'वह भी इस गाव का कलक है । अभिशाप बना है ।' वह अपन घर की ओर चल दिया ।

प्रात का समय था । चौधरी रामदास घर की ओर न जाकर जगल की ओर बढ गया । यह उमका दनिक काम था । अभी वह कुछ दूर गया था कि तभी दवा नि एव बडे पड पर बहुत स पक्षी उड रहे थे । किसी बडे पक्षी न एव घायल के छोट बच्चे पजा म जकड लिए थे । वह एन डाल पर बैठकर उन बच्चो की मदन कुत्तर रहा था । अभ पक्षी चीख रहे थे । गापद व गुरमल व बच्चे और अण्डे व । उस ददनाक दृश्य को देख म्हसा रामदास को लगा कि एना ही हा हाकार सबस है । अमानवीय शोर है । एसा न भा यही करता है । एसा ही भूर दालक है ।

बरबम चौधरी का मन दहल गया । उनक िल पर एक व बाद दूमरी चोट पड रही थी । कुछ दर पूव जोरावर की बाग उमक मन पर बोहर की तरह छा गई थी । वह जारावर जो भाइ का लडका था, बचपन म उसकी गोद म खेला था । परतु जब वह जागू है । खूबार है । आग्मी का खून करता है । लागा क घर लूटता है । भले ही रामदास

का भाई अलग घर में रहता था परन्तु खून तो एक ही। राजा की लड़की उसकी छाती पर काँटे की तरह चुभ रही थी। उसकी छाती में कसक थी, पीड़ा थी।

रामदास गाँव की तरफ लौट पड़ा। उसका स्वत ही भीगी बिल्ली बन गया था। जवान लड़का गया, तो उसका दिल टट गया था। अब वह बूढ़ा है। निरस्त्र है। निरस्य है। जब रामदास गाँव में पहुँचा तो मन्दिर की ओर उसका ध्यान गया। वहाँ कुछ औरतें शिव की पिण्डों पर जल चढ़ा रही थीं। फूल-पत्तों अर्पित कर रही थीं। कुछ व्यक्ति मन्दिर के आदर में। वह समय पूजा का था। शायद आगती का था। पुजारी देवता की आरती उतार रहा था। घड़ी बजा कर शास्त्रीय श्लोक बोल रहा था।

अपने स्वभाव के विपरीत रामदास मन्दिर पर रुक गया। एक तरफ बैठ गया, तभी एक गढ़ा ओरत उमा पाग आकर रुक गई, देखकर गली, 'आज रास्ता भूल गया क्या? इस मन्दिर पर कैसे आ गया?'

रामदास ने उस सम्भ्रात महिला की ओर देखा—'राम राम चाची! उसने कहा—'सेतो की तरफ गया था। परी में धकन आ गई। अब चला नहीं जाता, यहाँ बैठ गया।'

गोमती नाम की उस चाची ने कहा—'अब तुम सब राग द्वेष त्याग दो। मन्दिर पर आमा करो। यहाँ बँठा करो। देखो, तुम्हारा जवान लड़का चला गया। हाथ में आया पक्षी उड़ गया। तुम रह गये खाली के खाली। अब भगवान का नाम लो। दो घड़ी मत बैठकर शांति पाया करो। कभी-कभी यशादा ता आ जाती है। मैं तो कहा था उससे, बहू का भी ले आया करे। अब उसके मन में अच्छे सम्कार पैदा करो। समझ लो, सबकी यही टक है। यही ह, अन्तिम पटाव।'

चौखरी रामदास का पता था कि वह गोमती चाची स्वत ही समय थी। उसके चार बेटे थे। चारों राजगारी। दो सेती में लगये, दो ध्यापार में। पिछने बिना जब चारा भाइया में अपनी बहिन का विवाह तो दूर दूर तक ऐसा विवाह नहीं हुआ था। न ऐसा लन-देन बिनी न किया था। यह गोमती चाची आज भी चारपाई पर बैठी पुत्रवती है।

बहुओ पर हुक्म चनाती है। बेटे आपाकारी हैं। रामदास न बात बदली नवदा कहा है? अपनी समुराल म ?'

हा भइया। अब वह वही है। लडका फौज म है न, अज वही दूर पहाड पर उमका तबादला हुआ है। अब वह वन अफसर है।

रामदास बोला 'तुमन लडका अच्छा दया। गच भी काफ़ी किया।

'अरे भइया। सब लडका न किया था। मुझे कुछ पता नहीं, क्या क्या दिया।

रामदास बोला 'मुझे पता है एक लाख मे ऊपर हाया खच हुआ था। तुम्हारा बडा लडका सब कुछ बता गया था।'

उमी समय पुजारी परसाद नकर वहा गया। रामदास न दोना हाय फला लिय थद्दा स सिर झुका लिया। उसने जेब से रुपया निकाला और पुजारी को थाली म डाल दिया।

गामती बोली—पुजारीजी एक हजार समझना, इस एक रुपय को। अब तुम्हारा एक नया ग्राहक बना है। गाव का चौधरी है।'

रामदास ने बात सुनी, तो खिलखिला पडा। उस समय वह सच मुच ही आदातिरम ही उठा था।

6

चित्रकार अपनी कूची से चित्र को अनेक रंग भरता है। उस खुश नुमाचित्र को देखकर कलाकार प्रसन्न होता है। अपनी कृति पर गौरव अनुभव करता है। मानो उसका कृतित्व ही उसके ध्यै तत्व की चासनी है, उसमे निहार आता ह। कदाचित् यही कारण था कि चौधरी रामदास पुत्र की मृत्यु के बाद जब गाव क देवालय पर जान लगा तो वह उसका दैनिक कम बन गया था। घर पर एक पुगना भीवर था जगतू, पहले वह भक्त्यु का सहायक था। अब उसी पर खेती का समूचा भार आ

पढा था। मलखू ईमानदार था, उस पर भरोसा था। घर का काम मास-वह दखती और बाहर का जगत्। रामदास अब बूढ़ा हो गया था, सेता का काम करने योग्य नहीं था। इसलिए, वह या तो घर पर बैठता अथवा मन्दिर पर। गाँव में किसी के यहाँ कोई पागिवागि आयोजन हा तो चौधरी वहाँ आता-जाता था।

बिन्तु चौधरी रामदास के मन में चोर की तरह एक बात बैठी थी। गद्यपि उमने किसी के समक्ष प्रगट नहीं किया, परन्तु वह समझा आपणित उमके दिल और दिमाग में आकर भूचाल-मा घटा कर दनी थी। उस समय वह स्वत ही वही से बड़ी पहुँच जाता। माना धरती को छाड़ आकाश में उड़ जाता। यह बात प्रायः प्रगट हा चुकी थी कि चौधरी रामदास का पुत्र तो गया, परन्तु वह पिता की वमर तोड गया। साठी हाथ में लिये गीघा चलन वाला रामदास अब वमर गुज़ावर चलन लगा था। अपनी जबानी में वह पित्तना वमजार और झगडालू था, यह सभी के समक्ष स्पष्ट था। यह मवविदित था कि चौधरी रामदास कभी किसी से मीध्री मुह बात नहीं करता था। इसलिए भगवान पर भी हमला कोई भरोसा नहीं था। औरत और पता यही उसका नियम विषय थे। सौभाग्य से अपनी जबानी में यशोदा गुदर ही थी, रामदास के मन को छुती थी। उसका पाम पैसा भी यथोचित था। कुछ मवतारी और धूर्तता से उपार्जित किया गया था। जब भाइयों में बटवारा हुआ तो रामदास ने अपने हिस्से में अपना मजान परिवारिका पर लिया था। उमने कुछ पैसा लगाया था। जगत में जमीन भी बटा सी थी। जीवन का साथ, दया और सहभावना उमकी समझ में नहीं आती थी। त्रिदगी के प्रथम पक्ष में ही उमने समझ लिया था, दया करने का स्थान घर नहीं मन्दिर हो सकता है। गमपरान और दयतापा की भाषा हो सकती है इगान को नहीं। इसलिए, चौधरी रामदास स्वभाव का पूर तो था ही, दम्भी भी था। मानवता का विषय उमका समझ में नहीं आता था, पगुता और दुर्दांत भावना को वह गुम्ता में समझ लेता था।

उम दिन राउ आ गई थी। छाटा पुत्र मुँह पर आकर जानर में दादिल हो गया था। अरन पर ५ बट सबउ वमन प्रकृति का था।

जब राय फूट जाइ थी। दो बरष बाद वह जवान हो जान वाला था। चौधरी रामदास की आकांक्षा और कामना अब उसी पुत्र पर केंद्रित थी। जमाकि गांव का आम गिवाज था। सध्या के बाद गुरपुटा हात ही घर में दरवाजा लग जाते थे। गलिहारे में आदमी था औरत भी कम आत-जान थे। चौधरी रामदास जब घर में रोटी खान गया, तो तब सुखिया पर चूल्ह पर बठी राटी बना रही थी। दीपक का प्रकाश उसके मुह पर पड़ रहा था। यद्यपि वह समुद्र के समक्ष घूघट बरती थी परन्तु उस समय वदाचित सध्या का झुरपुटा होन के कारण सुखिया का मुह खुला था। राटी खात हुए चौधरी ने कई बार मुह उठाकर बहू की ओर देखा। उसे दिखाई दिया कि उस गोरे मुह पर खून छलछला रहा था। यौवन बाल रहा था। माना वह चीत्कार कर रहा था। सुखिया की आंखें भी बड़ी-बड़ी थी और नरम शिरष मानो भगवान ने अपन हाथ में सवाए था। जैसे-तैसे रोटी खाकर रामदास खड़ा हो गया। दूर बठी पत्नी ने कहा — क्यों आज भूख नहीं थी क्या? बहुत कम खाया। आज तो बहू ने तुम्हारी मर्जी का साग बनाया था।

रामदास बोला—‘भूख ही कम थी, साग तो अच्छा था।’ वह बाहर बिछी चारपाई पर जा बठा। जब यशोदा चिलम में तम्बाखू और और आग रखकर बाहर गयी तो बलात चौधरी ने कहा—‘बैठ जा। रोटी खा चुना?’

‘नहीं तो।’ यशोदा ने कहा, अभी ठहर कर खाऊंगी।

जब यशोदा चारपाई पर बठी तो चौधरी बोला—‘देख यशोदा। जीवन का हम दोनों का कट गया। कुछ सीधे चलते कुछ टेढ़े चलते जिंदगी का सफर अब अपन अंतिम मोड़ पर आ गया। तब बहू सुखिया स्कूल में तो जाने लगी है मैंने सुना। सीने पिरोने का काम भी करने लगी है। पहली किताब भी समाप्त कर ली। लेकिन मैं अक्सर एक बात मन में लिए रहता हूँ, हम दोनों इस बहू के साथ अयाय तो नहीं कर रहे? यह भारी जवानी में पड़ी है। तप रही है। लगता है औरत का यौवन हमारी बहू को तोड़ मरोड़ रहा है। वह आ-दोलित कर रहा है।

पति की बात सुनकर यशोदा ने मास भरी, तो बिया क्या जाय ।
 चुम्हारी समझ मे आये, तो किसी के साथ बाँध दो । इसका विवाह कर
 दो । तब न रहेगा बास न रहेगी बासुरी

चौधरी रामदास उत्साहित हो उठा, हा मेरे मन म यही आता है ।
 आज भी मैं रोटी पाने बठा तो बहू का देख मेरी छाती मे काटा-सा उठ
 आया था । कम्बखत सुन्दर भी कम नहीं । जवान तो है ही ।

यशोदा बोली— मैं देख रही थी कि तुम रोटी तो खा रह थे ।
 लेकिन बहू की तरफ बार-बार मुह उठाकर देख रह थे । तभी तुमम
 आज पाना नहीं खाया गया । जल्दी उठ आये । बहाना भूख न होने का
 नगा विचार ।

चौधरी बोला, 'और क्या करता । आज बहू को स्पष्ट देखा था ।
 तभी तो मन म उछाला आया । बखस मैं अपने आप बोल पडा, अयाय
 कर रह है हम उम मासूम बहू के साथ । प्रकृति कुछ उममे भी चाहती
 है । उमकी भी माग है । यदि कल को वह जिदगी के इस नये माड
 पर फिमल जाय किसी के भाग जाय, तो तब बहू का कोई अपराध नहीं ।
 दोषी हम होंगे बहू रानी नहीं '

'आतुर सार मे यशोदा बोली, 'हाँ हाँ, मैं अग्र गवत्री हूँ । अब तुम्हें
 या बहू से कहती हूँ कि वह दूसर आदमी का हाथ न पकड़े ।' *अब बहू*
 समय की बलिहारी है । विधवा तो पहले भी होती थी *अब बहू*
 जैसी बात तुम करते हो, तब स्वप्न मे भी नहीं मुनी *अब बहू*
 खा भी लो और मुह साफ का माफ हा, *इन्ने नान्न उरन्न के हि*
 क्वारी हो या विधवा, मुझे पाप का व्यभिचार *अब बहू*
 मन की वासना कभी भी तप्त की *अब बहू*
 न और किसी बात का *उस दिन के तुम के मेरे दिन रत्ना*
 पडा था । कपड म लिपटा था, *अब बहू*
 डूब कर भी नहीं मरती ।'

रामदास उठ बडा और *अब बहू*, *अब बहू* है
 'याय करो आप भी जान *अब बहू* । *अब बहू*
 परतु आदमी *अब बहू* है *अब बहू*

औरत का अपन जाल म फासता ह । शिवार एक बार उसा कब्जे म आया नही, फिर वह हलाल कर दिया जाता है औरत क पास जा कुछ है, उम आदमी छीन लेता है !

उसी समय यशोदा न पति की आर दखा । माना उम फिर स अपने आदमी का समझना चाहा । रामदास देख नही पाया, तब यशोदा मुत्करा दी थी । तनिव हस भी दी थी । उतन मन म बात आइ, आज तो यह चौधरी बडा दबता बना है । औरत की कनालत करता है । वह दिन भूल गया । जब कुत्ते की तरह औरत क पीछे घूमता था उसन कहा - यह भी सच ह राड तो रडापा भाग ले, परंतु रडुब चन जन दें, तब ता जिस पट का गभ उस दिन सेत म पडा था, उमका पता चल गया था । पर किसी न कहा नही । सालग चौधरी की लडकी अपना पट बहा गिरा आई थी ।

आतुर भाव म रामदास बोला—'हा, हा, किसी का भी हा । था ता किसी औरत का ही । चाह वह क्वारी लडकी हो, या विधवा बहू आदमी अपनी कमजोरी पर लजाता नही, औरत लजाती है । उसे छुपाता है ।' उसन कहा—'जब तुम आनी बहू की बात साचा । सचमुच, आज मुझस राटी नही पाइ गई । बडी हलचल हुई मेरे मन म । मुझे लगा, मैं कोई बडा अपराध कर रहा हू अपनी बहू के माथ । जसे मेरे कम से, उसका फल तो मैं पा चुका । जवान बटा चला गया । अब अभी मैं कोई ऐसी भूल न कर पाऊ, यही बात मेरे मन को कचोटती है । कुरेदती है !'

उसी समय यशोदा ने अपने मन की बात कही—'आज जोरावर भा जाया था । वह नीचे से नही कोठे पर से आया था । वही बहू का बुलाया । मैं चौक म थी, मुझसे तो 'ताई राम राम' करक रह गया । बहुत देर दोना मे बात हाती रही । क्या बात हुई भगवान जाने ।

चित्तिन स्वर म रामदास बाला—'यह जोरावर भी हमारे लिए एक कलक है । एक बडी समस्या है । उस दिन दरोगा बताता क्या किसी गाव म डाका पडा । एक आदमी मारा गया । वह जोरावर का ही दल था । बहुत माल ल गया था, उम घर से ।

यशोदा बोली—'जोरावर जब भी गाव म आता है, बाप को बहुत कुछ द जाता है। वे दाना घर म भले ही न रखते ह, परन्तु बेटे से प्राप्त करने का चाल पही-न-वही गाडकर रपत हैं। हो सपता है, जोरावर का बाप किसी खेत मे गाडकर आता है। पुलिस ने घर का चप्पा चप्पा नो खाद डाला, कही कुछ हाप नही लगा।'।

विवृत स्वर म चौधरी बाना—'किसी-न किसी दिन यह जोरावर मारा जायगा। पुलिस न एक लाख का इनाम घोषित किया है, इस पकडने के लिए सब जोर घेरा डाल रखा है। यहां गाव म रात आने पर पुलिस वाले पड पर चढकर बैठते है। चालक जोरावर घर म बम आता है।'।

यशोदा वाली—'बहिन के यहा कई बार गया है उस बहुत कुछ दे आया है।'।

'अजी, इा चार डाकुआ व पाम बचता क्या है। जोरत, शराब और पुलिस यही सब इनका पैसा खात रहत है। कम्बख्त, कभी-कभी तो भूखे रहत है।' उसने कहा 'लेकिन इस जोरावर का बहू के पास आना ठीक नही। जब तक लडका था, तो इनका आना निभ जाता था। भाभी-देवर का नाता हमने तोडा नही जा सकता था। लेकिन अब तो चहू विघवा है। जवान है। उसके यौवन की भी कोई कामना है जोरावर मुझे मिले ता मैं उसको कह दूगा। तुम्ह भी कह देना चाहिए। बुरा मानेगा, तो माने। हमे अपनी प्रतिष्ठा रखनी है।'।

यशोदा वाली—'मन तो बहू से कहा था। कह दना उस जोरावर मे अब यहां न आय। लेकिन बहू भी तो मेरी बात अनसुनी कर देती है। और अब ता जब से चार अक्षर बया पडे, अपने को मास्टरनी समझ बठी है।'।

चौधरी न बात सुनी तो हस दिया। वह बिलखिलाकर बोला—'अब तुम्हारी ब' बन्धी नही। मैं स्कूल म गया था। अध्यापिका बताती थी, चौधरी तुम्हारी बहू सबसे होशियार है। अब छोटे कपडे सी लेती है। इसकी किताब शुद्ध करेगी। बडा मन लगाती है।'।

यशोदा उठ बली। चौधरी बोला—'रोटी खाकर आना। एव चिलम और भर दना। अब रात मे नीद नही आती। कुछ देर के लिए

आख लग गई, ता बस !

यशोदा वाली— जब बुढापा है । जवानी ता गई । उम समय का नीद अब कहा मिलेगी । वह मौसम तो गया । वह वहार गई । जब तो पतझड है । सब आर मूखे पत्ते उड रहे ह ।

चौधरी हस पडा—‘जरी ! वाह ! बेदाती जी !

यशोदा बोली नही, घर म चली गई । तब तब बह मव काम स निपट चुकी थी । बतन भी माजबर रख दिय व ।

पत्नी के जात ही, सहसा चौधरी रामदास काप उठा । उस समय उसकी जिदगी का पाप बोलने लगा ह । यह घर किसी जवान की चिता व समान धू धू करव जल उठेगा । उसी समय लाठी टककर चलता हुआ काइ बूडा उघर मे निरुला । दखकर चौधरी वाला— कौन ?’

मैं हू भगवाना । तुम्हारी जूतियो का दास !’

‘जरे भगवाना तू ! इस जघेर म ! बिधर म आया ?

भगवाना चौधरी के चबूतर के सामने खडा हो गया । तभी वाला चौधरी बह रहमान है ना, उसक पाम गया था । उसन जूतिया ठीक कराड थी । उसे दो रुपया देने थ ।’

‘ता ले आया रुपये ?’

‘नही, चौधरी ! कह दिया आज पसा पास नही । वह वाला ‘इस रात म मैं न आता । चला भी नही जाता । लेकिन आज निराहार रहकर हा दिन निरालना पडा ।

जर राम ! राम ! जा बठ जा । म दखता हू कोई राटा ह या नही । और चौधरी ने यशोदा को आवाज दी । वह तो आई नही व’ आई ।

चौधरी बोला— बहू यह भगवाना चमार भूखा है कही गया था, अपना उधार मागन । व’ मिला नही । रोटी हो तो दे । या लगा पाना पी लेगा !’

गुलिया लौट गई । अभी उसन राटी नही प्याई थी । वे सब राटी और माग उठा लाइ । भगवाना को दवर बोली— खा ला । पानी पी लेना ।

जब रोटी खाकर और पानी पीकर भगवाना चलन का उद्यत हुआ तो बोला—‘अब तो तुम मंदिर पर जात हो। चौधरी। मैं दूर बंठा देख लेता हूँ।’

चौधरी ने कहा—‘हा, भगवाना ! मुझे लगा कि वहाँ जाकर मन को कुछ शांति मिलती है।’

भगवाना बोला—‘चौधरी, तुमने भक्त रैदाम का नाम ता सुना होगा। वह भी गँवार था। वे पढ़ा था। परन्तु भगवान का मान बना तो बड़े-बड़े पंडित उसे अपना गुरु मानत हैं। एसी ही महिमा है उस भगवान की।’ उसने कहा—‘यह भी उस परमात्मा का प्रताप था मैं उस रहमान के पास गया इसके रास्त से तौटना भी उसी तरफ से था। परन्तु इधर आ गया। तुम्हारे मन में दया आई और मेरा खाली पेट भर दिया। आज तो आत्मा में प्राण उतर आये थे।’

चौधरी बोला—‘तू इधर आ जाया कर।’

‘तुम्हारी दया है, चौधरी।’ भगवाना बोला—‘मुझे भरासा है, वह खाली पेट उठाता है और पेट भरकर मुलाता है। वह बड़ा दयालु है।’

उसी समय यशोदा बाहर आई। भगवाना का देखकर बोली ‘अर, तूने रोटी खाई थी क्या ! वह सब-की-सब ल आई। उतना अपने लिए रखी थी। अभी खाई नहीं थी।’

‘भगवाना बोला—‘चौधरन, वर की एसी ही इच्छा हागा।’

‘अर यू कहना भगवान की इच्छा थी। यशोदा बोली—‘वह न भी ठीक किया। एक दो जाती तो तरा पेट भी न भरता। भगवाना चुप रह गया।’

तभी चौधरी बोला—‘सब कुछ भगवान की मर्जी में हाता है। उसके बगर पत्ता भी नहीं हिलता।’

यशोदा मुस्करा दी—‘अब तुम मचमुच पंडित बन चल हो। उमो भाया में बोलत हो।’

चौधरी ने कहा—‘अब मंदिर पर जाता हूँ, ता तू मेरा मजाक करती हूँ। हँसी करती है। मैं सोचता हूँ यह मष्टि यह गाँव-जगत उसी परमात्मा की कल्पना है। उसी की इच्छा है।’

यशोदा बोली—'ऐसा कोई माचता तो नहीं। सब अंधे में खूब है। पंडित भी अपन मन के अहंकार की छाया में इस जिंदगी का दर्शन है। अमीर और निधन इसीलिये तो दूर दूर खड़े हैं।' उसने कहा— यह भगवाना था। उसकी घरवाली कितनी सतायी गयी, इस गांव के जमींदारों में। एक बार तो किसी ने इतनी मारी कि अधमरी ममझकर सेत के डोल पर छड़ दी थी। बचारा भगवाना पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं लिखवा पाया। (डर गया) सोच लिया होगा, जल में रहकर मगर में बैर है, इस घरती पर पशु अधिक है, श्मशान कम। जिस दे-रा, वह पशुता का व्यवहार करता है। राक्षस बना है।

उस समय मुखिया भी बाहर थी दरवाजे की आड़ में खड़ी थी। वह चुपचाप रहकर साम-सामुर की बात सुन रही थी। यशोदा बोली— वह खड़ी है कुछ कहना है, क्या?

चौधरी ने मुटु उठाकर दवा और कहा—'अरा, बैठ जा बहू। तारी मास्टरनी कहती थी कि तुम्हारी बहू का दिमाग अच्छा है। जल्दी सिलारों का काम सीख जायगी। कहती थी कपड़े की कटाई का काम दर में आता है।' वह बोला—'अच्छा है बहू, तो कुछ सीख लगी यह तर काम आयेगा। दूज तो सही है तू, हम दोनों बूढ़े हुए। यह घर तारी आर दखता है। तर मन में कुछ है, तो दता दना। तारी इच्छा का मारना मैं पाप समझूंगा। अब मैं अनयवादी बात नहीं कहूंगा।

यशोदा बोली—'कैसी बात करत हो, तुम। उह क मन में क्या हाता? दुनिया में और भी बहुत है, मधवा है तो विधवा भी है। इस घरती भी फिमलत पर सब तो नहीं फिसलती। अपन धम पर बहुत हा रहती है।

चौधरी आतुर हो उठा—'हा, हा धम की शाखा बडा है। उसे पकड़ कर कोई भी इस भवसागर से पार हो सकता है।

उसी समय आधी का तेज झोका आया। आममान में वादल आय। यशोदा बोली—'शायद वर्षा होगी।

किंतु तभी चौधरी चौंका—'कौन।

जागन्तुक ने पैर पकड़े—'म हू, जोरावर।' उमन बाहो में पकड़ा

एक तरह बच्चा पाम गढी मुखिया की आर बच्चा भीपण का नाम था। अपना हा बटा समझना, किंगी नैर का रहा। आर तब बच्चा बच्चा सौपन ही हवा के समान गायब हो गया। वही बच्चा गली चली देर तक चलती रहा। चौधरी रामलाल और पचाई राम रीत बच्चा भीषण विवाद मुनत रह और महमे हुए, प्रमन बच्चा मुक्ति से दीपनी को देखत रह ।

7

मन से और राम से जारावर विशाल नदी के दा फिगरी के समान दिवाई देता था। अनक प्रयान तक भी मुखिया इत रहस्य को नहीं समझ पाई कि जारावर क्या है और क्या नहीं। वह दिन मुखिया की आँखा के सामने मदा धूमता था कि जब वह विवाह के बाद स्वसुर गृह में प्रविष्ट हुई थी चूकि जारावर डाकू था, इसलिए पुलिस के भय से बारात में नहीं गया था। परंतु जब मुखिया पति के घर में आ गई, तब सहमा, एक सुंदर, जवान युवक उसके समक्ष आ उठा हुआ। वह मुखिया के पैर पकड़कर बोला—'मरा नाम जोरावर है। तुम्हारा दाग हू। मलखू का छाटाभाई हू।

उसी समय, मुखिया की सास यशोदा पाम आवर बोली, 'वहू, यह तरा दवर है। मलखू बडा भया है, इमका। यह मरे दवर का लडका है।'

जारावर ने रेशमी रुमाल में बंधे हाथ के दो कगन मुखिया की आर बदा दिये—'यह मेरी भेंट है। स्वीकार करोगे।'

तब सहज भाव से मुखिया मुस्करा दी—'मैं क्या हू।'

अपना स्नेह। अपना प्यार। भाइया को मुझे भाभी मिल गई यह मेरे लिए बहुत है।'

यशोदा तब तक पन्ट में मिठाई ल जाई—'वहू अपन इस दवर का मूह झुठा दे। यह मिठाई खान को दे।' वह लौट गई।

मुखिया न मिठाई का एक टुकड़ा लिया और जोरावर के मुंह का तरफ बढ़ाकर कहा—‘लो, खाओ स्वर जी।’

जोरावर ने वह मिठाई का टुकड़ा खा लिया और पडा होकर बोला—‘थक जाता हूँ। मैं खाना-पान नहीं हूँ। इस जिंदगी को डगर पर भटक गया हूँ। आसवा ता फिर आऊगा। विवाह में नहीं गया था। इसलिए आज आता पडा।’

मुखिया ने एक ही गाम में अपने मन की अनुभूति उडेली, तुम्हारे भैया ने मुझे सब बता दिया है लेकिन मैं चाहूंगी, हम भाभी के पास आना न भूलना। इस भी दर्ज चाहिए। एसा मनाना और प्यार में पगा देकर मुझे ठगरा नहीं मिनगा।

जोरावर मुस्कगया और उम घर में चला गया।

यह बात दिन दिन पुरानी हो चली गी। परन्तु मुखिया और जोरावर भगवान जान किस भावनावश एक दूसरे की आर खिचे जा रहे थे। जोरावर डाकू था, शराबी था और जोरावर इंसान के रूप में समाज के समक्ष खडा था किन्तु मुखिया ने प्रति वह अपो सम्पित था इसे न तो स्वयं जोरावर जान पाता था न मुखिया। यह स्पष्ट था मुखिया यौवन के त्रिस प्रधर आनोक में प्रभावित थी, कदाचित उमी के अनुरूप जोरावर भी जवानों के चढत मूरज में तप रहा था। गाव में उस जैसे सुन्दर और यौवन से पूरित युवक बहुत कम थे। जोरावर यह घडे पर चढा, हाथ में बन्दूक लिए किसी मुहिम पर जाता, ता लगता कब में दफनाम गए सिक्-दर की आला ने जोरावर के शरीर में प्रवण पा लिया था। वह जिधर भी निकलता लागा के साम रुक जान। हम रुक जात। औरतें दरवाजे की आट लेकर उस दरती और प्रमित बन जाती। परन्तु वही जोरावर जब मुखिया के पाग जाता ता उसका पैरा की रज अपने माथे में लगाता। तब मुखिया कहती थी मुझे साज आता है, अपने पैर छुवात। लेकिन जोरावर मुस्कराता ‘भाभी तुम्हारे पर छूत मेरी आत्मा को मुख मिलता है। जानती तो हो तुम मैं खूनी हूँ, इन्सानियत से दूर पडा हूँ। परन्तु जब-तक तुम्हारे पास आता हूँ, तो मन में स्वत ही गुहार उठती है काद स्त्री वाणी फूट पडती है तुम देवी हो

दवी स्वप्ना हा।

इतना सुनती तो सुखिया खिलखिला पडती। उसके मन में बात आती। आदमी इसी तरह की बात करता है, किमी नयी नवेली को अपने जाल में फँसाने के लिए। किंतु ऐसी अशुभ बात वह मुह में नहीं निकाल पाती। कदाचित्त इसका कारण था, उसके सामने आये जारावर के चेहरे पर डोलता सारस्य भाव। सुखिया को लगता कि जोरावर जो कुछ भी हा, मेर लिए न ता चार है, न बदमाश। यहा आकर इसकी दस्यु बन्ति भी मुह नहीं उठा पाती। शायद यहा आते-आते लाचार बन जाता ह। जोरावर की जगह काइ और हो जाता ह।

एम् ही समय एक बार जोरावर न बताया था, मलखू भैया न मुझे मदा प्यार किया, उमन कभी भी मुझसे नफरत नहीं की। मवने मुझे त्याग दिया, लेकिन मलखू न नहीं। वह मेरे कम से घणा करता था, मुझसे नहीं। जारावर ने अपनी एक पुरानी बात दोहराई 'भाभी एक बार मैं बीमार पडा था। बडी खराब जगह टिका था। वहा जहरील जानवर रेंगत थे, शेर चीत भी पछाडत थे। पर तु मलखू उसी जगह मेर पाम जाता। रात के अधियार में जाता। मेर लिए फल न जाना, दवा पहचाता। जब कि उसे पता था, उम भयावह स्थान के आम-पास पुलिस की गफ्त लगती थी। वहा अनन डानू रहत थे।

उसी समय सुखिया न कहा— तुम्हार भया न कभी भी मुझसे तुम्हारी बुराट नहीं की। मुझसे यह भी नहीं कहा, तुम्ह यहा आन में रोक दू।'

जोरावर ने बताया—'म जानता हू। ताऊ और ताई को मेरा आना पमद नहीं जाता होगा।'

सुखिया बोली—'यह उनके मन की बात होगी। मुझमें कुछ नहीं कहा।'

वह भी कसे। मैं उनका मगा सहोदर हू। बेटा न। नालायक हू लेकिन ताऊ-ताई का भवत ह।

यह बात पुरानी हो चली थी। जारावर यदा-कदा आता और कुछ-न-कुछ सुखिया भाभी को दकर चला जाता। फलस्वरूप उम यौवनमयी

भी स्कूल खोल सकोगी। आमदनी का एक जरिया बन जाएगा। चौधरी वाला—'बड़ी समझदार है वह मास्टरनी। कहती थी, जब तुम्हारी बहू जपन काम में लगेगी तो कुछ और सोचन की सुध नहीं रहेगी। समझ गईं न तू यशोदा, उसका इशारा था जवानी में औरत गौर में मद फिमल जाते हैं, तुम्हारी बहू को ऐसा मौका नहीं मिलेगा।'

यशोदा न लम्बी साम भरी—हां, बात तो उसकी ठीक थी। वह का मन भी मिलाई में और पढाई में लगता है। रात में दीये की रोशनी में भी पढती है। पिछली बार जोरावर जाया था, तो कुछ किताबें द गया था।'

रामदास बोला—'मैंने वे किताबें देख ली ह। मेरी बहू के कमर में जाना अच्छा तो नहीं था, लेकिन जब वह स्कूल गई थी तो तभी मैं घर में चला गया। वे किताबें गामने अलमारी में रखी थी, मैंने उठाली। सब धार्मिक किताबें थीं। मैं तो उन्हें पढा नहीं पाया, लेकिन समझ गया, जोरावर अपनी भाभी के लिए उसके अनुरूप ही किताबें ल आया, था। उनमें रामायण थी, भगवद्गीता थी और भारत की महान ऐसी किताबों से ही बहू के विचार बदलेंगे।'

यशोदा बोली—'जोरावर डाकू ही तो है, बुद्धिहीन नहीं। अच्छा पढा लिखा है। डाकू न बनता तो किसी सरकारी दफ्तर का बाब बन जाता। मास्टर भी हो सकता था।'

इतनी बात सुनी, तो चौधरी न सास भरी—यशोदा, मैं इस जोरावर को घर आने से नहीं रोक पाता, इसका कारण तो तू समझत है। मैं कह सकता हूँ, इस घर की प्राणरक्षा के लिए जोरावर ने गलत रास्ता पकड़ा। रामफल चौधरी के बेटे से तुम्हारे मलखू का झगडा हुआ था। जोरावर यदि उस समय खेत पर न पहुँच जाता, तो रामफल का लडका तुम्हारे मलखू को जिंदा न छोड़ता। उस समय दो बदमाश भी उसके साथ थे। रामफल बहुत देर से उस खेत पर निगाह लगाय था। पक्का बेइमान और कमीना। मेरे पिता जी न मेरे विवाह पर पाँच सौ रुपये रामफल से लिए थे। उसके बना दिए पाँच हजार। हमारे पिता पढे लिखे तो थे नहीं, अगूठा लगवा लिया। कौरे कागज पर क्या

लिया, इस भगवान ही जानता था।'

यशोदा न गाम भरी तभी ता आज उगव पाम गाव म बापा जमीन ह। आदमी आग-धीछ की बात नहीं मोचता। अत्र जानर दयो न क्या दगा ह उम बूढे माप की। अटिया पर पछा सठ रहा है। हजारा रुपय डाक्टर त्रा चुना है। उमका बेटा मूरज ता जोरावर की लाठा स मरा लकिन तो बेट तो भगवान के बाप म मर गए। एव पागल हो गया। तांत बहुरए राठ पर बैठो ह। न कोर पानी देवा है न नाम देवा

रामदास का मन आकुन हो उठा—'एसी बात न कर मशो'। किमी का घर विगता दग्बर खुश मन हा। जब ता तरा नी घर विग गया।

यशोदा बोजी— भगवान का शुक्र था कि सूरज छत पर नहीं मरा। कई महीन बाद मरा था। लाठी की मार में सिर तो फटा, परंतु टाव लग गए थे। उसी म मवाद पड गया। कीड़े पदाहा गए। बहुत तडपवर मरा था वह सूरजभान। उसी अपराध म जारावर दा साल कदखान म रहा था।

रामदास न गहरी माम ली—'वह दा साल का कदखाना ही उसक लिए काला बन गया। वहा म पक्का डाकू बनकर निकला था। कई सरदार उसके बागी बन गए थे। जब वह जेल से छूटा, ता दिमाग म प्रतिरोध और प्रतिशोध का भाव लिए था। रामफल क घर को तबाह कर दन का भाव उसके मन म था। लेकिन, अब भगवान न ही उस घर का विपत्ति के घेर म बंद कर दिया, ता जोरावर क्या करता ? वह चुप रह गया।

यशोदा न तभी ताना मारा— लकिन तुम ता ऐस दयावत बा कि कई बार उम रामफल के पास गए थे। मैंने तो सुना एव बार कुछ रुपय भी दे जाय थ।

तव रामदास सूख भाव स मुस्कराया—'यशोदा मुझे दयत ही रामफल रो पडा था। मेरी आखो के सामने ही उसन वह कागज फाड लिया जिस पर मेर पिता ने अगूठा लगाया था। उस समय वह बूढा गिडगिडाकर बोला था सिफ पाच सौ रुपय दिए थे, तुम्हारे पिताजा

को, पाच हजार नहीं। दो हजार स अधिक मेरे पास जा गया। जब न कुछ लेना है, न देना है। जिस खेत को तुम्हारे पिता ने रहन रखा था। उसे पाने के लिए मेरा बेटा भीत के मुह में चला गया। लेकिन वह खेत जहा है, वही रहगा। वह तुम्हारा था अब भी तुम्हारा है। अफसोस यह है, तुम्हारा मलखू भी इस ससार में नहीं रहा।'

यशोदा तिलमिला उठी 'अब पछनाए होत क्या, जब चिडिया चुग गड खेत। सुनता हू उसकी एक बहू खराब निकल गई। इसकी बहुओं के भाई जमीन के मालिक बन बैठे ह।

अब ता यही होगा। हराम का माल हराम में जायेगा। चौधरी रामदास न हुक्के से चिलम उतार ली और वह यशोदा की तरफ बढ़ाकर कहा—'ल, जरा तम्बाखू रख ला। अब ता बहू ने चूल्हे में आग सुलगा ली होगी। आज हुक्का भी नहीं पी सका। वह फरीदाबाद का नौबतराम था न, आज उमकी तेरहवी थी। वहाँ गया था। बेचारा भला आदमी था। भगवान की माया है, जन्म भर तो अभावग्रस्त रहा, अब उतरती उमर में रुपया आया तो दिल का दौरा पडते ही मर गया। यह ह भगवान का करिश्मा। उमका माय। किसके भाग्य में क्या लिखा है, कोई नहीं समझ पाता?'

अजी, फिर भी लोग नहीं मानत। इस पैसे के लिए भी जुलम करत है। अपन स्वाय का पट भरने के लिए दूसरो का पेट काटत है। तुम माना या न मानो, वह चौधरी भी कम नहीं था। वह तो यह कहो, हाथ-पर पटककर भी उमके हाथ कुछ नहीं पडा। अब भी जो रुपया उसक पास आया, वह साने की औरत का था। लोग कहत हैं वह विधवा औरत डाकुआ न मारी, लेकिन मुझे भरोसा ह, वह इसी चौधरी की कारस्तानी थी। इमने दो बदमाज किराय पर किए थे। रात के अधियारे में वह बेचारी मार दी गई।

रामदास कड़ुव भाव से बोला, 'नहीं, नहीं।'

तुरत ही यशोदा बोली—'राम बसम। उस गाँव की दो औरतें इस गाँव में हैं। एक दिन छत पर उन दाना से बात चली थी। तभी कली खुली। एक तो चौधरी के पडोस की रहन वाली है। उमका तो यह भी

रहना था कि चौधरी न पुलिस का भी रूपया चढ़ा दिया था ।'

सास भररर चौधरी वाला — 'कइ लाख की जायदाद थी ।'

यशादा बोली— वह भी नहीं था सया । साल की विधवा सुबह क समय चक्की पर आटा पीसन बैठी थी तभी गडासे म उमका मिर काट दिया गया । जब उमने भैम का चारा डालन क लिए दरवाना खोला, तो तभी स बदमाश घर म घुस गये थ । उमने सास भरी— 'तुम बहुत हां, वह दिल का दौरा पडन म मरा न, न वह उम रूपय को, और जायदाद का हजम नहीं कर पाया । माल की प नी न उमका लडका गोठ तो लिया, लेकिन वह लडका भी पागल बना है । गात्र के गलियार म फिरता है । कभी पटेहाल कभी नगेहाल

चौधरी वाला— नहीं वह सिर क ऊपर रर आगमान की आर दखने लगा । यशादा चिलम लेकर घर म चली गयी । जब वह चूहे क पास जाकर चिलम म आग रखन लगी, ता तभी सुखिया वाली— 'आज बहुत बात की पिताजी म ! म तो एक बार गयी, ता लौट आई ।

यशादा बोली— 'अरी बहू ! कोई नहीं बात तो थी नहीं, वही पुरानी घिसी-पिटी बातें । तू समय ले, इस दुनिया मे कही चन नहीं । यह औरत मद का समाज बहने को भगवान का भक्त है आत्मा-परमात्मा को समयता है, परतु मैं देखती हू, यह निरा कसाई है बर्बाद और क्रूर है । अपने स्वाय का पट भरन के लिए आदमी को तिनके की तरह तोड देता है ।

सुखिया न बताया— 'आज स्कूल मे एक औरत बता रही थी कि कोई औरत बच्चा पदा करके खेत मे छोड आई थी । जानबरा ने वह खया था ।

यशादा का मन तिलमिलाया— 'हा, हा, यह पाप भी इस घरती पर हाता है । क्या पता, वह किसी विधवा का घा या क्वारी का । उसने सास भरी ओ हा, वह पाप था । किसी ने छुपाया था ।

सुखिया बोली— यह तो निमम हत्या है । जघन पाप है ।'

अरी बहू ! इसे कौन मानता है । यह तो कुत्ते-बुतियो का समाज बना है । आखो का पानी उतर गया । धम को लोगो न चुल्हू मे भर-

कर पी लिया। अब तो न औरत रागती है, न बादमी। तब वह चिन्म लेकर जान लगी, तो बोली—'भैंस की सानो कर देना। आज शायद मुकेश भी आएगा। कल रविवार है वह ता छुट्टी मनायेगा।'

मुखिया बाली—'मुकेश आआ, तो उसे लड्डू बना दूगी। मुनह बिना कुछ घाय स्कूल जाता होगा।

यशोदा वाली नहीं, बाहर चली गयी। जाकर दँडा, उसका छोटा पुत्र मुकेश शहर से आ गया था। वह पिता के पास बैठा था। माँ का देख वह ढडा हो गया और पैर छून नीचे धुक गया। यशोदा बोली, 'धुश रहो, धून पढो। आओ, भाभी के पास। उसके पैर छूवर अशोर्वाद प्राप्त करो।

तब मुकेश अपना झोला उठाकर घर म चला गया। यह जात ही भाभी के परो म झुक गया।

8

जिस शिशु को जोरावर उस मुखिया की गोद म डाल गया, वह एक रहस्यपूर्ण दृश्य तो था ही, अज्ञेय भी था, जोरावर आँधी के समान आया और उसी तेज झपाटे मे मुखिया से दूर हो गया। जिस वपडे म बच्चा लिपटा था, उसी मे एक पत्र और कुछ रुपया था। घर मे जाकर जब मुखिया ने वह पत्र पढा, तो यह स्तब्ध रह गयी। एषाएक कुछ सोच नहीं पाई। तभी यशोदा ने घर मे जाकर कहा—'अरी, यता तो, क्या लिखा है, पत्र म। किसका है, यह बच्चा। वहा से लाया है। मया धन-दौलत को लूटने वाला यह डाकू अब दूमरी औरता के बच्चे भी उघाता लगा। हाय, राम ! बडा नृशस और क्रूर बन गया है, यह जोरावर !'

लेकिन उस समय मुखिया मौन थी। स्तब्ध भी बनी थी। मारा समूचा ब्रह्माण्ड उसकी आँखो के ममश धूम उठा था। वह बच्चे का अपन पास रहे या नहीं, इस बात का निश्चय करना भी उसके लिए

दूध भर हा गया था। जनए, अनिश्चय की उम अरस्या म ही, उमन लम्बी साम भरी और आममान को और अपना मुह उठा दिया। यशोदा घर क दूमर कामा मे लग गयी थी। कुछ देर बाद ही वह फिर पति के पास जा बैठी। घर म वह बच्चा क्या आया, यशोदा के लिए भी एक समस्या बन गयी थी। उस अवस्था म ही वह दुःख बनी थी। पास जाते ही पति मे बोली—'इम कहत ह, जाकाश म टूटी हुई आफत ! मुझे लगता है, पुलिस म हुई मुठभेड म जोरावर भी मारा गया। अब तो बंदूक का गोली का स्वर नहीं सुन पडता।'

चौवरी रामदास स्वय सहमा हुआ था। कातर बना था। पत्नी की बात सुनकर बोला— हा मुझे भी ऐसा लगता है, जोरावर नहीं रहा। वह पतिम की गाली स मरा होगा, तो उसकी लाश पुलिस के साथ गयी होगी। उस पर ता एक लाख का इनाम था।

यशोदा बोली—'कमी जबरज की बात है न ता जोरावर की मा गगा घर से बाहर आई, न बाप। वे सोय नहीं होग, भाग रहे हागे।'

रामदास बोला 'यशोदा, यदि पुत्र काला नाग बनकर समाज को डसन लगे ता मा बाप भी उससे दूर रहेंगे ? तुझे पता ता है, जोरावर का बाप यादराम आय दिन धान मे बुलाया जाता है। घर का चप्पा चप्पा ग्योद डाला है पुलिस ने। तू भूली गही होगी एक-दो बार मुझे भी धान म बुलाया गया था। वह ता यह कहो, धानदार मुझे जानता था। दो-चार बात करके मुझे लौटा दिया। यादराम को तो एक बार हवालात मे बंद कर दिया था। पुलिस ने मारा-पीटा भी था।'

लम्बी सास छोडकर यशोदा बोली—'औलाद सभी कुछ करा सकती है। आममान मे बैठा सकती है और धरती म भी गाड सकती है। मुझे तो म जोरावर का इस घर की डयोडी पर जाना पसंद नहीं। बहू मे एक तो बार कहा भी कि वह दे उस डाकू मे, इस घर पर दया करें। हमारा बुढापा न बिगाड।' उमने फिर सास खीची— भगवान जाने, बहू ने उससे कुछ कहा या नहीं। उससे कहती, ता वह एक जाता इस तरवाजे पर न आता।

रामदास हुक्का पी रहा था। उसका धुआं छोडकर बोला—'यशोदा,

यह भी नहीं हो सकता। गोश्त से नाखून कैसे अलग किया जायेगा। जारावर मेरा भी गाद खिलाया है। भाई का पुत्र है। इसी घर के भागन में खेलकर बड़ा बना है। उस न बहू रोनेगी, न तू! हिम्मत हा, तो तू ही कहकर दख ल। शत बदता हू, जो तू उसे राख द।'

यसोदा वाली नहीं, चुप रह गयी।

उसी समय एक व्यक्ति उधर से निकला। रामदास को घर के चतूतर पर बैठा देखकर बोला—'बचा राम-राम!' उसने कहा—'आज तो खूब भिड़त हुई, पुलिस में और जारावर में। कई पुलिस वाले घायल हो गए। जारावर को भी गोली लगी या नहीं, भगवान जाने।

'हा,—र, लखपत! यह कैसे हुआ। क्या जारावर?'

लखपत बोला—'जोरावर का पता नहीं कि वह मारा गया या बच गया।'

उसी समय दो-तीन व्यक्ति और उधर आ गए। उन्हीं में से एक बोला—'जारावर बच निकला। वह आधी के जघड का लाभ उठा बठा। जसराम के बारह बीघा खेत पर वह मुठभेड हुई थी। जोरावर देख के गन्नी की आड में था। पुलिस ने उसका पीछा तो दूर में किया था।

दूसरा बोला—'जारावर बचा नहीं। एक बार वह चीखा चिल्लाया था।'

जरे, भैया! वह तो पुलिस के मिपाही की चीख थी। मैं तो वहीं पास में अपने कुएँ पर था। आधी में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह बछावर जबान जोरावर एक-दो पुलिस के आदमी की गदन मगाड सकता था। वह तो छूटार भेडिया है। जिमके दात मारेगा उसका गोश्त उतार लेगा।'

एक व्यक्ति बोला—'इसे कहत हैं एक मछली मनुके तालाव का पानी गंदा कर दे। इस जोरावर के कारण गाव में पुलिस ने अपना स्थायी डेरा टाल रखा है।'

उससे कहा गया—'लेकिन लाभ क्या, जोरावर तो आजाद बना रहता है। गाव में जाता-जाता है। लोग समझत होंगे कि जारावर अपने

घर नहीं आना। जपन इग ताऊ से आकर नहीं मिलता वह सब जगह जाता है। क्या मजाल, जा कोई उसमें खिलाफ करना मुह खोल। सबका अपनी जान प्यारी है। जोरावर का भरा जिस्तौल वभी भी, कही भी आग उगल सकता है। वह ता आजाद पछी है। वभी घरता पर दिखाई देगा वभी आसमान में

एक-एक करके व सब आगे बढ़ गये। उस समय आममान साफ था। तार निकल आये थे। हवा में ठण्ड थी। यशोदा वाली—'कही बूढ़ें पडा है।

रामदास बाला—'जाजकल ओले भी पड सकत ह। दिन में गरमी अधिक थी।'

यशोदा ने अपनी मन की बात फिर उठाई—'हा बताया नहीं इस बच्चे का क्या होगा। यह गाव है ? शहर नहीं। मद-औरत कहंग, विधवा ने अपने पेट से बच्चा ज मा है हा, किसी का मुह नहीं पकडा जायगा। तब हमारे पास कहन को क्या रहेगा। या कहां तो, जोरावर की मा का बुलाकर बच्चा सौंप दे।'

रामदास बाला—'बहू क्या कहती है ? पहल उमका मत ला।

जजी, वह क्या कहेगी। मैंने बात की, ता चुप बठी रही। जब उसक पास गयी तो बच्चे को रुई के फाह से दूध पिला रही थी। जस उसी का बच्चा हो, बडी ममतामय निगाह से उसे देख रही था। सिर पर हाथ फेर रही थी। मुझे लगता है, यह बालक अभी भी दो चार दिन का है।'

रामदास बोला—'अभी चुप रहो तल देखो तल की धार दधो।

यशोदा मुस्करा दी—'सच कहा है किसी ने बुढाप में भी इमान औलाद और धन में मुह नहीं मोडता। लगता है तुम्हें भी लालच जा गया।'

रामदास बोला नहीं हुक्का पीन लगा। यशोदा की बात में कितना तथ्य था वह उसकी गहराई में खो गया। तह उसने मान लिया कि बुढाप में ममता का वेग बढ़ जाता है। जादमी उसी में खो जाता है। जिस वाण प्रस्थी की या सयासी की बात प्राय कही जाता ह उस

प्रत्यक व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता, इस जीवन का दामन छोड़ना सुगम नहीं, बड़े-बड़े महारथी इन रास्तों पर जाकर हार मान चुके हैं।

तभी बलात यशोदा बोली—'क्या सोच रहे हो ? यह आधी कोई-न कोई रंग जरूर लायगी। आज पड़ो के छोट-छोटे आम गिर गये होंगे। एस ही समझ लो, यह आया हुआ अधड़ इस घर में भी बूड़ा करकट बढ गया है। मेरा मन कहता है, जोरावर जिस बच्चे को द गया वह मानो खुद उसी का है, या उस नारी का, जिसकी हत्या करके वह भागा था। इस आधी में यहा तक आया था। पुलिस पीछा न करती होती, ता वह कुछ देर खता। बच्चे का इतिहास बताता। वह जान-बूझकर बहू की खाली गाद भर गया। यह भी हो कि पुलिस पीछा न करती, तो दूसरी जगह जाता।'।

रामदान ने हुक्का अलग कर लिया। वह उठ बठा। तभी बाला— यशोदा, तू किस उलचन में पडी है। चोर-डाकू तो नित्य इसी तरह के पुक्कम करत ह। किसी का बच्चा उडात ह किसी का धन। ऐसे बेरहम इन्मान न भगवान को मानत ह, न भावना को। वह तो पत्थर है, पत्थर। उस पर पानी नहीं टिकता।'।

यशोदा ने सास भरी और छोड दी। वह सहसा कुछ कह नहीं पाई।

तब चौधरी रामदान बाला —'मलखू की मा, मैं तो गवार हू, पढा-लिखा भी अधिक नहीं। लेकिन मेरे मन में प्रायः यह बात आती है कि इन्सान भगवान तक का नहीं मानता। दूसरा का तो धोखा देता ही है, अपन का भी दता है। उसे देखो न, लाला धनपत राय को। बूढा हा गया, मन्दिर पर जाकर शिवजी की पिण्डी पर जल चढाते हुए। गाव में सबसे बडा भजनान दी बना है। मन्दिर पर रणया भी लगाता ह। प्रायः दिन ब्राह्मणा का पिलाता है। तीर्थ स्थाना की भी यात्रा कर आया है। लेकिन क्या कभी उसके अपने मनप्राण में भगवान का स्वल्प रणया है। उस भावना का समझा है। हर सुख की औरत सिर पटककर मार गई, लेकिन लाला ने उमका रहन रखा खेत नहीं जोटाया। दादी काय न बीस हजार का माल हडप गया।'।

यशोदा बोली—‘संकड़ा औरता का जेवर उमन जपन यहा गिरवी रखा है। जब डाभा पडा ता एक् बडा सन्दूध डाकू उठावर ल गए थे। लोगो का कहना है कि उमम सोने-चादी के जेवर भर थे। वे सब गिरवी रखे थे।’

हा, हा, यही ता। लाला की बातें मेरा मन सालती हैं। एसा लगता ह कि कोई जहरीला जानवर मेर प्राणा स कोई तरल पदार्थ उलीच उलीच कर बाहर फेंक रहा है। रामदास वाला—‘मैं गवार हू या, मंदिर पर जाकर पूजा करनी भी नहीं जानता, लेकिन मैं इतना जरूर समझता हू इस ससाज को बनाने वाला, इस जीवात्मा का निर्माता कोई-न कोई है जरूर। उमी ने चीटी से लेकर हाथी तक का निर्माण किया है। जो सत महात्मा निर्माण पद को प्राप्त हुए ह, मरने क बाद भी पूजे जाते है, उसके जीवन म कोई न कोई ऐसी सुगंध जरूर थी कि जिससे इंसानी समाज सुगंधित बना। उस पावन गंगा म गाता मारकर अपने अपने का प्यारना चाहा।’

यशोदा बोली—‘हम देवा देवता या सत महात्मा का पूजा कर सकत ह, स्वयं बसे नहीं बन सकत। हम तो भगवान के बीड़े ह सडाद म पडे रहना ही पम द करत ह लाला धोपत राय भी एक् काडा है जहरीला। इंसान को काटे तो वह बचेगा नहीं। बहुत मे स्त्री-पुरुष मार है इस लाला ने।’

रामदास ने लम्बा सास खीची—सभी एसे है। भगवान का पूजन करना भी एक ढांग है। अपने का धोखा देना ह। समाज का ठगना है।

यशोदा बोली—‘अजी तुमना सुना नहीं गंगा-यमुना म पेशाब-पाखाना बहाया जाता है। उस पवित्र दरिया का भ्रष्ट कर दिया ह लोगो ने। अब गंगा म स्नान करना धम का नाम नहीं।’ उमने कहा—‘हमारा मलखू एक बार हरिद्वार गया था। कहता था, जब मैं हाया म गंगा का जल लेकर पीना चाहा तो तभी पाखान का एक टुकड़ा उम जल म आ गया था। तब से वह गंगा नहीं गया।’

चौधरी बोला—‘मलखू की मा, यह इंसान भी एक पावन दरिया है। गंगा है। लेकिन इसके जीवन म भी अबसाद भरा है। गन्गी स

भर्राबार है। जान कितना जमा क मुपल पावर इमान गन्त महामा क पद को प्राप्त होता है। वह अपने जीवन की गगा म स्वय गोता मरता है, बल्कि जन जन को प्यारना चाहता है। वहा भगवान है। इन मंदिरा का निर्माण इर्मातिए ता किया कि इमान जन-जन क मेल घाने के माय अपने आपका भी निखार द। उस सुन्दर मूर्ति क अनुरूप अपन को बना ल।'

तभी सहमा यशोदा मुपला उठी—'यह नहीं हागा। इमान नहीं बदनेगा। यह तो बूढी का डेर बना रहगा।'

उसी समय महमा चौधरी चीर उठा। दग्धा, मुखिया उहू द्वार पर आकर गडो थी। वह यशोदा को बुलाकर कह रही थी—'घर म आजा अम्मा ? रोटी भी बनानी ह। उस बच्चे को तुम ल लो।'

रामदास बाला—'बहू तूने क्या सोचा ह ? अब यह तू पालगी। तू सहजेगी।'

मुखिया जब समुग मे बोनन लगी थी। घूघट ना कम काढती थी। स्वय रामदास का यह निर्देश था। स्वसुर की बात मुनकर वह बाली—'हा पिताजी ! अज मैं स्वय पालूगी, इम बच्चे को ! समझ ला, यह मेरा है।'

एकाएक रामदास बाला नहीं, चुप रह गया। तभी यशोदा बोली—'बूबू सोच समझ ले बहू ! बच्चे का पालना आसान नहीं। गौर तू अपना आग भी देख ल। तू विधवा है, बच्चे घाग मे तरी जिदगा बधा है।'

रामदास न कहा—'हमारी बहू मुख नहीं, ममझदार ह। अपना भला-बुरा समझती है।'

मुखिया बोली—'पिताजी जोरावर मुझे यह बच्चा द गया है ममव लो, मौप गया है। वह आयगा ता ल जाएगा। नहीं ता यह मेर पाम रहेगा।'

यशोदा बोली—'जोरावर अब नहीं आएगा। आज वह पुलिस की गोली से मारा गया होगा। वह नहीं बचा होगा।'

लेकिन मुखिया न इस बात पर अपना मत व्यक्त नहीं किया। उसन यह भी नहा बताया कि जोरावर अपने पत्र म क्या लिखकर द

गया है।

किन्तु यशोदा ने पूछा—‘वह पत्र भी ता द गया था। क्या लिखकर द गया?’

मुखिया न कहा—कोई पास बात नहीं थी। यह लिखा था, बच्चा सौंप रहा हूँ, इसे पाल लना? किसी का मत देना। इसी घर का बनकर रहगा।

बाह-बाह! बड़ा तीर मारा हंगमजाद ने। रामदास बाला—उमन इस नमूचे घर को फमा दिया है। बहू को बदनाम कर देना चाहा है।

तुरत ही यशोदा बोली—‘और नहीं तो क्या। चार डाकू का धरम ता होता नहीं। एस लोगो के मन से न थाय होता है, न दया। इन्सानियत का भाव ता उनक पास आय ही क्या। वे सूनी न लुटेर है।’

उस समय मुखिया का सास की बात पसंद नहीं आई। वह तुरत बोली—‘अम्मा, यह बात चन्नूतर पर बठकर नहीं कही जाता। घम चला। मैं रोटी बनाता हूँ, पिताजी को खिला दा।’

यशोदा उठ तो चली परंतु मुखिया की बात उसे चुभ गई। उस लगा इस बहू को बच्चे से जोरावर भे जम्बर काई लगाव है। उसके प्रति ममता है। कदाचित यह बात चौधरी क भी मन म आई। तब मुखिया अपनी बात बटकर घर म लौट गई थी। चौधरी न पत्नी को टकोरा सुन ली बहू का बात। समन न, हाथी के दात बाहर निकल आय है। खतर की घटी बज चुकी है।

यशोदा झुझला पडा। वह कुण्ठाग्रस्त बनकर बाली—जब तुम्ही रख ला। मिर पर तुमने चढाई है इस बहू का। यह तो बोल भी नहीं पाती थी। अब टपर-टपर बोलती है। एक की चार सुनाती है।

अरी भाग्यवान! अब कब तक चुप रहोगी। उसे भी बोलना है। अपने मन का भाव व्यक्त करना है। यह बुरा नहीं। घूघट बाढकर घर म बठी रहना शाभाप्रद नहीं।

यशोदा न आख तरेरी—मरी बात सुन लो। यह हालत रही तो

यह सीधी-भादा गू तुम्हारी नाग गट गी १'

'मरी नाव तो बट गई, यगाता। जोरानुद मैं कष्ट दीना-सह भाई
का लडवा है ता, मेरा है तो, काइ अन्तर नहीं। बट के फलजु आता
है, मैं देखता हू। मैं आना नहीं। भर मन को आँखें भी बन्द करती हैं और
माये की भी। जा, घर म। रोटी दे। भूत्र लगी है।
तब यगादा घर म चली गई।

9

वस्तुन चौधरी रामदास का जीवन कभी भा सम्य नहीं रहा। परन्तु जब से उसने पुत्र मलयू का प्राणात हुआ, वह बड़ी तजी के साथ बदल चला था। पहन के समान धर्षानु, दम्भी और महत्वाकाक्षी नहीं रह गया था। अपनी जवानी के दिना में रामदास लडाकू प्रवृत्ति का था। मुकदमे बाज था। किन्तु उसका जवान पुत्र क्या गया, रामदास का पिछला जीवन ही चला गया। अब वह घर दासनिव के समान मन्दिर पर जाकर बैठना और वहाँ पर आए आगतुना का भगवान के प्रति श्रद्धा भावना को देखकर स्वत ही विहसता। गाँव के छोटे बड़े के नर-नागी माना उसकी दृष्टि में जजूवा थे, जलौनिक थे और वे सब उस मन्दिर पर आकर काइ जलम्य वस्तु पान के आकाक्षी बन थे। तब मोचता रामदास क्या इस पदर की प्रतिमा में काई इसकी जीवात्मा होगी। वह इन दशनायिका की आशाप प्रदान करती होगी। किन्तु रामदास के मस्तिष्क में और मन में इस प्रकार की अकल्पित बात नहीं उतर पाती थी। वह लागे की उस महत्वाकाक्षा की कल्पना करके कभी हँसा ता नहीं, किसी के प्रति उपक्षा का भाव भी प्रदर्शित नहीं कर पाया, परन्तु वह स्वत ही विस्मित था। इन ऊहापोह में लगा था, आखिर यह सब है क्या। लोग किस प्रेरणा से इस मन्दिर की ओर खिंचे चल आते हैं। जबकि गाव का वह देव मन्दिर भय्य भी नहीं था। सौ-पचाम वष पूर्व वह बना

था। एक जमींदार ने बनवाया था। अब वह भी नहीं था। उमका समूचा घर ही समाप्त हो गया था। रामदाम को पता था कि उस जमींदार की पत्नी धर्म परायणा थी। हरिद्वार, काशी और त्रिवणी प्राय जाती थी। उसी ही प्रेरणा से मंदिर बना था। स्वयं जमींदार दब भक्त था न धार्मिक भावना का पोषक। वह रात दिन शराब के नशे में रहता। अनेक औरतों से संबंध रखता। समूच गांव की आधी जमीन का वह स्वामी था। हाथी रखता घोड़ी रखता और मुदर बैला से सज्जित रथ में बैठकर निकट के शहर में जाना उसका प्रिय व्यसन था।

एक दिन जब मंदिर पर बैठे उस जमींदार का इतिहास रामदास के मन में उभरकर आया तो तभी वह अत्यंत विपरीत भाव में मुस्कराया, जमींदार क्रूर था और उसकी पत्नी धर्मात्मा। कितना बड़ा जतर था दोना में। समझ गया कि उस जमींदार के घट पात गए स्वयं भी गया। उस जमींदार का वैभव भी श्मशान में जलती चिता के समान धू धू करके समाप्त हो गया। अब उस जमींदार का विशाल भवन खटहर बना था। जहां कहीं रंग रेलियां मनती थी, वहां अब गांव के किसान अपने बैल बांध गाय भैंस बांधत। उस भूखंड का अब कोई स्वामी नहीं था। वह धरती अपने स्थान पर थी परंतु उसका स्वामी नहीं था। जिस व्यक्ति का एक दिन गांव में दबदबा था अब उसका नाम उवा या न पानी देवा

चूंकि रामदास कभी मंदिर पर नहीं आया गया इसलिए जब वह वहाँ जाकर बैठने लगा पंडित द्वारा पठित क्या सुनने लगा तो तब उस वह मंत्र वीतुक् का विषय लगता था। वह यह देखकर भी चकित था कि सभी इंसानों के समान वह भी सीमाबद्ध है। गांव में रहकर भी उस छाट से मंदिर का रहस्य नहीं जान पाया। यगादा यदा नदा वहा जाती और लौट जाती। उसने भी कभी अपने पति का मंदिर पर जाकर दब-दशा करने के लिए प्रेरित नहीं किया। नदाचिन्त उम मय भी उम मंदिर के प्रति अधिक अनुराग नहीं था। केवल रस्म पूजा करती था। किसान की बेटों किमान के घर में आई, ता मुबहू से शाम तक उम घर-बाहर के घंघा में फस रहना पड़ता। मंदिर पर जान की फुरमत नहीं

थी ।

उन दिना मन्दिर पर एक साधु आया हुआ था । रामदास दखता कि उस साधु के पास छोट-बड़े गभी जात थे । स्त्रिया भी आती । कुछ ऐसे भक्त भी उस साधु के पास गए थे कि जा साधु के पास जाकर बठत और उगवे लिए सुलफे की चिलम तैयार करत । सबप्रथम साधु ही उस चिलम को पीता । उम चिलम मे ली निकालता । बहुत सा धुआ मुह म बाहर फेककर वह चिलम अपन भक्त की ओर बढा देता । चूकि रामदास भी गाँव का एक विशिष्ट व्यक्ति था, इसलिए आगतुन उम देगते और मन म कहत अउ इम चौधरी को भी भगवाा की शरण मे आना पडा है । एक न एक दिन भगवान क दरवार म गभा का आना पडता है । किंतु चौधरी की निगाह म अब भी वह नाटर था । निमका कोड दध्य मुहावना था, कोई रहस्यात्मक । वहाँ भगवान ह या नहीं रगी औगुबयना मे वह उस स्थान पर जाकर बठता और सब देखता था ।

एक दिन जब चौधरी रामदास वहा बैठा था ता तभी उगवा पडीमी नारायण वहा आया । वह नित्य नहीं जाता था, कभी नहीं आता था । चौधरी के पास जाकर वह बोला—‘यह साधु पट्टा हुआ फकीर है । आभा तुम भी । दो बात करो । साधु गुन हा, तो अपनी धूनी का राख देकर ही पागल कर दगा ।’

चौधरी रामदास का ध्यान उम समय वही और था । जब पडीमी नारायण ने अपनी भावना व्यक्त की ता व सहाज भाव स मुस्कराया—‘उसके नारायण, यह साधु तो सुलफाबाज है । खो तो जाया स आग निकलती है । शरीर पर भभूत मिलता है, तो लगता ह जम कोई प्रेत हा । सिर की जटाएँ भी इतनी बढा ली है कि धरती छूती ह । यह नग घडग साधु जो जरा सी लगाटी लगाय बठा ह और अग्नि स प्रज्वलित हुई धूनी पर बैठा सुलफे का धुआ उडाता है, मुझे ता यह सब ममझ नहीं आया । यह त्यागी साधु नहीं, बोझ है ममाज के ऊपर । वह मक्ता हू, कोड है, इमानियत का ।

चौधरी की बात सुनत ही, नारायण का मितली-सी आई । वह रुक्ष भी बना । फिर भी वह अपने मन की बात रोक् गया । वह साधु का

भक्त था। पिछली राध्या म वह पास व कम्बे म गया और वहाँ म साधु महायज्ञ के लिए सुलफा खरीदकर लाया था। वह उमकी जेब म था। जब उसने चौधरी की बात सुनी, तो बोला—‘यह तो अपनी-अपनी भावना है चौधरी। मानो तो इमान भगवान है, नहीं तो माटी है। इन साधुआ का त्याग तो देखो, मर्दों, गर्मों और बरसात नगे बदन पर उतार दते है। किसी से कुछ मांगत नहीं भक्त स्वय ही भेंट कर जात हैं।

चौधरी बोला— मैं तो कभी इस मन्दिर पर आया नहीं। लेकिन अब आकर देखता हू तो लगता है तुम्हार इस भगवान के दरवार म किमी वस्तु का अभाव नहीं रात तरे पडोस की कल्लू की मां बता रही थी गाव की औरतें इस साधु के लिए हलुवा, पूरी और खीर घर स तयाग करके लाती है किसी दिन इस साधु न कहा होगा कि पकौडी देर से नहीं खाइ। तो कोई औरत घर से पकौडी बनाकर न जाई’

नरायण एक प्रौढ व्यक्ति था। चौधरी की बात सुनकर बोला— ‘इन साधुआ के लिए किसी वस्तु का अभाव नहीं। य भगवान के भक्त हू। दूरदर्शी है। अभी बात करो उम साधु मे, ता पता चलगा कि यह कितना पहुँचा हुआ प्रकार है। वह रामगुलाम है ना उसकी औरत के बच्चा नहीं होता था। बहुत इलाज कराया सब बंकार गया। लेकिन इस साधु की एक चुटकी न बेचारी का अभाव दूर कर दिया

चौधरी रामदास मुस्कराया— तूने भा भभूत की चुटकी ली। कुछ अपना उद्धार किया ?

नरायण व मन का स्वत्व ताग उठा— मैं कुछ मांगत नहीं आता चौधरी। य साधु भगवान के दूत हू, इनकी सेवा करना ही अपना धर्म मानता हू जाआ चलो तुम भी। साधु महाराज न मिला। बोलत कम है आख ब द किए रहत हैं।

चौधरी हँसा— जरे मूख। सुलफे का नशा बालन नहीं दता। आखें देखो तो सुलफा व जलन अँगार जैसा। तू जा। म भा कभी ना बढूगा।

नरायण साधु के पास चला गया। चौधरी रामदास मन्दिर पर दर

न बैठा था, उठकर जगल की आर चल दिया। उन दिना फमल कट ग्ही थी, इगललण रेतो की तरफ जाना भी जरुरी था। मलघू की मत्यु क वाद यशोदा न खेता की दग्ध रउ वा पाम स्वय करना जारम्भ क दिया था। रामदात आशवन हा चना था। पुत्र के वलछोह वा दुघ भी उमके पौरुप और पुरपत्न को छान बैठा था।

जब चौधरी अपन एक खत क डौने पर जापर गढा हुआ, ता तभी, उमके मड म वात आई वडा उलयदार मामला ह इस धम भक्ता वा, इन माधुगा वा, इन मंदिरों वा। मैं ता उम रहस्य को समझ नही पाता

एक माधु आया था इस मन्त्र पर। गाव की कई औरता को भ्रष्ट कर गया। एक लडकी वा भगातर ल गया। बाद मे सुना, वह सुलफा ता पीता ही था शराब वा भी सेवन करता था। गाव के कुछ व्यक्तिया ने चाहा भी कि पुलिस म उसकी रिपोट क दी जाय, परंतु धम के ठेकेदारों न किराी को भी थान की आर नही जाने दिया और तो और, वह जवान लडका राधेश्याम इसलिए कुछ लोगो ने मारा कि वह इन माधुओं का गाव म आना अशुभ मानता था। वह तो यह कहो, लोगो ने उने बचा दिया, नही तो जान से मार दिया जाता बोलो, यह भक्ति ह क्या? यह भी नशा है? जाति विरादरी और धम ये ऐसे जहरील घूट ह कि पट म जाते ही, आदमी अपनी वास्तविकता वा बैठता है। दूसर शब्दों म कहा जाय तो वह आदमी भी नही रहता, पशु बन जाता है

खेता स लौटकर जब काफी दिन चडे चौधरी रामदास घर लौटा तो तब तक सुखिया बहू स्कूल चली गयी थी। यशोदा घर क आगन म बठी गहू साफ कर रही थी। पास जात ही रामदास बोला—'उह बुढापा तो आ गया लेकिन घर का यह घ-घा नही छूटा। वह तो स्कूल गयी होगी।'

यशोदा बोली—मेरे भाग्य म आराम नही। जो थोडा-बहुत था वह कुछ भगवान न छीन लिया, कुछ तुमने। भला कोई सुने तो क्या कहे, बहूरानी तो स्कूल जाने लगी और सास घर वा घ घा सहेजने बठ गयी। बोलो—'मैं आराम कस करू? कोई समय है मेर लिए, खटिया पर बठन का।'

उस समय चौधरी रामदाम क मन मे घर की बात नही थी । वह देर से मन्दिर की और साधु की बान म जटका था । तभी बात बदलकर बोला—‘तुम मन्दिर पर गयी थी न, उस साधु से मिली थी ?’

यशोदा न दो-टूक जवाब दिया—‘भिर पास इतना नमय नही जो लुगाडो मे मिलन जाऊ । वह साधु क्या है मुझे तो कोइ लुगाडा लगता है । जि ह बेटा लेना हो या धन पाना हो वह जाये उस साधु के पास । अब मुझे क्या लना दना मेरा तो हाथी सरीखा बेटा चता गया । हाथ खाली ह, मरा । तोता उड गया ।’ यशोदा का स्वर भारी हो गया । गला रुध गया ।

चौधरी चुप रहा । बाहर की जोर जाता हुआ गेला— पाच बीघे का खेत अब फटाई पर जा गया ह । जरा मी आग चिलम म रख दो । वह जात जात रककर वाला—‘मैं मी आजकल मन्दिर पर जा बैठता हू । देवता की पूजा तो नही कर पाता परंतु वहा बठन की मन करता ह । लगता है, स्वत ही, मन से हप या फौब्वारा छूटता है । मैं तो यह भी नही जानता कि भगवान ह मी या नही, लेकिन जम मद-औरत मन्दिर पर श्रद्धा के साथ जात ह, तो लगता है कुछ न कुछ ह जरूर । उस देव-प्रतिमा म भगवान है । वह हसता है, मुस्कराता ह ।

यशोदा बोली - ‘तुम माना या न मानो भगवान तो है । यह आस माना, यह धरती, य जीव-जंतु उसी न ता बनाय ह । दया हमार दरवाजे पर गुलमाहर का पड, किस तरह फल फूल रहा है । फूरी स भरा ह । अभी कुछ दिन पूव उस पर एक भी हरा पत्ता नही था । अब फिर बहार आई है उस पड पर । यह है, कुदरत का खेल । बच्चा पट म पनपता ह । पैदा होता है । बडा बनता है । यह सब भगवान का ही तो दन है । उसकी लीला है ।

चौधरी न साम भरी ‘शायद ।

यशोदा न स्वर परार लिया—‘शायद नही, मत्य ।’ यह वाली— तुम मन्दिर पर जाया करो । मलधू गया है, तो तुम्हारा ममर ताठ गया । बुढाप का आराम छित गया । मन्दिर पर जाकर शांति मिलगी ।

लेकिन चौधरी बाला नही, बाहर चारपाई पर जा बठा । वह तन

भी भ्रमित विस्मित था। जब यशोदा चिलम भरकर लाई, तो बलात् चौधरी ने कहा—‘सुनो यशोदा ! किसी ने ठीक कहा है, बदाबस्था मे घर से दूर हो जाना चाहिए। भगवत भजन करना चाहिए। मन शान्त रहता है।’

यशोदा विकृत हो उठी—‘तुमस कुठ नही होगा। तुम अब भी माया के चक्कर म पडे हो। अब तो तुम रात मे भी सोते से उठ बैठत हो। जाने क्या मन म लिय हो।’

चौधरी बाला—मुझे प्राय मलपू स्वप्न म दिखाई देता है। अभी एक दिन वह स्वप्न मे आया और बोला—‘जोरावर स कुठ न कहता। वह डाकू ता है, नेकिन दिल का साफ है।’ उसने यशोदा की ओर देखकर कहा—‘भता यह भी कोई सपना था। एक दिन पूव कहा था कि जोरावर और सुखिया मन म स्नेह रखत ह, एक दूसरे के लिए। तो, वही बात मलपू न सपना मे कह दी। उसन बता दिया जोरावर अपनी भाभी से प्यार करता है ता करन दो। यह पाप नही। दोना एक दूसरे को ममयत है। ठगी मे नही आयेंगे।’

यशोदा न सास भरी—‘भगदान जाने, क्या होगा ? मुझे तो तुम्हारी इम बहू पर भरोसा नही। अब तो जोरावर भी दिखाई नही देता। रात आई थी उसकी मा, रो रही थी। वह रही थी, मेरा मन कहता है, जब जोरावर जीवित नही। पहिले आता रहता था। लेकिन अब इतन दिन मे उसकी कोई खबर नही।’

रामदाम बोला—अच्छा है, वह मर जाय। इस धरती का थोडा पाप तो कटगा। कलक मिटगा।’

अजी, तुम एसा मत कहो। जाग्रित है ता वह हमारा अश ! हम दानो के सदा पर छूता है।’ वह बोली—‘दख तो, लडका कमा गोरा-चिट्टा है। अब तो फूटार कटरा हो रहा ह। मुवेश कस्वे से दूध का डिब्बा लाता है, बहू उसी का दूध पिताती ह।

‘करो, भैम का दूध तो है ?’

‘अजी यह भागी है। बच्चे का पेट बरदास्त नही करता।’ वह घर म लौट गयी।’

उगी ममय गुटिया स्तूम से सोर आयी । वर गार मे मिय बर
 वो रामदाग की आर बढ़ापर बोली— अब बटा शता हो गया है ।
 अम्मा म हिस है ।

रामदाग ने बच्चा गोद म मे लिया । वह उग दुतराना टूआ बा रा
 क्या वे ! अब शतान का गया है, तू ! मैं मम गया, निमका बेटा है
 तू ! और उगन फिर बच्चे का गुटिया का आर बढ़ा दिया ।

10

सुखनन्दी मे सुटिया' बनवर भी चौधरी रामदाग की पुत्र-बधु
 अपने आप म सन्तुष्ट थी । उसने शरीर का यौवन अभी 'यो-का-या' बना
 था । जबानी वे उम चढाव का बन सवर पर रखना मानो सुखिमा ने
 सीखा नहीं था । सिर के बाल बिखरे रहत । रंग गोरा था, गालो पर

लाली थी, लेकिन, उसे कभी साबुन स साफ बरना उसने नहीं सीखा । कभी-कभी यशोदा उसे टोक देती और कहती, 'तू दो लोटे पानी से स्नान कर लेती है, कभी साबुन भी नहीं लगाती । मैं तुझे बालो म तल लगाते भी नहीं देखती । भगवान का दिया यह शरीर है, इसे सभालकर रखना जरूरी है । यह उसकी देन है ।'

तब सुखिया सहज भाव से मुस्कराती और हस दती । जब वह हसती तो लगता, श्वेत मोती बखेगी हो । एक दिन जब सास-बहू म यही बात चली तो तभी, सुखिया बोली—'अम्मा, इम औरतजात के लिये कभी चैन नहीं । साबुन स शरीर धाय, तो मौत, न धाय तो भी । मैं बाला म तल नहीं लगाती, तब तो औरते कहने से चूकती नहीं कि मैं किसी योगिनी का रूप बना रखा है । यदि तेल लगाऊ, तो तब, यही कहा जायगा, मैं किसी मरदुवे को अपने जाल म फासन चला ह । किसान की बेटो बनकर भी शहरातिथो का मात करती ह ।

ससुराल के घर म वह पहिला दिन था, जब कि सुखिया न अपन मन का रोप और दद सहसा व्यक्त किया था । सुखिया इतना भी समझती है और वह पाती है, यशोदा ने उसी दिन समझा था । वह बलात् सहम गयी । कुछ विस्मय म उस बहू को दखकर बोली—'बहू, कहने वालो के हाथ पकडे जा सकते हैं, मुह नहीं पकडा जाता ।

लेकिन सुखिया ने फिर तीर मारा—अम्मा, बाहर का जहरीला साप पकडा जा सकता है, घर मे मारना आसान नहीं । उसके घूमन के बहुत रास्त हैं ।

यशोदा नहम गयी । वह कुण्ठा से मर उठी । उसे लगा, कि इस सीधी-सादी बहू के मन मे कोई बात ह । जैसे कोई बाला माप फन उठाये बैठा है । वह फूलकार कर रहा है । किसी को गट लेना चाहता है । और वहा उस घर मे सिवा उसके कोई दूसरी औरत तो थी नहीं, जो उसके विरुद्ध थे, विपवमन करती हो । कदाचित इसी सम्भावना स भरकर वह बोली—'किसी ने कुछ कहा क्या ? तूने कुछ सुना ?'

सुखिया बोली—'औरतो के स्कूल मे बीस-पच्चीस औरतें आती हैं । सबके अलग-अलग घर हैं । सबकी बातें और घातें भी अलग-अलग ।

मुझसे कहा जाता है, मैं जकेली बगल हूँ, इस जवानी को क्या मारती हूँ। जब तरी गाम तुझ पर भरामा नहीं करती तो भला दूगरी औरतें मुझ पर बम गिशाभ कर लेंगी किंतु इसी तरह मती-साधरी बनकर जीवन बिता दगी हा यह बच्चा भी जाने तू कहां से उठा लार्द ? पता नहीं, कि डोम चमार का है हा, जागकल पाप बढ गया है ना, आय दिन भेन पलिहान म बच्चे पडे मिलन ह कोई क्वारी का, कोई विधवा का और तू बताती नहीं यह बच्चा कस मिला, कहा म मिला

यशोदा न सास भरी—बहू, यह तो गाव है, शहर नहीं। यहाँ ता पल पल की खबर एक दूमर का मिलती है। घर से घर मिले हैं, खेत स खेत

मुष्टिया और खुली—‘लेकिन इस घर की बात तो हवा की तरह उडती है। तुम एक की दस बातें बना आती हो, गाव की औरता म !’ आखिर उमने गाला दाग दिया।

हाय, राम ! आग पडे, तुम पर ! तो तू समझती है, मैं यह सब बातें फैलाती हूँ। यशोदा लाल हो उठी—‘कलमुही, तूने मेरा बेटा तो खा लिया, अब इस घर को भी खत्म कर दना चाहती है। सब कहा है किसी न राड, साड सयासी इनसे बचे तो ऐसे काशी

उनी समय चौधरी रामदास घर मे आया। वह पत्नी को देखते ही बोला—‘क्या चीखती है, भाग्यवान ! तरा तो बेटा गया, इस बहू का तो पति चला गया औरत का सुहाग गया, सब कुछ गया तरा ता एक बेटा और है, इस बहू का क्या है !

लेकिन यशोदा चीख उठी—‘मैं इस कुल बलकिनी की सब बातें जानती हूँ ! तुम ममझत होग कि मैं अधी हूँ जोरावर क्यों आता है, इतना पर मैं अपनी अवल से साचती हूँ।

इतना मुनना था कि चौधरी रुष्ट हो उठा। वह लाठी धरती पर रखकर बोला—‘राक्षसी, चुप नहीं रहोगी। सिर ताड दूगा। भरा बेटा तो गया ही तुझे भी समाप्त कर दूगा।

तब भी यशोदा पीछे नहीं हटी। वह तडप उठी—‘ल मार मेरे सिर म लाठी। तू भी मन की निकाल ल। यह डायन सबको खा जायेगी।

घर की आवाज बाहर पहुँच रही थी। दो-तीन औरतें आ गयीं।
एक दा आदमी भी।

उसी समय सुखिया ने अपना मुँह ऊपर उठाया और बहनाद्र बनो अपनी आँखें चौधरी के मुँह पर टिकाकर कहा—‘पिताजी, मुझे मुक्त कर दो, मैं डायन और चुडल हूँ। तुम्हारा एक बेटा खा बैठी तो दूसरा भी खा सकती हूँ। मुझे बाप के घर पहुँचा दो। मुँह में कह दो, मैं स्वयं चली जाऊँगी। यहाँ दम घुट रहा है। साँस रुक रहा है। बड़ी घुटन है, इस घर में। सवेदनशीलता अपनी सीमा लाघ बैठी है।’

किंतु चौधरी रामदास गरज उठा, चुप रहो! चुप रहो! इस घर का बरवाद होना से बचा लो, बहू! यह यशोदा दा लडको की माँ तो बनी, लेकिन मौत की तरफ जाती-जाती भी औरत के मन की मलिनता, तुच्छता नहीं छोड़ पायी। यह विपैली नागन है। कालुष भरा है, इसके मन में।

पति के स्वर के अनुरूप यशोदा भी तडक उठी ‘हा, हा, मैं कमीनी हूँ। डायन हूँ।’

रामदास ने लाठी उठा ली। वह जैसे ही यशोदा के सिर पर मारनी चाही, कि तभी, सुखिया बीच में आ गयी। लाठी का वार उस पर पड़ा। गनीमत यह थी कि वह सिर के मध्य में न लगकर एक तरफ लगी। खून निकल आया। सुखिया धडाम से पछाड़ खा गयी। घर के आँगन में खून फल गया।

एक औरत चीख पड़ी ‘हाय राम! यह तूने क्या किया, चौधरी?’
दूसरा व्यक्ति बोला—‘घोड़े की बला तबेले के सिर हा, मारने चला था, घरवाली को, बीच में आ गयी बहू! चलो, झगडा शांत हो गया। अब चौधरन अपनी भूल मान लगी।’

यशोदा ने उस व्यक्ति की ओर घूरा ‘दीनू तू बात नहीं समझता!’
दीनू बाला—‘चाची मैं सब समझता हूँ। इस बहू का इतना कसूर है कि अभी जवान है। देखत-सुनने में भली लगती है। अपने घर की चर्चा तू चलाती है कोई और नहीं।’

उस समय चौधरी रामदास अपराधी के समान खड़ा था। एक औरत

न रेशम का कपड़ा जलाया था और बहू की कनपटी के पास हुए जलम भर दिया। उसे चारपाई पर लिटा दिया।

एक अर्थ औरत बोली—‘दूध में हल्दी डाल कर दो। जब पढ़े रहने दो। रघुवीर डाक्टर अभी गांव में होगा, उसे बुलाकर दिया दो।’

चौधरी रामदास ने पास पड़े युवक की आर दवा। उसका बहा—
‘जरा देखो तो, डाक्टर को। घर पर हो, तो बुला ला।’

युवक चला गया। उसी समय एक औरत यशोदा का सम्य करके बोली—‘चौधरन, जमाना खराब है। सोच-समझकर बोला कर। घर की बात बाहर मत निकाल। अब यह बहू इस घर की आबरू है। यह चाहे तो पलभर में सब कुछ मिटा दे। लडका गया, तो तरा भाग्य फूट गया। चलो, भगवान की यही कृपा है, दूसरा और है तरा लडका। अब उसे सहेज। भगवान से प्रार्थना कर। बहू का छाती से लगा।’

चौधरी तब भी चुप था। यद्यपि उसके मन में बात थी कि यह यशोदा भगवान की पूजा क्या करेगी घर की आबरू पर कीचड़ उछालेगी। परन्तु वह बोला नहीं, बाहर चला गया। चबूतरे पर पड़ी चारपाई पर जा बैठा, उसकी इच्छा थी कि कोई चिलम में आग रख दे और वह तम्बाखू पीले। परन्तु उस समय तो घर में कोहराम उठा था। कोई चौधरी को अपराधी मानता था कोई चौधरन को। डाक्टर आया, उसने सिर के खून की सफाई करके दो-तीन टीके लगाये और खाने का दवा दी। तभी एक व्यक्ति ने रामदास को बताया— आज तुम पर और इस घर पर बहुत बुरी गीरह आई थी बहू मर जाती और तुम दोनों पति-पत्नी गिरफ्तार कर लिये जाते। जानते ता हो। औरत की बुद्धि दूर तक नहीं देखती। तुम तो मद-मानुष हो मोचकर चलत। औरत पर लाठी क्या उठायी किसी मद पर उठाते। बूढ़े हो गये बदले नहीं।

आश्चर्य चौधरी रामदास तब भी चुप था। वह सिर झुकाए बठा था।

घर में से एक औरत बाहर आइ और बोली— ऐसा हाता है, औरत का दिल, अब चौधरन धैठी रो रही है। कहती है, ‘सब मेरा अपराध था। उसने कहा— औरत की जात ही ऐसी होती है। अपना हो या

पराया, बुराई करने से नहीं चूकती। यह चौधरन भी अपनी बहू का नहीं चम्कती। अब जगराम के अहाते में औरतें कीतन करने लगी हैं। सौ-पचास औरतें आ जाती हैं। तो बहा भी राम-नाम के साथ, एक-दूसरे पर कीचड़ उछाली जाती है। उसकी बेटी ऐसे रहती है, और उसकी बहू ऐसे बस यही पुराण वहाँ बाचा जाता है। पहले मंदिर पर कीर्तन होता था, तो वहा दस आदमी आ बैठते थे। इशारेबाजी करते थे। तभी नो वहाँ से हटाकर दूसरी जगह रखा गया। समाज बैसम हो गया है, शांति से औरत को नहीं रहने देता।'

पास खड़ा एक व्यक्ति बोला—'चाची, उस कीतन में भी आशिवाना गजलें और कब्यालियाँ होती हैं। जवान लडकिया फिलमी कलाकारों की तरह नाचती हैं।'

'हां, हां, यह भी चल पडा है, भया ! जगराम चौधरी की बैठक में टी० वी० लग गया है। उसके परदे पर औरतें जिस प्रकार का नगा नाच नाचती हैं, वह सब गांव की जवान लडकियाँ और बहूए देखती हैं।'

'अरे, खाक पडे उस टी० वी० पर। जितना व्यभिचार और भ्रष्टाचार बाकी रह गया है, वह टी० वी० फैला देगा। सरकार रुपया कमाती है और समाज की बहू-बेटियों का चरित्र जाता है। भला क्या मिलता है उस टी० वी० से?'

तब कहा गया—'चाची, टी० वी० कुछ तो देता है। ज्ञानवद्ध न करता है। मनोरजन देता है।'

'यू कहना, टी० वी० बनाने वाले कारखान रुपया कमाते हैं और सरकार विनापनों से रुपया प्राप्त करती है। मैं भी कई बार देख आई हूँ, उस टी० वी० के प्रोग्रामों को। अब तो गांव में दूसरे भी लगाना चाहते हैं। लडकी के विवाह में टी० वी० जरूर दिया जायेगा। लडका भी अपने विवाह में टी० वी० प्राप्त करेगा।'

'अब हवा का रुख दूसरा है, चाची ! पहली बात गयी।

सब एक एक कर उस घर से पलायन कर गये। तभी पडोस के एक लडके को देखकर चौधरी बोला—'जा, बिलम भर ला। जहा दूध गरम होता है, वही पर तम्बाखू होगा।'

लडका चिलम लेकर चला गया। तभी चौधरी ने सास भरी—'इम कहत है, हानी बलवान है। अब क्या हो जाय, पता नही? मैं भी मूछ बन गया, लाठी चला बठा सचमुच

चौधरी का सिर चकरा गया। आधा म अधेरा छा गया। सामने गुलमाहर और नीम का पड घडा था। दानो बहार पर थे। गुल मोहर पर लाल लाल धुगनुगा फूल खिले थे और नीम पर ताजी निंबा लिया, उस पर भी फूल आ रहे थे। किसी समय डाक्टर ने चौधरी का बताया था कि नीम के फूल की सब्जी बनाकर खाय जा सकते हैं। स्वास्थ्यप्रद रहते हैं। खून साफ करत हैं।

लडका चिलम भर भर ल आया। जब चौधरी हुक्का पीन लगा, ता पडोस की रामप्यारी बुडिया बाहर आई और बोली—'अर तू महा बठा हुक्का बजाता है। घर मे जा। सास बहू को समझा। अब दोनो रो रहा है। सास अपना अपराध मान रही ह। लेकिन बहू कहनी है, न, अम्मा! दोष मेरा था। मुझे सब-कुछ नही कहना था।'

चौधरी रामदास ने तम्बाखू का धुआ मुह से बाहर निकाला और बोला—'चाची, उन दानो को अकेली छोड दो। जहरीला पानो आधा के रास्ते निकल जायेगा। दोनो स्वय शांत हो जायेंगी। मलखू की मा बहू पर कीचड उछालती है। मैंने भी एक-दो जगह सुना है। और मैं कहता हू, बहू देवी है। ऐसी औरत हजारो मे नही मिलेगी। इसकी होती तो अब तक भाग जाती। मेरे मुह पर कालिस का पाता फेर जाती। लेकिन यह सुखिया बहू तो गऊ है, सती-साध्वी है। इतने दिन मैं कई किताबें पड चुकी है। सिलाई मे कई तरह के कपडे तैयार कर देती है। कुछ दिन मैं कताई भी सीख लेगी।'

'हा, हा, तेरी बहू भली है। बस समझ ल तर घर मे देवी आरन बंठी है।

चाची अब तो घर का सभी काम बहू करती है। भंस का चारा-दाना भी देखती ह। भुबहू को नौकर खेत पर जाता है तो उसे रोटा बनाकर देती है। फिर दो वक्त घर का खाना बनाती है। मलखू की मा ता अब कुछ नही कर पाती। मलखू क्या मरा वह भी मर गयी। बमर

टूट गयी ।'

'हा, भया ! वह मा है । उसका जवान बेटा गया है ।

रामदास बोला—'लेकिन वह का तो सोहाग छिना ह । उसका जीवन-साथी गया ह । उसका ता जम-भर का राना ह ।'

बूढ़ा ने मास भरी जीर उस मकान के चबूतर स उतर गयी ।

जब रामदास अकेला रह गया, तो वह देखन लगा भैम खडी है । उसकी घोर म चारा नही । एक घण्टे बाद ही उसस दूध लिया जायेगा तभी नौकर चारा मिर पर रखे जगल से लौटा । चौधरी ने उसकी ओर देखकर कहा—'सरजू भम क आग चारा डाल ॐ । भूखी खडी है । और उमस पूछा—'कटाई कब शुरू होगी, गहू की ?'

सरजू बोला—'अभी तो एक सप्ताह चलगा । अभी पकन म देर ह ।'

चौधरी बोला—'अब तरा काम बढ गया ह । रात को एक दो चक्कर लगा आया कर । गाव म मौ दुश्मन है, सौ दोस्त । मुना है, किसी न रामभजन का खेत काट लिया ।'

'हा चौधरी ! खेत भी काटा और मशीन स अनाज भी निकान लिया ।

'यह पता नही चला कि किसका काम था ?'

'अजी, पता तो सब चल गया । और वीन होता, छाटा भाइ था । वह पिछल माल ही अलग हुआ था । शराबी है, जुआरी है । अलग होकर नी बडे भाई को सताता है ।'

'बडा भाई भला है । भजनान दी है । जब दखो तब मंदिर पर बठा मिलता ह ।'

'हा, चौधरी । वह तो देवता है । अब भी छोट भाई के बच्चे उसी क पास खाते हैं, सोत ह । सरजू बोला—'छोटे भाई की बहू लडाका है । फिर भी बडा भाई इतना उदार है कि पिछले दिनो छोटा भाई पुलिस न जब गिरफ्तार लिया, तो बडा भाई धाने म गया था । छुडा लाया । अपराध इतना था कि जुआ खेलत पकडा गया । सुनता हू, बडे भाई के पैर पकडकर कसम खा बठा है, न जुआ खेलेगा, न शराब पीयेगा ।

अर, सरजू ! यह शराब डायन है । जिसने मुह लगी, उन चौपट कर बैठी । जुआ भी ऐसा ही रोग है । तपदिक है ।'

'सरजू बोला नहीं । वह भ्रम को चारा डालत आम बढ गया । जब वह घर मे से बाहर आया, तो बोला—'बहुरानी खाने के लिय बुलाता है । जाओ घर मे ।

चौधरी रामदास बाला नहीं । वह लाठी पकडकर घर के चबूतर से नीचे उतर गया । सरजू से कह दिया, अभी भूख नहीं । यदि घर पर जाकर बैठूंगा । सुनता हू, कोई व्यक्ति आया है । अच्छी कया कहता है । आज दिमाग खराब हो गया, वहा जाकर थोडी शांति पाऊंगा । वह लाठी हाथ म पकडे आम बढ गया ।

11

उन दिन सुखिया क मन मे बार-बार यह बात उठती थी कि जारावर बहुत दिना मे नहीं आया । कई मास हो गये थे कि बच्चा सुखिया की देख रेख म पल रहा था । मानो वह उसी का बच्चा था । आशचय की बात यह थी कि न तो सुखिया न और ना ही उसकी सास यशोदा न जोरावर की मा स इस बात का उल्लेख किया कि जो बच्चा उनके घर आ गया है वह जारावर से प्राप्त हुआ है । किन्तु जोरावर ने बच्चा देन के साथ जा पत्र सुखिया को दिया था, वह मानो जारावर के चरित्र का तो वर्णन करता ही था, बच्चे के निकास का इतिहास भी बताता था । सुखिया क नाम लिखे पत्र म जारावर न व्यक्त किया था यह बच्चा मेरा है । मेरी प्रेमिका का है । हम दोनो न मन्दिर मे बैठकर विवाह कर लिया था । किन्तु इस बच्चे क प्रसव मे वह मालती नहीं रही । डाक्टरा न उसे वचान की श्रेयता की परन्तु वह रुकी नहीं, चली गयी ।

जोरावर ने बताया, मुझे चिन्ता है कि इस बच्चे का पोषण कस ना ? तुम्हार अतिरिक्त मेरा कोई विश्वासी नहीं । पुलिस का घेरा भी

अब सख्त हा गया ह। मालती चाहती थी कि मैं डाकू का पशा छोड़ दू। अब मुझे उसकी स्मृति जीवित रखनी है, तो इस पथ से दूर हो जाऊंगा। या तो साधु बनूंगा या पुलिस के समक्ष आत्म समर्पण कर दगा।

पत्र म, जारावर न यह लिखना भी अनुपयुक्त नहीं समझा कि वह मुखिया का मन से आदर करता आया है। उसे अपना जीवन अर्पित कर सकता है। जब मुखिया ने पत्र का वह अंश पढ़ा, तो वह अनायास ही अपने मन के भावनालोक में खो गयी। उस समय वह इस बात को नहीं छुपा सकी कि वह स्वतः ही, जोरावर का अपना हित मान बैठी थी। भले ही, उम अपना प्रेमी न माना हो, किंतु अपने प्राणों की अनुभूति, ममता अनायास ही जारावर का अर्पित कर चुकी थी। मुखिया को पता था कि जोरावर डाकू तो बना, परन्तु सस्कारगत मन में पैदा हुई पुनीत भावना वह नहीं त्याग सका था। वह अनेक रातों में छुपकर मुखिया के पास आया और दर तक उसके पास बैठकर एक वच्चे के समान कहने में मग्न बना था कि परिस्थिति ने मुझे डाकू और क्रूर बनाया, लेकिन, मर मानस का स्वरूप नहीं बदला। मैं तुम्हारे पास आकर एक अजीब प्रकार की अनुभूति प्राप्त करता हूँ, भाभी! मलखू भैया ता गया, परन्तु तुम्हारे पास बैठकर भी, लगता है मैं जीवन की पुनीत और शुभ भावना का स्वरूप देख पाता हूँ। उससे मैं नया जीवन प्राप्त करता हूँ। तभी, मुखिया कहती, तो बताओ न, मैं क्या कर तुम्हारे लिये? मैं पास बैठी हूँ। अर्पित हूँ।

किन्तु जोरावर का एक ही मत था, तुम सदा पूजनीय रहना, मैं यही चाहता हूँ। मैं तुम्हें पथ भ्रष्ट नहीं करूँगा, भाभी! जब-जब मैं परेशान बनता हूँ, तभी तब, तुम्हारे पास आ जाता हूँ। यहाँ बैठकर मैं नसर्गिक सुख पाता हूँ। लगता है, तब ही मन्त्रों की मन्त्रों की सम्पदा मुझे मिल चुकी है। मैं उसका उपभोग करूँगा, तुम्हारे स्वामी बना हूँ।

तब आल्हादित होकर मुखिया ने कहा कि दिवाहित हो उठनी है। इस सम्पदा के स्वामी बन जाओ। तुम इसे पा सकते हो। किन्तु उम पत्र में जोरावर ने अपनी मानसिक स्थिति के

दिया था—'भाभी मालती नाम की जिस तरुणी स मैंन रात के मनाद
 मे देवता के समक्ष उसे वरण वरन की प्रतिज्ञा की थी, यह सब तभी
 हुआ कि जब मैं तुम्हारी दुनिया म ग्यो गया था। मुझे लगा, मुझे एक
 औरत चाहिए। एसा न हुआ, तो मैं अपनी कमजोरी तुम्हारे समक्ष
 पटक दूंगा। मैं तुम्हें अपना महारा मानकर पकड़ लूंगा। और उसन
 ब्रताया, मालती से मेरा दर म मम्बध था। उसने पास बैठकर भां
 शांति पाता था। वह बड़ी सरल थी, सहृदय थी। मैंन उम ब्रता दिया
 था कि मैं डाकू हूँ वर और दुर्दांत हूँ। किंतु वह इतना मुनकर भी,
 मदा मुस्कराती और कहती मैं तुम्हें नूर इन्सान नहीं रहने दूगी।
 तुम्हारे हृदय की ममता किरोद किरोद कर बाहर निकालूगी। म उसम
 गोता मारूगी। उसन ही मुझे विवश किया था कि मैं विवाह कर लूँ।
 अपने नाम की छाप उस मालती के हृदय पर लगा हूँ। मैं तेजी के साथ
 तुम्हारे रूप रस म डूब रहा था। नभी-नभी ता मुझे एसा लगता, जब
 जब तुम्हारे पाम जाकर बैठता, तो मेरा अस्तित्व नगण्य बनता जा रहा
 था। इस पत्र मे मैं तुम्हें इतना और ब्रता दूँ कि मालती गरीब घर की
 बेटी थी। मैंने उसे ठगा नहीं। उसे प्यार किया था, छला नहीं। मैं तो
 उसका कहीं अयत्र विवाह करा देने की बात मोच रहा था। परंतु जब
 तुम्हारे समीप पहुंचा मैं वामना का दाम बनन को उद्यत था ता तभी
 उस मालती को मैंने अपनी पत्नी बना लिया था। किंतु खेद है।
 भगवान ने उसे इस घरती पर नहीं रहन दिया। अपन पाम बुला लिया।
 मैंने उस मालती स तुम्हारा उल्लेख अनक बार किया था। जब प्रसव
 काल म उसकी अवस्था बिगड़ी, तो तब उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा
 था, मैं समझ गई, तुम उस सुखिया को भी प्यार करत हो। मेरा यह
 बच्चा उसी को सौंप दना। कह दना, वह विधवा बन गई है तो क्या
 एक बच्चे की माँ तो कहलायेगी। इस बच्चे को सहज लेगी। उमी
 मालती का कथन मैं पूरा कर रहा हूँ यह बच्चा तुम्हें सौंप रहा हूँ अज
 जाग मेरी क्या स्थिति हागी, नहीं जानता। केवल इतना बह मक्ता हूँ
 जब मैं डाकू का जघन्य कृत्य नहीं करूँगा। अपन हथियार गंगा म फेंक
 दूंगा। साधिया को विदा कर दूंगा।

सुखिया न वह पत्र अनक वाग पढा और अपन बक्स के अंदर सुरक्षित रूप सं रख दिया। माना वह एक कीमती दस्तावेज था। उस देखकर सुखिया का आनंद प्राप्त होता था। जिस दिन स्वमुर की लाठी म उसके सिर म चोट लगी, तो उम रात म भी सुखिया ने वह पत्र बक्स स निवालकर पढा था। अब यह स्पष्ट था कि वह जारावर के लिए प्रतीक्षारत थी। उमसे कुछ कहना चाहती थी, कुछ सुनना चाहती थी। उसकी कठिनाई यह थी कि जोरावर के विषय मे वह किसी स भी कुछ नहीं कह पाती थी। न मास से, न जोरावर की मा म। किन्तु एक दिन सहसा पढौस की एक लडकी सुखिया क पाम जाई और चुपक से वाली, 'भाभी, आज शाम के शुरुपुटे म तुम शेरू के कुए पर पहुच जाना। वहा जारावर आएगा। तुमसे मिलगा।

अकस्मात उस बात को सुन, सुखिया न उम यौवनमयी लडकी की ओर देखा। मानो उसे ममझना चाहा। जोरावर न उसक द्वारा ही क्या सदशा भेजा, यह भ्रमक विचार भी उमके मस्तिष्क म बिजली की तरह कौंध गया। किन्तु लडकी ने स्वय ही सफाई दी—'भाभी, भया जारावर हमारी बहुत मदद कर चुका है। तुम्ह तो शायद पता न हा मेरा पिता कई मास से बिस्तर पर पडा है। जोरावर न बहुत सहायता दी, पिता के इलाज मे। तभी तो अब वह खेत मे काम कर पाता है। जोरावर हमार घर कई कई दिन आकर ठहरता था। पुलिस को हम पर सदह नहीं हा सकता था। आज भी जोरावर खेत पर मिला था। उसने पिता से कह दिया था, मैं शेरू के कुए पर मलखू की बहू की प्रतीक्षा करू गा।

सहमी हुई सुखिया बोली—'वह यहाँ क्यों नहीं आया ?'

लडकी ने कहा—'पुलिस निगाह रखती है उसके मकान पर।'

'लेकिन मा ता जानती है कि जारावर मारा गया।'

'हा, भाभी। यह सब पुलिम ने प्रचारित किया था। जोरावर का शकल मे मिलता एक मरा हुआ आदमी पुलिस ने जोरावर के नाम मे प्रचारित किया था। जोरावर पर एक लाख का इनाम था, वह थानेदार ने और सिपाहियो ने मिलकर बाट लिया।' लडकी लौट गई।

उस समय सुखिया के मानस मे एक अजीब प्रकार की हलचल आरभ

हो गई थी। जिस कुएँ पर जोरावर न उसे मिलन के लिए बुलाया था। वह गाव के बाहर था। घर से जात समय वह अपनी सास से क्या वहेगी, यह भी उमकी समझ में नहीं आ रहा था। बाहर चबूतरे पर स्वसुर बैठता है, वह भी रोकेगा। कहगा, अघेरे म कहाँ जा रही है। किन्तु इस आपदा से भले ही वह छुटकारा पा ले, लेकिन गाँव के अन्य लोग तो उसे देखेंगे। कोई औरत मिली, तो वह भी टाकेगी। पुलिस को इस बात का पता है कि जोरावर जब अपने घर आता है, तो मेरे पास भी आता है।

मन की इसी ऊहापाह में सुखिया न दिन बिता दिया। जब सध्या चा झुरपुटा आया, तो उसन बच्चे को कंधे से लगाया। यशोदा से कहा—'अम्मा, मैं एव के घर जा रही हूँ। जल्दी लौट आऊँगी। वह चल पड़ी। सयोग से उस समय चौधरी रामदास चबूतर पर नहीं था, मंदिर गया था। निर्बाध रूप से सुखिया शेरू के कुएँ पर पहुँच गई। वहाँ पेड़ अधिक थे। दो-तीन ईँच के खेत भी थे। जब सुखिया उस स्थान पर पहुँची, तो देखा, वहाँ कोई नहीं था। चारा ओर सनाटा था। माय माय करती हुवा चल रही थी। उस अवस्था में सुखिया बरबस ही सहम उठी। जब वह लौट चलने को उद्यत हुई, तो तभी, हाथ में चिमटा और बड़ी हुई दाढ़ी वाला व्यक्ति उसके समझ आ घडा हुआ। वह आत ही बोला— इस जोरावर का नमस्ते स्वीकार करो, भाभी! और वह मुस्कराता हुआ अधिक समीप आ गया।

सुखिया सहम भाव में बोली—'तो तुम हा, जारावर! दाढ़ी-सी बढ़ा ली। सिर क वाल भी बढ़ा लिए। हाथ में चिमटा ले लिया। उसन अनक निरपराध मारे ह। उनका धन सूटा है। तकिन तुम अपने, जो नहीं मार सकत। पुलिस के हाथो
 वन्चा। दस सा वहाँ है। तुम मुझे
 अब पला-फूलता यह तुम्हारा बच्चा
 वनन की सीध दो। जब कुछ सम्भले
 करतूतें बटा देना। इस
 शैवान बना। ५'

सहमा, जोरावर न अपना चिमटा एक कुए की मुडेल पर बजाया और कहा—'भाभी अपने मन का यह गुस्सा मत निकालो। ऐसा तो तुमने बहुत बार कहा। अब मैं डाकू नहीं। खूनी नहीं। लुटेरा नहीं।'

तुरन्त ही सुखिया बोली—'तुम जब भी सब कुछ हा। दबता नहीं हो। नर राक्षस भले ही न हा, लेकिन अच्छे इन्सान भी नहीं हो। तुमने मेरा मन तो अपनी ओर खींचा ही, उस बेचारी गरीब मा-बाप की बेटी मालती को भी अनमय मार दिया। भला उसन क्या देखा इस दुनिया मे ? जैसी आइ वैसी गई।'

लम्बी सास भरकर जोरावर बोला—'हाँ, भाभी ! म कसूरवार हू। गुनहगार हू। मालती की मौत का कारण मैं हू।'

तदनु रूप, सुखिया ने भी सास भरी और छोड दी। तभी वह बोली—'अब क्या है, तुम्हारे मन मे। क्या स-यासी बनोग ? ऐसे ही रहोग। भला इस भेष म कब तक छुप रहोगे, यह तो तुम्हारा आत्मघात मरीखा कृत्य है। छल है, धोखा है।'

जोरावर बोला—'भाभी, मैं आत्महीन हू, पुलिस के हाथो म नहीं जाना चाहता हू।'

'और तुम्ह पता है, तुम पर सरकार ने जो इनाम घोषित किया था, वह पुलिस खा बैठी है। तुम्ह मरा हुआ घोषित कर दिया गया।'

'हा, भाभी ! मुझे उसका पता है।' उसने बताया कल ही मैं उस यानेदार से मिला था। विश्वास करो मेरी बात पर, उसन मेरे पैर पकड लिए। गिडगिडापर बोला—'अभी भर हुए बने रहो। समूचा थाना गिरफ्त मे आ जाएगा। नवका मजा होगी।'

'और तुम यह पाप कब तक छुपाये रहोगे ?'

'अधिक देर तक नहीं।' जोरावर बोला—'यह स्पष्ट है, आत्म समर्पण करन के बाद भी मैं जेल से बाहर नहीं रह सकूंगा। लम्बी सजा पाऊंगा। यह कह सो, फाँगी के तहत से बच जाऊंगा।'

सुखिया श्रुत्य हो उठी—'तुम बुजदिल हो। तुम आदमी मार मकने हो, मर नहीं सकते।'

जोरावर कुछ और आग बढ आया। उसन अपने हाथे से पिस्तौल

निकाल लिया और उसे सुखिया के आगे करता हुआ बोला—'इमम बर्द गोलिया है। मुझ पर चला सकती हो।'

जी हाँ! ममझ ली न कोमल और कमजोर औरत ह। यह पिस्तौल नहीं चला सकती। और तुम्हें इसी पर नाज है। यह लोहे का टुकड़ा माथी बना है। इसी के प्रल पर तुमने लोग का लूटा ह। उनका खून किया ह।' उसने तिरस्कार के साथ जोरावर की ओर देखा—'जब तुम डाकू थे तो मैं तुम्हें अपना प्यार दान को उल्टा थी। क्योंकि तुम जो कुछ थे। समाज के सामने थे। तुम अपनी करतूत छुपा नहीं मकान थे। परंतु अब तुम डाकू ता रहे नहीं, इमान भी नहीं रहे। इम माधु वेप म अपन का धोखा दते हो समाज को दत हो। सबका बता दिया कि तुम जीवित नहीं, मर चुके हो। जबकि तुम निर्जीव नहीं। किसी के प्राणघातक नहीं, तो किसी के पोषक भी नहीं। कसी दुसह अवस्था है। यह तुम्हारी! अब तुम मद नहीं नामद हा। कायर हो।

एकएक जोरावर क्षुब्ध हो उठा—'भाभी!'

भाभी ने कहा—'देखा, देवरजी! मैंने भी तुम्हें प्यार किया था। एक दिन! और मैं आज भी भ्रम में नहीं, तुम भी मेरी जोर खिच आए थे। मेरे रूप और यौवन पर मरन लग थे। आश्चर्य है कि मैंने तुम्हारे मन को उस अवस्था को अशुभ नहीं माना। तुमने जो रपया दिया, वह भी मैंने सह्य स्वीकारा था। हालांकि मैं उसे पाप मानती थी। इसान व खून म भी रपया समझती थी। लेकिन तुम्हारी वह भावना, अनुभूति और समपण की याचना मेरी दृष्टि म छोटी नहीं थी। तुम बहुत तो मैं तुम्हारे साथ उस घर से भाग आती। हो सकता है मैं भी डाकू बन जाती। डाकू की प्रेयसि कहलाती। कंधे-स कंधा मिलाकर चलती और बड़ब चलाती। लेकिन अब देखती हूँ, तुम डर गए। अपन काल धारनामो मे स्वय इतन प्रभावित हुए कि काप गए। महम गए। उन रात स भटक गए। मद थे, तो पुलिस म लडकर मार जान या आत्ममपण कर देन। उसन साम म क्या रहा जीवित रहोगे। महमे रहोगे। अपन-आ का यह नर्ण बता मनाग कि तुम हा जा

भेडिया ।

उस ससय जारावर का सिर झुका था । उसके सिर की जटाएँ धरती से लग गई थी । दाढी भी काफी बढी थी । सुखिया बोली— 'तो अपने लाल को । इसे चूम लो । प्यार कर लो । इसीलिए तो तुम आए हा । इस वच्चे की ममता तुम्हे घीच लाई हैं । जाने यहाँ से आए हा तुम । और उसने हाथ मे लिए झोले मे कुछ लड्डू निकाले और नमकीन मठरिया । वह सब जोरावर की ओर बढ़ाकर बोली— 'मैं समझती ता थी कि तुम कभी न कभी जरूर आआगे । सयोग की बात है कि बल ही यह लड्डू और मटठी बनाए थे । तब भी मरे मन मे तुम्हारा ध्यान जाया था ।

जारावर बोला— 'हाँ, भूछ भी लगी है । आज सुबह से कुछ नही खाया । मुझे दूर मे आना पडा है । जरूरी काम था । यह किताब रखो बैंक की है । इसमे मेरा रुपया जमा है । वह सब तुम्हारे नाम है । इस लडके व नाम है । उस मालती का एक भाई था, राहुल । इसका नाम भी राहुल रखा हा '

सुखिया ने पूछा 'कितना रुपया है ?'

'दो लाख ।

'ह राम ! इतना रुपया था तुम्हारे पास !'

हा, भाभी ! रुपया ता और भी था । वह जहाँ-तहाँ द दिया । त्रा लडकी तुम्हार पास गई, उसके बाप को भी दम हजार रुपया निया था । कई लडकिया के विवाह मे रुपया लगा दिया । एक बार मलखू भैया न मुझसे कहा था कि गरीब विद्यार्थियों की भी मदद करना जरूरी है । इसके नाम से एक ट्रस्ट है, उसके माध्यम से विद्यार्थियों की महायता की जाती है । आज बताता हू तुम्हें, मलखू भैया के मरने के बाद मैंने सर्राव पो । शाशत नही खाया । मैं बानार की किमी जीरत के पास नही रह पाँच वष जितन डाके जाने, उनका मंत्र करया धर्मिय सलए प्रदान गया । पाँच लाख रुपया मैं प्राप्त किया था, उसमे से एक लाख १ अपन कार व्यय नही किया । भैया मलखू की मौत ने मुझे ३ प्रदान किया था ।

सुखिया मौन थी। गम्भीर भी। उम लगा कि अनुपम व्यक्ति उमके ममक्ष खडा था। वह अपन कृत्य का वणन कर रहा था। तभी सुखिया ने एक लडडू जाग बढाया और कहा— 'तो भाभी के हाथ म 'त्रा ला।'

जोरावर ने लडडू खा लिया। तभी बोला— 'मैं अब दूर जा रहा हूँ भाभी। आया ता मिलूंगा। हिमालय की गोद मे अनेक डाकू छूपे हैं। वे सभी सयासी हैं। त्यागी हैं। अब वे मानवता के अनुरागी हैं, अपन आपम नहीं। मैं उसी टोली म जाकर मिलूंगा। उनसे पथ निर्देश करूंगा। और उसन नीचे चुककर सुखिया के पर छू लिए और कहा— 'जो कुछ तुमने कहा, वह सब मेरे प्राणो म उतर गया। वह तुम्ही का कहना था किसी और को नहीं। अब जाऊंगा। नमस्त।'

सुखिया स्तब्ध थी। उसके देखते-देखते जोरावर अंधेरे पथ पर अदृश्य हो गया था। उमे लगा एक पुनीत मानव उमसे दूर हा गया था।

12

रघुनाथपुर गाव म जहा चार आदमी एक स्थान पर बठ कर हुक्का पीते होत, अय चर्चाआ के साथ प्राय चौधरी रामदास का नाम भी आ जाता। लोगो का मत था कि रामदास अपने बडे पुत्र की मृत्यु से जितना दुखी हुआ, तो उसी का यह परिणाम है कि अब न तो खेत-क्यारी की बात सोचता है, न घर गृहस्थी की। जब दखा, तब मन्दिर पर बठ दिखायो देता है धर्म के नाम पर कभी एक पसा भी खच नहीं करता था, परन्तु अब यदि ऐसा कोई आयोजन हो तो खुशी से चढा देता है लडके की बह को इतनी ढील दे दी कि वह अय धरो की बहुजो क समान घूषट नहीं करती। सास की तरह वह भी आजाद है।

एक बार जब गाव की चौपाल पर इस प्रकार की बात चली, तो तभी उन प्रौढ व्यक्तियो के पास बैठे एक युवक ने कहा— 'मलखू की बह

अब गाव की औरतो का पथ-प्रदर्शन करती है। पिछले दिनों जब गाव में श्राय समाज का जलसा हुआ, तो वह मुह खोले उपदेशको और साधु-मन्यासिया को भोजन करा रही थी। गाव की जवान लडकिया उममे निर्देश पा रही थी।

तब एक अय व्यक्ति ने कहा—‘समुर तो मंदिर पर जाता ह। सनातन धर्मी बना है। एक घर म दो खेमे लगे है। बहू पूरव की तरफ जाती है, तो समुर पश्चिम की तरफ। एक मूर्ति पूजा का खण्डन करती है और दूसरा उस पूजा का ममथन।’

—तो कहा गया—वाधा यह तो एक बच्ची के दो फलक ह। गलत सस्कारो को दोना काटत है।’

एक वृद्ध व्यक्ति बोला—‘मेरी रामदास चौधरी म रात हुई थी। वह भी सनातन धर्मिया की बहुत-सी बातें नहीं मानता, साधु मन्यासिया का महत्व नहीं देता। पिछले दिनों जिस साधु ने मंदिर पर आकर धूनी जमायी थी, रामदास ने उमका विरोध किया था। उसन गाव के बहुत से युवको को सुलफा पीना सिखा दिया था। सुनन म तो यह भी जाया कि वह शराब भी पीता था।’

उमी समय एक युवक बाला—‘मैं एक सूचना दता हू, मलखू की बहू अब अपना स्कूल खोलेगी। सुनने मे आया है कि उसने कपडा मीन की मशीनें मगा ली हैं। कुछ किताबें भी आ गयी हैं। उमन घर घर जाकर अपने मिशन का प्रचार किया है। चौधरी रामदास के मकान मे एक बडा कमरा ह, उसमे क्लासें लगेंगी। अगले महीन श्री गणेश हागा। कोई सरकारी अफसर उद्घाटन करेगा। सरकार स भी कुछ रुपया मितेगा।’

तब कहा गया—‘और यह गाव का स्कूल? क्या बन्द हो जायगा? गाव के लोग ने ही तो वह खोला था।’

‘अजी, उसमे अब दरार पड चली है। जिहोंने पहल खुशी स चंदा दिया अब बन्द कर बैठे हैं। बेचारी अध्यापिका को कई मास का वेतन नहीं मिला। पता चला है, स्कूल का अध्यापक चौधरी विजयसिंह अपनी पुत्र-वधू का अध्यापन का काय देना चाहता है। उसने मन म सालच खा

गया है। मुना है, अध्यापिका स्कूल छोड़ गयी। वह गाव म पलायन कर गयी।'

ता यह कहा, चौधरी रामदास न एव तीर स दो शिकार मार हैं। वह भी काम स लग जायगी और चार पैसे की आमदनी का रास्ता भी खुल जायगा बड़ा चालाक है, यह आदमी।' एक अघेड आयु के आत्मा न यह ताना मारा।

तभी दूसरा बोला—'मौजीराम, तुमन इस रामदाम को अभी समझा नहीं। बड़ा फित्तती है, यह आदमी। जिदगी भर इसी तरह के तल से खेलता रहा।

किंतु उस व्यक्ति स कहा गया—वाप की चालाकी के कारण ही लडका चला गया। आप देखना, बहू भी हाथ न निकल जायेगी। पर्दा तो उसका उठ हा गया, अब मन का परदा बाकी है। वह भी किसी दिन उठ जायगा। गाव के जवान छाकरे रामदास की बहू को घूर घूर कर देखत है। वह कबूतरी किसी दिन भी किसी दूसरे की छतरी पर जाकर बैठ जायगी।

एक वद्व न सांस भरी—'यह तो होगा ही। मने ता आय ममाज के जलसे मे उम बहू का रग-ढग दख लिया था। अब किसी के लिए लाज शम तो उमकी आखो म रही नहीं। जब देखो, खिलखिला कर हसती है, घट फट बातें करती है।

तभी वहा पर बैठा एक युवक तुनक उठा—'तुम भी कसी बातें करत हो, बाबा। क्या किमी जवान औरत का हसना या किसी गर से बात करना भी पाप ह। चौधरी रामदास के लडके की बहू गाव की शोभा हैं। उसन सिलाई का काम भी सीख लिया और पढन लिखन म भी अपन को पीछे नहीं रहन दिया। भला ऐसी कितनी औरतें ह इस गाव मे?' उसा समय एक व्यक्ति बाला—'जच्छा जनादन, तू ही बतता, आने वाल कल म यदि उस बहू ने काई गलत कदम उठा दिया, तो क्या गाव के मुह पर कालिख नहीं लगेगी? चौधरी रामदास भी तब क्या जीवित रह पायगा? भैया, गाव के रीति रिवाज के साथ चलना ही ठीक है।

जनादन शहर के स्कूल में अध्यापक था। बी० ए० तक पढा था।

गाँव में उस शास्त्रीजी कहकर पुकारा जाता था। बात सुनकर वह सहज भाव से मुस्कराया—‘दुनिया बहुत आगे बढ़ गयी है बाबा ! अब पीछे की ओर मत दखा। अभी बढ़ो। जिसके कदम रुकेगे, वह एक व्यक्ति हो, या एक जाति, पिछड़ जायगा। आगे बढ़ती हुई भीड़ में दब जायेगा। मलखू की वही न अच्छा रास्ता चुना है। अब तो वह इतना आगे बढ़ आई कि पिछले दिनों औरतो की सभा में भाषण दे बठी थी। मैं तो वहाँ था नहीं, लेकिन मेरी माँ बताती थी दवी स्वरूपा है, वह चौधरी के लडके की बहू। बोलती है, ताँ लगता है, जैसे पासी वाली रानी हो। मुह पर तेज है। बाणी में जोश।’

उसी समय एक बुजुग वहाँ आया। प्रस्तुत वार्ता का न समझकर भी, उसने पूछा—‘कौंगी चर्चा चल रही है ? क्या कोई नयी बात ?’

एक न वहाँ—‘अर ताऊ ! वह है न, चचा रामदास के लडके की बहू अब वह इस गाँव की नेता बान चली है। सुधार की बागडोर सम्भाल रही है।’

उस व्यक्ति ने अपना मफेद डाढ़ी पर हाथ फेरा और कहा—‘कोई-न कोई नेता तो होगा ही चाहिए। सुनता हूँ, अब तो रामदास भी महाराज बनन चला है सी चूहे घाय, विलैया चली हज्ज को।’

तभी ठहारा गूजा—‘वाह, ताऊ ! तुमने तो भाते ही बात का तोड़ कर दिया। ऐमे देखी जाती हैं, किसी इंसान की तस्वीर।’

ताऊ अपनी प्रशस्ति सुनते ही, फूलकर कुप्पा हो गया। तुरन्त बोला—‘भैया मैं तो और कुछ जानता नहीं, किसी दिन चौधरी रामदास मूड पबटकर रोयगा। किसी न कहा है न, बीआ चला हस की चाल चाप न मारी मेढकी, बेटा तीरन्दाज रामदास अपनी और पुरखो की बात भूल गया।’

किंतु जनादन को उस बुजुग की बात पसंद नहीं आई। वह तुरन्त बोला—‘ताऊ, इस चौपाल पर यदि इसी तरह की बातें चलेंगी, तो एक दिन यहाँ विग्रह का अखाड़ा बन जायगा। लोग अपनी जाँच का शहतीर तो देखते नहीं, दूसरे की जाँच का तिनका देखते हैं यह अच्छा नहीं। कोई यदि ठाकर घाकर गिरता है, तो उसे सहारा दो, न कि उसकी धमक

पर लात जमा दो।’

‘तुम शास्त्री हो, भैया ! पड़े लिसे हो । हम गवार भला क्या जाने ।’
बुद्ध चौधरी बोला—‘लेकिन यह समय लो, लीब म हटकर चलना भी
बच्छा नहीं ।’

जनादन बोला— यह बात सब पर लागू नहीं । जिनर पास बुद्धि ह ।
शक्ति है, वे अपना रास्ता अलग भी बना लेत ह । ऐम अनक सुधारवान
इस देश मे हुए हैं—स्वामी दयानन्द ही को ला । गांधी को ला । इस
दश मे प्रत्येक प्रात म ऐसे महापुरुष पैदा हुए है । उहाने देश को
नया जीवन प्रदान किया ह । यह वैभवपूण विश्व इन्सान का बुद्धि का
चमत्कार ह । इन्सान ही देवता है भगवान है ।’ उसन कहा—‘हमारे
गाव म टी० वी० लगे हैं । रडियो चलते ह । ट्रक्टर काम करत हैं ।
ट्यूबेल पानी दने ह । बेती म कितनी बडि हो गयी है । यह सब इन्सान
की देन है ।’

एक व्यक्ति बाला— यह शास्त्री बच्चा को पढाता है, आदमिया को
भी पढाता है । इससे लही जीना जा सकता ।’

बुद्ध ताऊ बाला—‘हा-हा, बहुत कुछ पढा है, इस शास्त्री ने । जमाना
भी देखा है । हमारा क्या है, गवई गाव मे पडे हैं । काला अक्षर भस
बराबर समझते हैं ।’ और उसन अपनी तरफ आगे हुक्के के नैचे को अपने
मुह से लगा लिया । वह तम्बाखू का धुआ छोडकर जनादन की ओर
देखता हुआ बोला—‘भैया, अब मे अस्ती बष का हा चला हू । देखता हू,
गाँव म जो रीति रिवाज पहने थे, वे अब नहीं रहे । शराब पीकर नौजवान
गलिहारा म घूमते है । जब पनघट पर जवान लडकिया पानी भरने जानी
हैं, तो मनचले छाकरे भी बहा जाकर भीटिया बजाते है भद्रे गान गाने
हैं । यह भला क्यों है ? इस रफ्तार को काई रोक पाता है ।’

जनादन बोला— यह गाव के समाज की सबसे बडी कमजोरी का
सबूत है । वे आबारा सडके आसमान स उतर कर नहीं आय, हमारे-
तुम्हार घरा के ह । परतु जब मा वाप का उन पर काई प्रभाव नहीं, तो
भना गाव का कोई आदमी किस तरह इस गद्द प्रवाह का रोक पायगा ।
साप के निल म कोई हाथ नहीं देगा । हालत यह है, न तुम मेरी मन

रहो, न मैं तुम्हारी बहू । जैसा चलता है, उसे चलने दो ।' उसने कहा—
'लभी तक तो ये शराबी और मजनू धरो के बाहर अवाजा कशी करते हैं,
वह दिन दूर नहीं कि जब घरा में घुसकर उन लडकियों को पकड़कर
ले जायेंगे ।

एक व्यक्ति जो दर से चुप बैठा था, अपन स्वर पर जोर दकर
बोला—'यह आज भी हो रहा है । भले धरो की लडकिया खेतो पर
नहीं जाती । किसान को अपना हल छाड़कर, या दूसरा काम कर
रोटी खाने घर आना पड़ता है । दम घुट रहा है, इस गाव के वातावरण
में ।'

जनादन बोला—'यह गदगी भल कहे जाने वाले धरो से आरम्भ
होती है । वे लडके यह शैतानी करत है । चोर चोर मौसेरे भाई भला,
बौन उह रोके । उनके मा-बाप पुलिस पर प्रभाव रखते हैं, गाव पर
रखत हैं । उनके पास पसा है, चार साथी है ।'

बात गम्भीर हो चली थी । सबके मुह पर उदामी थी । जनादन की
बात सुनकर एक-दूसरे का मुह दखन लगे थे ।

उसी समय सहसा सब चौंक उठे । एक आदमी वहा आया और अपन
स्वर पर जोर देकर बोला—'तुम सब यहाँ हो । जाकर देखो चौधरी
रामदास के घर पर गाव झूट्टा है । पुलिस आयी है ।'

जनादन ने पूछा—'क्या हुआ ।'

'हुआ क्या, अब तो गाव-का गाव कमीना बन चला है । वह है ना,
लगबीरसिंह का नवावजादा, शराब पीये रामदास के घर पहुच गया ।
यहा चौधरी नहीं । उसकी घरवाली भी नहीं थी । मलखू की बहू थी ।
जाते ही उसका हाथ पकडा और बोला—'तू चल मेरे साथ, तुझे अपनी
बनाउगा ।'

'अच्छा । इतना कह बैठा, वह नालायक ।'

'अजी, इतना कह पाता, तो तब भी धर थी । जब मलखू की बहू
ने उसके मुह पर तमाचा मारा, तो वह छुरा मार बैठा । जब वह भागा,
तो बहू न पकड लिया । घर की दहलीज म सुखिया ने उसे पटक दिया
था । घून म लथपथ थी । मगर उसकी छाती पर चढ गैठी ।

छीन लिया और बाघ म भग्न कहा—'बास, पाए दू, तरा पट !
निवाल दू तरा प्राण—

वाह ! राह ! परबम जनादन बोल उठा—'वह है, मदाना
ओरत ?

उमस कहा गया— गश्न लगाती पुलिस उधर आ निकली। वह
लटका पकड़ लिया गया। उसी समय रामदाम भी आ गया। उसका
घरवाली भी जगल म लौट आई।'

सब लाग उठ चन। उधर ही बढ गय। जाकर दधा, तो सचमुच,
गाव का गात्र वहा एवत्र था। तब वह घर म जागन म चाक म पडा
थी। उसकी बाह म चाकू लगा था। काफी घून निकला। तब तन
टाक्टर पट्टी बाध चुका था। दरोगा सुधिया का बयास रहा था।
उसी संधव मे सुधिया न बताया, जब हमलावर घर म प्रविष्ट हुआ, तो
उसका दूमरा साथी बाहर गडा था। जब वह भागा, ता मैन देख निया
था।

लकिन दरोगा के ममान, वहा पर एकत्र गाव म अय स्त्री-पुरुष
भी चकित थे कि वह युवक सुधिया के रूप-यौवन पर भन ही, आसक्त
हुआ हो, परंतु उसका आश्रमण एक अय उद्देश्य के लिय था, वह यक्ति
गाव के उस जमींदार ने भेजा था कि जिसने गाव म सबप्रयम नारा
समाज के लिय सिलाइ कडाई का स्कूल खोला था। उमी क बडे पुत्र ने
प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए सुधिया को निरस्त्र कर दना चाहा था।
वस्तुत वह स्वय सुधिया क रूप का लालची था। एक-ग बार स्वय
सुधिया से वह भी चुका था। परंतु सुधिया न सदा ही उसक प्रति
उपेक्षा दिखायी। उम तिरस्कृत भी किया उसी समय सुधिया का पना
चल गया था कि वह नारी रूप का लाम्बी इतना कामाध बना कि स्कूल
म आने वाली एसी अनेक नवयौवना थी कि जिह पाना वह अपना
मानवाय धम मानता था। सुधिया न दरोगा को यह भा बताया कि
स्कूल अध्यापिका न केवल त्याग-पत्र देकर उस स्कूल से पधक हुई, अपितु
उसने सुधिया को यह सलाह दी थी, वह उस स्कूल म न आये। या
तो अपना स्कूल खोल लो या घर बठ जाय।

उम समय चौधरी रामदास की मन स्थिति अत्यन्त दुःख थी। वह वद ता था, परन्तु उसकी नसों में अर्भा खून था। वह चाहता था कि अभी उस जमींदार के घर जाय और उसके पुत्र को पकड़कर लाठी से धुन दे। जब गाव के व्यक्ति लौट पड़े, वह आन्नामक भी पुलिस द्वारा हथकड़ी डालकर थाने ले जाया गया, तो तभी एक व्यक्ति न रामदास के पास आकर कहा—‘यह लडका तो व्यथ में मारा गया, अपराध किसका था, मजा कौन पायेगा?’

रामदास तडप उठा—‘म ऐसा नहीं सोचता। यह लडका भी बचपाया है। शराब के माथ पैसा भी इस गाव में खूब चरता है।

वह व्यक्ति बोला,—‘चौधरी, मरा कहा मानो ता जपनी बहू को रोक दा, स्कूल न चलाय। इस वाण्ड की जड म तुम्हारी बहू का स्कूल खोलना है।’

तीखे स्वर में रामदास बोला—‘कल को यह भी कहा जायगा कि मैं गाव छोड़ दू। इस तरह पाप और व्यभिचार के समक्ष अपना सिर मुका दू। रामदास मर जायेगा, लेकिन यह सब नहीं करेगा। मैं कमीना नहीं, कायर नहीं।

वह व्यक्ति चला गया। किन्तु जब रात आई, घरा में दीये जले, तो तभी एक अन्य व्यक्ति वहा आया और पाँच हजार रुपये की गड्डी रामदास के सामन रख कर बोला—‘चौधरी न दिया है, आज का मामला खत्म करने के लिए। उसने मुन ता लिया होगा, उसका लडका भी पुलिस न गिरफ्तार कर लिया।

रामदास ने नोटों की गड्डी उठायी और पास की नाली में फेंककर कहा—‘मैं धूकता हू, इन रुपये पर। तुम एक लायक आदमी की पैरवी करने आये हो मनाहर। जाकर कह दो, रामदास अभी जीवित है ठण्डी लाश नहीं।’

उसी समय यशोदा घर में बाहर निबल आई। वह जागन्तुक की ओर देखकर बोली—‘तुम्हें नहीं आना चाहिए था, मनाहर। यह आग मुलगाई गई है। अब इसे जलने दो। समझने दो।’

मनोहर बाला—‘चाची, य दो यार तबाह हो जायेंगे।’

चाची ने कहा—'जब मेरे पास क्या है ? लडका गया । दूसरा ह, वह अभी बच्चा है ।

किंतु रामदास तमक उठा—'हमारे पास सब कुछ है । इस घर पर भगवान का हाथ है । अब मैं यही समझ पाया हू । आज मेरी बहू न वहादुरी का काम किया । मैं उसे हृदय से शाबासी देता हू ।

मनोहर बोला—'समूचे गाव में तुम्हारी बहू की प्रगसा हो रही है । उस वीरागना बताया जा रहा है ।'

यशादा बोली—'पहल तो मैं भी इस स्कूल के खिलाफ थी । परंतु अब स्कूल जरूर चलेगा । गांव में गुण्डे पैदा हो गए हैं, उनका भी सामना किया जायगा ।

मनाहर बोला—'चाची, तुम्हारी बहू अदालत में जाकर बयान दे, यह भी शुभ नहीं होगा ।' वह उठा और नाली के पानी में पड़े नोटों का उठा लाया ।

चौधरी रामदास ने कहा—'क्या शुभ है और क्या अशुभ यह मुझे समझना है । मेरी बहू ने उस बदमाश को छोड़ दिया, यह भी अच्छा नहीं किया । उसका पेट फाड़ देना था ।

मनाहर कटके भाव से मुस्कराया—'चौधरी, घर बरबाद हो जाता । बहू ने बुद्धिमानी का काम किया । उस लडके का शम हागी, तो स्वयं मर जायगा । गाव में मुझ नहीं दिखायगा ।' वह उस स्थान से चल दिया ।

तभी यशादा बोली—'क्या माचा था क्या हो गया । अग्र मुझे मुक्केश की चिंता है । वह अकेला है, नदी तट से आता है । नाव भाँवर में आती है ।

चौधरी रामदास ने कहा—'यशादा, अभी अब तो मैं समझा हूँ कि भगवान है । वह सबका रक्षक है और पालक है । तुम चिंता मत करो । वह नीली छतरी वाला सब देखता है ।'

तब यशादा बाला नहीं, घर में चली गयी ।

इमानदारी से नहीं कर सकत। मर मोटा, गंगा...
 पहला घानेदार कई लाख रुपये इस इलाके...
 यह कहो, ऊंचे अफमरा तब उमकी शिफायत...
 उसका तबादला किया गया था। डाके और चोरी...
 थी।

उम समय यशोदा चुपचाप बठी थी। जब पहल...
 चली, तो उसने कहा—'वह दरोगा रिश्वतघोर ता या ही, म्यभिषा...
 भी था। इलाके की बहुत-सी बह बेटियां उगन था म यस्तागी थी।' वह
 बोली—'किमी न ठीक कहा ह, वही छिनटे और घड़ी धार्या म माथ
 जब रक्षक ही भक्षण बनें तब कग भला ठागा। पुलिस नमा आदर हा, ता
 चागी-डाके भी बढ हो सकत है।'

'ताई, पुलिस का हिस्सा तो था म पट्टन जाता है। एक मयती ने
 कहा—'वह जगना ह न, पक्का चोर है रात म आयाज पट्टा है, उसा
 घर पर। वह थाने म जाता है और दरोगा की जय म खाय डाल आता
 है। अब वह दूर जाकर चारी करता है। दया नहीं, उमकी मय मय
 ठाठ से रहती है? पिछन दिना उसके पखोस म बियाह था। मैं भी उधर
 गयी। देखकर चकित रह गयी, जगना भी बह गोरे वा तगड़ी पट्टा
 औरता मे नाच रही थी। माथ पर पडा झूमर भी अपनी बहार द रहा
 था।'

एक औरत हुस पडी—'हराम का माल था—उराव पास। पति
 चोरी करके लाय और बस अपन का न मजाये, भरा यह रस त होगा।'

एक एक कर औरतें उठ चली। सबसे पीछे जब एक बच्चा उठकर
 चलने लगी, ता वह मुखिया की ओर देखकर बोली—'बहू, जो बात
 चल पडी है, वह बढे नहीं। दो लडें तो दूसर तमाशा देपत हैं। मुझे
 ॥ है, विक्रम म धा लडका गलती तो कर बैठ, लकिन अब पछता रहा
 उसने दिल पर गम बैठ गया हे। और-तो-और, बहू भी बाप क माथ
 गयी। उस घर म पसा है ना तो उसका दुखपयोग भी हाता है।

गलत आदमी है। बाप का पाप बेटा भोग रहा है। रात भी
 घर आया था। शामद गराब पीकर और खाना

अपराधा वन है। पाप और पुण्य चुल्हू म लेकर पी
 एक प्रौढा बोली—'हाँ, बहू' तुम्हारी बात
 कानून भी तो अपना काम करेगा। अपराधी का
 दूसरी बोली—'बुछ और भी सुना। मैं
 हवालात में जमानत पर आता गया, परंतु घर से
 यह सुना जाता है कि उसकी बहू अपने बाप के
 गयी इस घर में सडाद है, बंदबू है। यहाँ रहते
 स्वयं आया और बेटी को ले गया। वह तो
 कहता था, मुझे पता नहीं था कि चौधरी
 है। वह तो अपनी बेटी का अग्र विवाह
 था।'

'अजी, ऐसा भी कही होता है। बार बार
 औरत बाजार नहीं जा एक को छोड़ दूसरे के

'हा हा, यह बात तो है। परंतु उस
 मडरा रह ह। विधम का लडका धान में
 ऊट जब तक पहाड के नीचे से नहीं
 म जब पुलिस ने उसे हवालात में बन्द किया,
 पीटा भी गया। थानेदार ने बहुत भद्दी बातें
 पर गम बैठ गया। भय से प्रस्त बना कभर
 कभी चारपाई से उठकर चल देता है।
 है। उसकी छाती में भय और लज्जा का

राम ! राम ! इसे कहते हैं मार
 आती है ता वह आधी के झोवे की तरह
 सुना है चौधरी ने दरोगा को मोटी रकम।
 नहीं ली गयी। उसने चौधरी पर दया की,

'हा जी ! इसमें क्या झूठ है। लडका
 दरोगा है। सुना है बड़ा सख्त है। इस इलाके में
 दयान के लिए इस नये दरोगा का यहाँ भेजा गया

'अजी वह नया खान गुण्डागर्दी हटाएगा !'

इमानदारी से नहीं कर सकत। मय मोटा पिसा-कमाल है मूला नहीं पया
 पहला धानेदार कई लाख रुपये इस इलाके दो कमर गुरा-भू। वह तो
 यह कहो, ऊंचे अफसरो तक उमकी शिफायत पहुँच रही थी। इसलिए
 उसका तबादला किया गया था। डाके जीरे चोरी-सो गसम म-उरी
 थी।

उम समय यशोदा चुपचाप बठी थी। जय पहल तीनदार-की बान
 चली, तो उमने कहा—'वह दरोगा रिश्वतखोर ता था ही, व्यभिचारी
 भी था। इलाके की बहुत-सी बहू बेटिया उसने धान म बुलायी थी। उह
 वाली—'किसी न ठीक कहा ह वही छिनडे और वही डोली के माथ
 जब रक्षक ही भक्षक बनें तब कम भला हागा। पुलिस इमानदार हो ता
 चागी-डाके भी बद हो सकत है।

'ताई पुलिस का हिस्सा तो धान म पटुच जाता ह। एक युवती न
 रहा—'वह जगना ह न, पक्का चोर है रात म जावाज पटती ह, उसक
 घर पर। वह धाने म जाता है और दरोगा की जेब म रुपये डाल आता
 है। अब वह दूर जाकर चोरी करता है। देखा नहीं, उमकी बहू कम
 ठाठ से रहती ह? पिछन दिना उसके पढीम म विवाह था। मैं भी उधर
 गयी। देखकर चकित रह गयी, जगना की वह सोने की तगडी पहन
 औरता म नाच रही थी। माथ पर पडा झूमर भी अपनी बहार द रहा
 था।

एक औरत हस पडी—'हराम का माल था—उमक पास। पति
 चोरी करके लाय और बस अपन का न सजाये, भला यह कैस न होगा।

एक एक कर औरतें उठ चली। सबसे पीछे जब एक बूढ़ा उठकर
 चलने लगी, ता वह मुखिया की ओर देखकर बोली—'वह, जो बात
 चल पडी है, वह बडे नहीं। दो लडें, तो दूसर तमाशा देखत हैं। मुझे
 लगता है, विश्रम वा लडका गलती तो कर बैठ, लकिन अब पछता रहा
 है उसके दिल पर गम बैठ गया है। और-तो-और बहू भी बाप के माथ
 चनी गयी। उस घर म पसा है ना तो उसका दुस्परयोग भी हाता है।
 विक्रम स्वय गलत आदमी है। बाप का पाप बटा भोग रहा है। रात भी
 छोटा धानेदार उमक घर आया था। शायद गराब पीकर जीर खाना

गाकर गया था। बड़ा धानेदार अभी नया है। वह किसी बड़े बाप का उटा है। वही कुछ खाता-पीता नहीं।'

मुखिया ने कहा—'वह ईमानदार है, भला आदमी है। छोट दरोगा ने रूपया छाया है, बड़े ने नहीं। वह रिश्वत लेता पाप मानता है।'

लकिन बहू, तू औरतजात है। आदमी की तरह। थप्पड़ का जवाब घूसा, ऐसा मत समझना। तू तो दया, ममता ही इस गाव का देना। आज लोग तेरी तारीफ करते हैं।'

यशोदा बोली—'चाची यह बहू तो खुद कहती है, झगडा मिटाना चाहिए बढ़ाना नहीं। कल बड़ा दरोगा आया था। कहता था, किसी म डरना नहीं। अपना बयान खुलकर देना। अपराधी को अपराधी बताना। इस गाव म जहर फैला है, उसे मिटाना जरूरी है।'

बुद्धा न कहा—'पुलिस तो अपना मुकदमा बनाती है, उसे बिगाडती नहीं। वह दरोगा तो यहा आग है फल नहीं। कभी भी दूमरी जगह चला जायेगा। दफती हो, कितन मुकद्दमेबाज पदा हो गय ह इस गाव म। घर-के घर दरवाद हो गये। गाव का पसा शहर के वकीलो की जेब म जाता है या पुलिस क पाम। कोई न शकर म खा पाता ह, न पहन पाता है। गाव के आधे घर कजदार बन हैं साहूकार के।'

यशोदा ने सास भरी—'हा बुरा हाल है इस गाव का। घर घर म जाग सुलगी ह।'

बुद्धा लौट गयी। यशोदा भी घर के काम म लग गयी। उन दिना उम अधिक् व्यस्त रहना पडता था, उस समय चौधरी रामदास नेत पर गया था। गट्ट की कटाई शुरू हो गयी थी। जब वह लौटा तो तब तक यशोदा न रोटी बनाकर रख दी थी। उसी समय मुखिया न यशोदा का आवाज दी। जब वह निकट पहुची, तो मुखिया वाली—'जम्मा, नर्मदा नाई की बात तुमन भी सुनी। मैं समझती हू, बहुत अच्छी बात कह गयी, ताद्। जैसी पकी उमर है उमकी, वम ही विचार ह। आज मुबह गमकसी आयी थी। वह भी बताती थी कि विक्रम चौधरी का लडका नयभात सा बना ही किमी रोग म ग्रस्त बना है। शराव न उम मौत क मुह म झोक दिया है। घून की उलटी कर रहा है।'

आतुर वनकर यशोदा बोली—‘तो तरा दाप क्या ह । तुझे क्या करना है?’

मुनकर सुखिया चुप रह गयी । उसी समय रामदास घर म आया । मास-बढ़ का बात करती देख, वह पास जाकर बोला—‘क्या बात है ’ यशोदा । वह की कैमी तबियत ह । आज मैंने शहर से कुछ फल भगाय हैं अनार, सन्तरे । यह वह का दना ।’

यशोदा बोली—‘अजी तुम्हारी बहू का तो आज एग और रोग लगा है । विक्रम का लडका बीमार है ना, तो इसे चिन्ता है, उसका जीवन की । चलो पूछो इससे, तुम्हे क्या ? मरे तो, जिय तो । जो जमा करेगा, भोगेगा । हमारे घर का तो वह सत्यानास करने पर तुला था । बाप के पास हराम का पैसा है । बडो जायदाद है । बाप बट की जाग्रे आसमान की ओर उठी ह । उह क्या जरूरत है धरती की ओर देखन की । कौन पीडित है, कौन दुखी है, कौन भूषा है, कौन नगा ह, विक्रम और उसका बेटा—यह सब नही देख पाएग ।’

चौधरी ने सास भरी—‘हा, मलखू की मा, यह पसा जहा पुण्य है, पाप भी है । यह इन्तान का बरगलाता ह, रास्ते से दूर फेंक देता है । उसने कहा—अभी खेत पर शम्भूनाथ मिला था । भला आदमी ह । पढा लिखा है ।’ उसने भी मुझसे कहा—‘झगडा बढाना मत, घटान का प्रयत्न करना ।’ उसने बताया—‘विक्रम अभी तक किसी चक्कर म नही फमा था । अब लडके की मूखता के कारण फस गया है । बात इतनी बढी कि लडके का बहू घर छोड गया । उसका पिता ऊंचे विचारो का आदमी है । पैसे वाला ह ।’

तभी यशोदा आतुर हो उठी—‘मूल बात करो, क्या कहता था शम्भूनाथ ।’

रामदास स्वय विचलित हो उठा—‘कहता था, दरगा स मिलकर मामले का खत्म करा दो । विक्रम चौधरी के लडके का अभयदाता दा ।’ उसने कहा—‘भला यह कग होगा ? चूबकर नही चाटा जाता । जब हमारी बहू पर घातक प्रहार हुआ, तो भला हम किस प्रकार चुप थडे रह । मुझे घण्ट का जवाब पूसे से देना होगा । मैं विक्रम को दित म

आममान क तार दिवा दूगा ।

‘अच्छा अच्छा, जब तुम स्नान कर ला । रोटी तयार ट ।’ यशादा न कहा—‘यह आदमी मदा एसी ही बात करता आया ह । रात बाल बाल मेरी भैम बच गयी थी । दा आदमी भैम क पास जाकर खडे थे । वह ता यह कहा उसी समय मेरी जाघ खुल गयी । बाहर गर्या । मुझे दखत ही वे नी दा म्याग्ह हा गय । वह शम्भू है न, आज मुबह ही मुयस जाकर कह रहा था चाची विन्म बूढा ता हो गया परंतु उसने दाता का जहर अभी नही गया । अपनी बैठन म बठा कह रहा था, रामदाम का घर बरखाद कर दूगा बता दूगा उस बह का, बडी तीममार खा बनी है । उसका भा नाम निशान नही रहगा

तुरंत ही चौधरी तज हा उठा ‘हा हा म सब जानता हू । वह अपनी बैठन मे बैठकर बया कहता ह । उस सुन लेता हू । लेकिन इस समय वह प्रतिशोध लन की बात नही सोच रहा । उसकी औरत रात तिन परेशान रहती है, अपने लडके की हालत देखकर । कन ही बाहर से डाक्टर आया था । विन्म भी याचक बना है, अपन लडके के प्राणा क लिए । उसका बड़ हजार रुपया खच हो चुका है ।’ वह सुधिया के कमर न बाहर निकल गया । यशादा भी दूसरी ओर बढ गयी ।

उसी समय, मुखिया चुपचाप अपने बिस्तर स उठी और चादर ओढ कर घर से बाहर निकल गयी । जब दर बाद यशादा उसके कमर म गयी, तो देखकर चकित हो उठी कि मुखिया की चारपाई छाली पडी थी । उसी क्षण वह पुवार उठी—‘अरे मलखू के चाचा !’

‘या है ?’ चौधरी पुन कमरे की ओर बढ आया—‘बया कहती है तू !’

यह दया ! छाला पडी है यह चारपाई । जान बहा गर्या है, यह बू । यह हम बही का न रोगी । जीन-जी मार दगी । यह नागन है हम घर का डम नेगी ।’

चौधरी हतप्रभ हा उठा । वह स्वय विन्म बनकर बाला — भाग्य वान शासत बन ! बिगडी बात को और मन बिगडने द । अपन माय मेरा चुडापा भाग की भट्टी म मत जाक द ।

यशोदा बोली—‘मुझे लगता है वह विक्रम के घर की तरफ गयी होगी। तुम बैठो मैं जाती हूँ।’

‘नहीं, मैं जाऊँगा। वहाँ गयी तो उसका सिंग फोड़ दूँगा।’

‘हां-हां, तुम तो यही करोगे। मिर तोड़ सात हो, मोड़ नहीं सकता।’ वह चल पड़ी। चौधरी रामदास भी लाठी पकड़कर पीछे हो तिया। घर दूर नहीं था, पास था। दोनों उम भवन में प्रवेश कर गए। चौधरी के मन में श्राद्ध था। उसने हाथ बाप रह थे। पैर भी भारी पड़ रहे थे। किंतु जब दाना उस भवन में पहुँचे, तो चौधरी रामदास का हाथ से लाठी छूट गयी। वह चकित हो उठा। यशोदा के साथ उसने भी देखा। विक्रम का पुत्र सजय पलंग छोड़कर नीचे धरती पर बैठा था। उसने सुखिया के पर पकड़ लिए थे और रो पड़ा था। आश्चर्य! उम समय सुखिया भी अपने मन का उद्वेग नहीं गेन पायी। वह भी रो पड़ी थी। विक्रम और उसकी पत्नी पत्थर की मूर्ति के समान एकटव उम करुण दृश्य का देख रहे थे। सजय कह रहा था। ‘मैं अपराधी हूँ। मुझे नष्ट दो। मुझे मार दो।’ और सुखिया उसके सिर के बालों पर हाथ फेरती हुई फफक पड़ी थी। रोती हुई कह रही थी, ‘उठो शान्त बनो। इमान भूलें करता है और अपने को सुधारता है।’

उस समय सुखिया के सास ससुर भी मूर्तिवत् बने खड़े थे। मानो वे निरुपाय बन थे। अब? आँखों में आसू जा गये थे।

14

घर लौटकर जब सुखिया जब फिर बिस्तर पर पड़ी, तो वह निश्चिंत हो चली थी। अपने स्वभाव के विपरीत बनकर यशोदा न पास आकर कहा—‘यह तूने क्या किया वह! औरत की सब मान मर्यादा त्याग दी!’

तभी रामदास भी घर में आ गया। उसने यशोदा की बात सुन ली।

वह बोला—'इस बहू न मर्यादा ही नहीं त्यागी, हमारी नाक भी बाट दी। आज समूचे गाव में यह बात फैल गयी। अब औरत, मरद अपना मुह की बात राकेंगे नहीं, मरवा मुनाकर बहग, चौधरी रामदास के लडक की विधवा बहू न अपनी भी उतारी, तास-समुर की भी उतार दी। उसने कहा—'मन में आता है इस औरत के टुकड़े कर दू। साठी का एक ऐसा हाथ मारू कि इनका प्राण निकल जाए।'

उसी समय सुखिया ने अपना मुह का कपड़ा हटाया। वह रा रहा थी। श्वसुर की बात सुनकर और अधिक फुफक पड़ी। उसी अवस्था में बोली—'लो, मुझे मार दो। तुम मेरे श्वसुर हो, मेरे पिता हो, अपना आधे भाग का खुलकर उपयोग करा। यहाँ मीखा है, तुमने। इस अयाय की जिन्दगी में यही समझा है।'

यशोदा पति के और समीप आ गयी—'तुम जाओ यहाँ से। झगडा मत बढ़ाओ। देखते हो, विपत्ति की काली घटा इस घर पर छापी हुई है। विपाद का धुआ भरा है हमारे प्राणों में। यह बहू इस घर का सफाया कर दगी। भरा लडका तो चला ही गया, अब यह हम पर भी आग के अगारे छोड़ेगी।'

इतना सुनते ही सुखिया चीख उठी—'अम्मा ! मुझ पर दया करा। मुझे अकेला छोड़ दो। अब मैं जीवन नहीं चाहती, मुझे शान्ति से मरने दो।'

उस समय रामदास कुछ और कहने चला था कि तभी गाव की दातीन बद्धाए वहाँ आयीं। उन्हीं में एक थी विक्रममिह की चाची। वह गाव की एक सम्माननीय महिला थी। बद्धा थी। घर के आगन में जान ही बोली—'जरी, रामदास की बहू'

'हा, चाची ! आओ। बठो।'

'कहा है तेरी बहू ! मैं भी तो देखू उसे। जान इसने कमाल कर दिया। चाची बोली—'सुनती हूँ, तारी बहू शकल-सूरत की अच्छी है और मन की भी अच्छी है। इस गवई-गाव की एक औरत गाव को जलन से बचा बैठी है मैं उसके चरणों में अपना सिर रखूंगी।' उसने दूर खड़े रामदास की ओर देखा—'आज तेरी बहू दवी स्वरूपा बनकर गयी थी,

विक्रम के घर पर। चार दिन में सजय न जाज कुछ खाया है। अब वह मरेगा नहीं, बच जायेगा। डाक्टर का कहना है, यही इलाज था उसका। अमृत दे आयी है।'

बद्धा अय औरता के साथ सुखिया की चारपाई के पास पहुँच गयी। तब सुखिया न मुह पर कपडा डाल रखा था। तब भी उसकी आँखें भरी थी। पास जात ही यशोदा बोली—'अरी बहू पर छू इनके।'

किंतु उस चाची ने कहा—'नहीं नहीं, पैर मुझे छूने चाहिए। कल ही तो मंदिर पर कथा वाचता हुआ पंडित कह रहा था, छोटी उम्र का आदमी या औरत कोई भली बात कहे या करे, तो उसका भी सम्मान करना चाहिए। उसके चरना की रज माथे से लगानी चाहिए। वह बोली—'रामदास की बहू, तुने यह बहू क्या पाई हीरा पाया है। यह तेरी बेटी भी है, बेटा भी है। आज समूचा गाव इसकी तारीफ कर रहा है। अभी गाव में बड़ा दरोगा आया है, तो वह भी कह रहा है, एक सामान्य किसान की औरत इतनी बुद्धिमान हो इसी कल्पना में नहीं कर सकता था।'

तभी रामदास बोला—'चाची, इसे वहा नहीं जाना था।

'क्या नहीं जाना था, र ! क्या इस गाव को जलने दिया जाता। तुम दो घरों में झगडा चलता, तो गाव बैठ जाता। विक्रम का पैसा पानी की तरह बहता। और तू भी अपने खेत बेचने के लिए तैयार हो जाता। लोग राख का ढेर बना देते, इनके 'घरों को वाह, री बहू ! शाबाश ! भगवती आ बैठी थी, इसके मन में।'

उसी समय गाव के कुछ व्यक्ति भी वहाँ आये। वहा दरोगा भी आ गया। वे सब घर के आगन में आ गये। वहा आते ही दरोगा बोला—'चौधरी रामदास ! किसी जन्म के पुण्य प्रताप से तुम एसी बहू पा गये। तुम्हारे सब पाप धुल गये। बहू का उस घर जाना मानवीयता का सबसे शुभ उदाहरण है।' ऐसा पाठ मैंन कभी कित्तावा में पढा था। सुना है तुम्हारी बहन कुछ अधिक नहीं पढ़ पायी। निपट गवार है।'

एक व्यक्ति बोला—'अजी बहा पढ पाती ! बेचारी विवाह के कुछ समय बाद ही विधवा बन गयी। सास भी नहीं ले पाई। जिंदगी का

धोझ मिर पर आ पडा है। सास-ससुर भी अब बूढे हा चले है। यह चौधरी रामदास अपने ममय का बडा अच्छा लठन था। एव बार डाकुओ से अवेला लडा था। लेकिन अत्र क्या रहा, बूढा हो गया। सिर के बाल सफेद हो गय, कमर झुक गयी।

दरोगा ने अपन बग से एक कागज निकाला और उस रामदाम की ओर बढाकर कहा—'इस पर हस्ताक्षर कर दा। तुम्हारा मुकदमा समाप्त कर दिया। जो लडका जेल गया है वह भी आ जायेगा।

विक्रम की चाची बोली—'दरोगा जी, बहू को समझा दो। अब भी रा रही है। कहती है, सास-ससुर को उसकी बात अच्छी नहीं लगी।

दरोगा युवक था। चकित हा उठा—'ऐसा क्या। क्या चौधरी मुकदमा लडना चाहता था।' वह बोला—'पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर नहीं किया जाता, चौधरी। पुलिस का आदमी ऐसी बात करना नहीं चाहता। कागज तुम्हारे हाय में है, दस्तखत न करना चाहो, तो मत करो। मुकदमा लडो। लेकिन यह समझ लो, तुम इस बुढापे में अपनी दुगती करा बैठोगे। पता नहीं तुम्हारी बहू को किसने ऐसी सीख दी। जो बात इसने की वह अनमोल थी। उसकी कोई कीमत नहीं थी। अब विक्रमसिंह और उसका पुत्र सजय सिंह तुम्हारी बहू के सरानीय गुलाम बन चुके है। उनका सिर झुका है। उन्होंने समूचे गाव के समझ अपने को अपराधी स्वीकार किया है।'

रामदास ने एक व्यक्ति का कलम लिया और कागज पर दस्तखत कर दिया। तभी वह बोला—'अन्तत मैं गवार हू, दरोगा जी मेरी औरत भी गवार है। लेकिन जब मैं समझ गया, इस बहू ने गगा की धारा बन कर हम भवको पखार दिया सचमुच पडा उज्ज्वल चरित्र चित्रन हुआ है, इस बहू के माध्यम से।'

उसी समय मुखिया उठ बैठे। उसने ससुर के पैरों में झुककर कहा, 'पिताजी, मैं नहीं जानती किसकी प्रेरणा से मैं उस पर पहुच गयी। जरूर भगवान ने ही मुझे आदेश दिया था।'

दरोगा उस कमरे से बाहर निकल चुका था। मुखिया की बात सुनकर बोला—'वेशव।' वह भगवान का निर्देश था। अब रोओ मत

बहू ! भगवान का नमन करो । उसने तुम्हें और इस घर का आग में जलने से उबार लिया । यदि ऐसा न होता, तो गाव में विग्रह फैलता । तुम्हारा और अधिक अपमान हाता । पुलिस ममाज में एक सीमा तक अपना अधिकार रखती है । वह जन-जन की दरबारी नहीं कर सकती । यहाँ नापदान के कीड़े उछलत । बदबू फैलात । तुमने चमकते सूरज की तरह सब कुछ साफ कर दिया ।'

उस समय देखा, चौधरी रामदास रो पड़ा था । उसकी पत्नी यशोदा भी अपनी बूढ़ी आखा से खारी पानी बहा बैठी थी । देखकर, विक्रम की चाची ने कहा—'यह सब नहीं । अपनी दुबलता व्यक्त मत करो । शांत बनो । बहू का भी आराम दो ।' और वह अय औरता के साथ वहाँ म लौट पड़ी ।

जब घर में एकांत हुआ, तो रामदास ने पत्नी की आर दखकर कहा—'जब बहू के खाने-पीने की सुध ले । भुपे बुद्धि तो आई, लेकिन देर में आई । आज जान क्या हान वाला था, इस घर में । या तो बहू न रहती, या मैं न रहता ।'

यशोदा बोली—'तुम तो नाक पर गुस्सा रखत हो । बात को समझत नहीं ।'

जी, हाँ ! तू समझती है । पानी में आग तो तू लगाती है । तूने ही मुझसे कहा था, बहू ने नाक कटा दी । अब कट गयी वो जोड़ ले । श्रोगा भी समझदार है । किसी अच्छे घर का लफता है ।'

'अजी, यह कहो, आँधी आई थी, टल गयी । तुम बठ जाओ । मैं दूध लाती हूँ, बहू को अपने हाथ से पिलाकर बाहर जाना । अभी इसवे मन में गुस्सा है । हम दोनों ने सभी कुछ तो कह डाला । न आगा देखा, न पीछा, तुमने लटठ-सा मार दिया जाने मंदिर पर जाकर क्या सुनते हो, क्या समझते हो ?'

चौधरी बोला—'वहाँ कुछ नहीं मिलता, मलखू की मा का कोरा दिखावा है । अब मैं खेत पर काम तो कर नहीं सकता, समय बितान मंदिर पर जा बैठना हूँ । वहाँ लुच्चे-गुण्डे सभी को देर पाता हूँ । जुल्फट्ट छोड़ अब बहुत पहुँचते हैं । वहाँ औरतो का कीतन होता है ।'

यशोदा सुनक उठी—‘घाब कीतन होता ह । जवान बहूए बन-मवर कर वहा जाती हैं । अब तो गाव मे लिपस्टिक-पाउडर भी चल पडा है । जाखे पर काजल माये पर बिंदी पता नही, य बहूए किस यार का रिझान जाती हैं, उस मदिर पर । वहा पर बैठे जवान छाकरे भी ही ही और हा-हो करके हमते हैं । बेशम कही के ।

वह दूध की हडिया से गिलास मे दूध ले आई । दूध म चीना घालती हुई बोली—‘अब मुकेश भी आता होगा । वह अपनी भाभी के लिए सेब-सतरे लायेगा । आजकल अगूर भी आने लग ह । कुल दस रुपय त्रिय थ ता सब कुछ ल आयेगा ।

चौधरी वाला—‘आजकल दस रुपये म क्या जाता है ? बहन को दस रुपये जाता ह और माल एक रुपये के बराबर नाम बडे और दशन छोटे

यशोदा दूध का गिलास कमरे म ल गयी । रामदास भी साथ था । वह गिलास को लेकर वाला—उठ बहू ! दूध ले । आज मुझे भी गुस्ता आ गया । जान क्या बक गया ?’

‘अच्छा, अच्छा, अब गडे मुदें मत उपाडा । बहू को दूध दा ।

सुखिया बोली—‘मेरी इच्छा नही, अम्मा ।

‘नहीं । बेटी । दूध पी ।’ यशोदा न उसे उठाकर बठी कर दिया । तभी रामदास ने गिलास उसके हाथ म दे दिया । जब वह बाहर जाने लगा तो बोला—‘मलखू की भा, मेरी चिलम म आग रख देना । आज सुबह स तम्बाखू नही पी सका ।

यशोदा बोली—आज तो मैं भी मुह म दाना नही डाला, पेट की आखें कुलबुला रही हैं । सुबह मुकेश को चार पराठे बना दिये थ एक रख लिया था राहुल क लिए । वह प्ठा गया और खेलन चला गया ।

रामदास बोला—वह कही नदी पर न चला जाये । एक बार मामराज का लडका नदी पर पहुच गया था । नाव म बठकर शहर जा पहुचा था । वह तो यह कहो, सोगा ने पहचान लिया कि किसका बच्चा है । आजकल नदी चढ़ी है । बडे जानवर भा तर आत हैं ।

यशोदा बोली—एक बार मगरमच्छ दछा था । कुछ औरता ने नदा

मे पैर रखत और नहात भी डर लगता ह ।'

रामदास बाहर जा बैठा । उसी सशोदा ने मुणिया के मूँछे बालो पर हाथ फेर कर कहा—'बहू, आज सिर मे तेल लगाना । तू जरा भी ध्यान नही रखती, अपन शरीर का । देख ता, इमके धरो की बहुए किम तरह मन सवर कर रहती हैं ।'

तुरन्त ही मुखिया बोल पडी—'मैं किसके लिए थू गार करूगी, मा ! तुम्हारा बेटा ता गया । सम्व ध तोड गया । वह सुन्दर पछी अब जाने किस डाल पर जाकर बठा होगा ?

यशोदा ने साम भरी—'हा, बहू ! अब वह पछी लौटकर नही जायेगा । भगवान का मह भी अजीब करिश्मा है । यहा जो भी आता है, नाटक के पात्र की तरह अपना खेल दिखा जाता है । जब जाता है तो लौटता नही । न मा का नाता याद रखता है, न बीवी-बच्चो का ।'

मुखिया बोली—'अम्मा, मैं भी आजकल इसी प्रकार की बात सोचती हू । कभी-कभी ता मन म एसा बैराग्य आता है कि सब कुछ छाड कर कडी भाग जाऊ । कही जाकर छुप जाऊ ।'

यशोदा बोली—'कहा जायेगी बहू ! कहा छुपोगी । उस भगवान की दृष्टि सब तर्फ जाती है । चीटी मे लेकर हाथी तक उमकी नजर मे रहत हैं ।'

मुणिया वाली—'अम्मा वह मास्टरनी भी विधवा थी । उसका पति वेदान्ती था । विद्वान था । एन बार उसी मास्टरनी मे बताया था । जीवन की सान मदिरों मे नही मिलता, जन-सेवा मे मिलता है । नर-नारायण का दशन निधन और पीडित की झोपडी न किया जा सकता है ।'

यशोदा ने सास भरी—'हा, बहू ! सच यही है । मैं तुझे आज चताती हू, वह जगनदेई चमारी थी मा ! जब उसका पति मर गया, तो वह मजदूरी करके अपना और बच्चो का पेट पालती थी । मेरे पास प्रायः आती-जाती । कुछ काम कर जाती, कुछ ले जाती । पिछले दिनो जब वह दर तक नही दिखाई दी, दो एक दिन खेत मे लौटती हुई मैं उसके घर जा पहुँची । वहा देखकर, मेरे पैरो की माटी निकल गयी कि जगनदेई

पटिया पर पड़ी थी। बीमार पड़ी थी। बच्चे रो रहे थे। भूय से विलंबिला रह थ। तब जाने क्या आया मेरे मन म, उसकी बड़ी लडकी को साथ ल आई। पाँच सेर अनाज द दिया। आटा द देती, वह था नहीं। उम दिन मर मन को बड़ी राहत मिली। ऐसा लगा, मैंने कोई शुभ काम किया था। दो दिन बाद ही सुना कि जगनदेई नहीं रही। वह मर गयी। तब मैं जाने किस प्रेरणावश उगक घर गयी। घर से कपन का कपडा ल गयी। वहा जाकर लोग म वह आई। चिता के लिए मेरे पर स रुपडे ल आयें, लकड़ी ल आयें। बाद म सुना उगरे बच्चे मामा ल गया। वह घर ब द हो गया।

सुखिया ने कहा—‘अम्मा, गरीबी का, दरिद्रता का और पीडा का कोई अन्त नहीं। मैं गरीब घरा की लडकिया को सिलाई का काम सिखाना है। किसी मे कुछ लेना नहीं।’

उस समय यशोदा के मन मे बात आई कि जब किसी से कुछ लगा नहीं, तो काम कैसे चलेगा। परन्तु वह मन मे उठी बात रोक गयी। वह फिर चूल्ह के पास पहुच गयी। तभी सुखिया के मन मे आया, मचमुच, एक तूफान आया था, इस घर पर, वह हट गया। मैं भी नहीं समझा था कि छोटी-सी घटना कितना बडा काम करगी वह चिंगारी दो घरो को तो फूक ही दती, समूचे गाव म आग लगा देती विक्रम मालदार है, गाव का जमीदार है। गाव के लाग उसका तो साथ देत ही, कुछ समझदार और नैतिक भावना के पोषक इस घर के भी मददगार बनते

उस समय आगन की धूप चली गयी थी। अंधेरा आ चला था। तभी द्वार की ओर देखकर सुखिया चौक उठी—‘अरे, तुम तुम जोरावर ’

और जोरावर तब उसने पाम आ गया था।

जिस रहस्यपूर्ण ढंग में जोरावर उस घर में प्रविष्ट हुआ, उसे देख कर मुखिया विस्मित भाव में उसे देखने लगी थी। किंतु पास आते ही, जोरावर बोला—‘आज मन करता है कि तेरे चरणा में अपना सिर झुका दूँ। ऐसा ज्ञान तूने वहाँ से पाया, यह देखकर भी चकित हूँ। तूने तो किसी बड़े धर्मात्मा को मात कर दिया। आश्चर्य तो यह है कि खुद विषम तेरे सामने झुक जाने को विवश हो गया। वह तो बड़ा जल्लाद है, क्रूर भावों से भरा है। तूने समझ इसका लड़का भी ऐसा कायर बना, भयातुर हुआ, यह भी एक चमत्कार था।’

मुखिया ने व्यस्त बनकर कहा—‘यह सब छोड़। यह पता, इस समय कैसे आया? अभी तो पुलिस गाँव में है। अभी तो रात भी नहीं आई, उजाला है।’

जोरावर बोला—‘मुझे आना था। माँ ने सादशा भेजा था। उसके पास मेरा पता था। तेरे माम जो कुछ हुआ, वह भी उम आदमी ने बताया, जो मेरे पास गया था। मैं तो विक्रम के पुत्र को समाप्त करने आया था।’

‘दुष्ट कहीं का। तू व्यर्थ ही सयासी बना है। अपन को धोखा दे रहा है। तूने मन का पशुभाव ही अभी ज्यो-का-त्यो बना है। गंगा में गोता तो मारा लेकिन मन का मैल नहीं धो पाया।’

उदास बनकर जोरावर बोला—‘वह मैल इस जन्म में साफ नहीं होगा। वह कल्प भाव बहुत गहरा है। मैंने बहुत खून किए हैं। इन्सान के खून की लाली अब मेरे दिल पर जम चुकी है।’

‘ओह घट्ट कहीं का।’ मुखिया ने क्षुब्ध बनकर कहा—‘जब तूरा यह हाल है, तो मेरे पास आना व्यर्थ है। अपना जिया हुआ रूपमा ले जा। अपना पुत्र भी सम्भाल। अब वह पैरों से चलता है। जब बाप डाकू है, तो बेटा भी पिशाच बनेगा, इन्सान नहीं। वह तेरी छाया है समझ।’

किन्तु जोरावर तीखी बात सुनकर भी, उदास बना था। मानो

कायर हो चुका था। उसन बड़े सहज भाव में कहा—‘जाज तू मुझमें नाराज है, सुखिया भाभी!’ उसन सास भरी—‘वह ले जा तुझे कहना है। यह तरा अधिकार है। मैंने स्वयं ही तेरे समक्ष आत्म समर्पण किया है। मैं तो मा का नदेश पाकर आया था। मा ने जिस आदमी को भेजा उसन सब कुछ बताया। जिस लडके ने तुम्हारा छुरा मारा, मैं उमें भी जान से मार देने की बात सोच बैठा था। किंतु मा न जो कुछ बताया उससे मेरे मन के रोष पर घड़ो पानी पड़ गया। तू इतनी महान निकलेगी इतना सोचना मेरे लिए कठिन था। मा ने बताया, विक्रम क घर तुम्हारा जाना समूचे गाव की दृष्टि में एक अलौकिक घटना थी। उससे विक्रम का पुत्र ता मीत के मुह से निकला ही, गाव में आने वाली आधी भी रुक गयी। विक्रम इस घर को सही-सलामत नहीं रहने देता। मुझे मा ने बताया है कि सजय की बहू भी उस घर को छाड़कर चली गयी। वह भी अलौकिक नारी थी। उसकी आत्मा में बल था।

तभी सहसा, सुखिया ने कहा—‘मैं उस नारी को अपना गुरु मानती हूँ। उसके त्याग की बात सुनकर ही, मैं उस घर जान की बात साच बैठी थी। मैंने सुन लिया था कि विक्रम का पुत्र शराबी और व्यसनी बनकर अपनी आत्मा का तेज खो बैठा था। पुलिस ने उसे पकड़ा और मारा भी तो वह अत्यधिक भयातुर हो उठा था। खून की उल्टी कर रहा था। सचमुच मीत ने उसका पैर पकड़ लिया था।

जारावर उस समय अत्यधिक गम्भीर बना था। उसी अवस्था में बोला—‘जब गाव का आदमी मर पास गया तो मैं हिमालय की तरफ जाने की तैयारी कर रहा था। कुछ दर बाद ही उस स्थान को छोड़ देता।

सुखिया न पहा—‘चलो यह अच्छा हुआ कि तुम आ गये। मिल गये। अब तुम अपने रास्त की ओर देखो। इस सुखिया को और इस गाव को भूल जाओ। बर सक्त हो, तो अपना कल्याण कर लो। देखो, आधा जीवन तो तुमने बरबाद कर लिया।

जोरावर कुछ और पास आ गया और बाला—‘भाभी, अब तुमसे दूर जान को मन नहीं करता।

तो छोट बैठा। जपन साधिया को भी छुट्टी द दी, लेकिन मैं शान्त नहीं। मेर मन का भय दूर नहीं। मन का कालाहल परेशान करता है।'

वह भय तुम्हें खा जायगा।' सुखिया वाली—'पिछली बार तुमन कहा था कि हिमालय की क दरारों में बहुत से खूबार टाकू छिपे है। वे भगवान का भजन करत हैं। मैं ममज्ञती हू, वे अब भी अपन जीवन को व्यथ खो रहे है। उन्होंने पुस्तिस स और समाज से अपने को भले ही दूर कर लिया हा, लेकिन अपने मन म भर पापा के बोझ से पृथक् नहीं हुए। वही अवस्था तुम्हारी है। बिय गय कीभत्स कम तुम्ह चैन नहीं लने देंगे। तुम्हारे हृदय को छननी बना देंगे। तुम जीवन भर अशांत रहाग। रात के अघेरें म पहाड का पत्थर भी तुम्ह भरा देगा। वह भी तुम्हारा शत्रु दिखायी दगा।

'ता मैं क्या करू भाभी ! सचमुच मैं परेशान हू।

पत्थर के समान कठोर बनी सुखिया बोल पडी—'तुम्हारा एक ही माग है। यदि तुम उस पर जा सकते हो, तो जाओ। तभी तुम निभय होग।'

महसा जोरावर बोल उठा— वह कौन-सा माग ?

'आत्म समपण का माग ! निग्रह का माग !'

दखस जोरावर तीव्र हो उठा — भाभी !

'हा, देवरजी ! सुखिया के स्वर में जैसे शहद घुला था—'तुम मुझे प्यार करत हो न। अपनी प्रेयसि बनाना चाहत हो। तो मैं ही तुमसे यह बात कह सकती हू। तुम्हारे रोग का उपचार यही है। यह जहर भी है और अमृत भी। कुदरत न तुम्हारे समझ य दोना प्याले रख दिय ह, जिसे चाहे ग्रहण कर लो।'

निश्चय ही उस समय जोरावर कुण्टाग्रस्त बना था। तभी वाला— तू तो पडितो सरीखी बात करती है भाभी ! बोल तो, यह कहा मीखा ! किमने यह सबक दिया।

सुखिया बोली— मैं जानती हू तुम्हारे सस्कार अच्छे नहीं। अभी और तुम्हें विपत्ति के दिन देखने हैं। लगता है तुम जीवन भर पण्डित पद घण्ट राही की तरह इधर-उधर मारे-मारे फिरोगे। ५

का ता जीवन समाप्त किया ही, अब मुझे नष्ट करन पर आमादा हा ।
 लेकिन म तुम्ह प्यार कर सकती हूँ, आत्म-समर्पण नहीं कर सकती ।
 समय-समय पर तुमन जितना रुपया मुझे दिया है, वह ज्या-जा-त्यो रखा
 है, उसे मैं अपन काम मे नहीं लाऊंगी । वह या ता तुम्हारे पास वापिस
 जायेगा, या तुम्हारे पुत्र के काम आयगा ।' उसने कहा— मैं तो चाहूंगी
 कि तुम्हारा यह भ्रष्ट पसा राहुल के भी पाम आये । वह पैसा उसम
 दूर रह । वह पैसा इन्मान के छून स भरा है । उस पसे का सात्विक भाव
 नष्ट कर दिया गया । काश ! तुम आदमी बनत । तुम भी इन्मानियत का
 मकस सीखत । तुम भी यह जानत यह धरती का इन्मान कितना सघप
 करता है, दो रोटी पान के लिये । इमीलिय इसान देवता बना है
 भगवान बना है

जोरावर चौक उठा—'भाभा ! उमन बाल म पिस्तौल निवाल
 लिया । वह सुखिया की आरतान कर बोला—'मैं तुझे भी समाप्त कर
 दूंगा, औरत ! तुझे प्यार क्या किया, गले म एक साप डाल लिया । तू
 मुझ पागल कर दिया है । मूख समझ लिया है ।

उस पिस्तौल को देखत ही सुखिया ने अपनी छाती की बॉडी के बटन
 छोल दिये । छाती नगी करके बोली—'ले, मार द गोली, चला दे । तू
 खूनी है ना, तुझे खून करने की आदत है । इन्मान का खून पीना ही तू
 सीखा है । मेरा भी खून पी ल ।'

उसी समय कमरे के बाहर चौक म यशोदा आ गयी । वह बोली—
 'अरी बहू ! क्या है । कौन है । किसस बान करती है, तू ?'

सुखिया ने तुरन्त स्वर पर जार दिया—'अम्मा कोई नहीं ।'

यशोदा कब्जे मे व्यस्त थी । फिर बाहर चली गयी । तभी सुखिया
 बोली—'मारना है, तो मार दो । यहा स जाओ । फिर कभी आना और
 अपने सभी पसे ल जाना । पुत्र को भी ले जाना । मैं बहुत बोली हूँ । अब
 थक चुकी हूँ । चुप रहना चाहती हूँ ।' वह पड गयी । मुह पर धाती का
 पल्ला डाल लिया । उसी समय सुखिया को लगा जारावर न अपना सिग
 उसके पैरा पर रखा था । जब उसने फिर मुह से धोती हटायी, तो तब
 तक जोरावर उस कमरे से जा चुका था । वह दीवार फादकर अपने घर

मे पहुँच गया था।

दखत ही मा वाली—अर, आ गया तू ! मिल जाया भाभी न। यह समझ ल, मुखिया गरीबी औरत कठिनाई स दिखाई दगी। मैं ता जब नब उसे ँपती हू, ता लगता है, कोई देवी स्वरूपा औरत मुझे ँखाई ँती है।'

जोरावर बाला नहीं, चुप रह गया।

मा न कहा—'कुछ खा ले। देख, मैंन तरे लिये हलुवा बना दिया ह। दूध भी ठडा किय देती हू।'

किंतु जोरावर गम्भीर बना था। वह कुछ कहने की स्थिति न नहीं था। अभी कुछ दर पूव वह मुखिया के समक्ष जिस अजूबा का प्रदर्शन कर आया वह शूल की तरह उसकी छाती न चुभ रहा था। मा तश्तरी न हलुवा ले आई और गिलास मे दूध। जोरावर भूखा तो था ही, खान नगा। उसके झोल न कुछ रूपया पडा था, वह मुखिया को दना था परन्तु ामा अवसर नहीं आया, वह रूपया ज्या का-त्या लौट आया। एक चार उसके मन न आया कि रूपया मा को दे द, परन्तु यह विचार भी ँवा की तरह निल गया। हलुवा खाकर और दूध पीकर जब वह चलन को उद्यत हुआ, तो तब अधेरा जा गया था। उसक घर के पीछे कोई घर नहीं था। उसी का खेत था। जोरावर के घर आने-जाने का यही रास्ता था। जब वह उधर बढा, तो मा बोली—'अभी जायेगा, तू ! पिता स यही मिलेगा। जब उनसे काम नहीं हाता। नौकर रखा है, ता वह भी ठीक से काम नहीं करता, आय दिन चरया मागता है। अब कब जायगा तू !

जोरावर बाला—कुछ पता नहीं। हो सकता है, अब न आ पाऊ।'

मा सम्भल गयी—कसी बात करता है र ! तू घर का तो रहा नहीं, अब बाहर भी नहीं रहगा। वह बोली—'मैं अब अधिक् जीवित नहीं रहूगी। मेर पीछे कुछ भी करना। मुझे दिखायी देता रह। यहा आता रह ! तू आ जाता है, तो लगता है, मेरे मुझे प्राणा न हरियाली आ गयी। मुझे जीवन मिला है।

जोरावर न सास भरी—'मा, इस जावन का कुछ पता नहीं। वह

बोला—‘यही क्या पता था कि मैं डाकू बनूँगा। खूनी कहलाऊँगा, माया कहत ह कि मैं बहुत रुपया लूँगा। परंतु मैं तो सोचता हूँ, रुपया भरो ही आया हो, इमानियत का भाव मेरे पास नहीं आया। कोई भला काम भी मुझसे नहीं हा पाया।’

मा ने कहा—‘देख, तरी वहिन राधा भी बहुत याद करती ह। जब उसका पत्र आता है, तो तरा उल्लेख जरूर होता है।’

जोरावर विपाकत हो उठा—‘वह मुझे याद नहीं करती, मर द्वारा दिय गय रुपये का याद करती है। तुम भी इस जोरावर को इसलिये याद करती हो कि हजार रुपया तुम्हें दिया है। तुम्हारे पास इतना जेवर ह कि उसका उपभाग नहीं कर सकती।’

तभी मा ने धूरकर जोरावर की ओर दया। जैसे अपन उस पुत्र का ममत्ता चाहा। पहचानना चाहा। मानो अब तक उसका वास्तविक रूप वह नहीं देख पाई थी। उसे समझ नहीं पाई। तभी बोली—‘मुझे रुपया नहीं चाहिए, बेटा चाहिए। परंतु तू तो खूनी बना है, डाकू बना है। बोल तो तूने अपनी इस मा के साथ याद किया है। तूने पुत्र के धर्म का पालन किया है। मा के जिस पेट से तू पैदा हुआ है, उस पर लात मार बैठा है। मा को घायल किया है। तडपाया है। ले जा, अपना पैसा। यह सोने चादी का जेवर भी ले जा। दरिया में फेंक आ। मेरा बेटा मुझे दे जा।’

जोरावर मा के पास पहुँच गया। तभी बोला—‘मा, तुम बहक रही हो। वास्तविकता से दूर हो। तुम्हें हाड मांस का बेटा नहीं चाहिए, पसा चाहिये। वह मैंने तुम्हें दिया है। खूब दिया है। तुम एक जीवन क्या, कई जीवन भर बैठकर खा सकती हो।’ उसने कहा—‘मैं जानता हूँ पिताजी नाम मात्र की खेती करते हैं। पुलिस को और गाव के समाज को धोखा देते हैं। किसी से यह कहने की हिम्मत नहीं रखत कि उनके डाकू पुत्र ने बहुत धन दिया है। वह उनके पास सुरक्षित है।’

मा कातर हो उठी—‘जरे बेटा! आज तू कैसी बातें कर रहा है? तर मा-बाप को बेटा चाहिए, डाके का धन नहीं। वह बोली—‘जब

बचपन में तू भरी गाद में बैठता था, तू मैं विहसती थी। आलाडित हाती थी। गव से फूलों नहीं समाती थी। अपने को भाग्यवान मानती थी लेकिन आज क्या तीन में रही, न तरह में। समाज की औरता को अपना मुह नहीं दिखा पाती। कहीं आती जाती नहीं। मैं खूनी और डाकू पुत्र को मा हूँ न। तूने मेरा सिर झुकाया है। मेरा सम्मान अपने परास गंद दिया है। मा का अभिमान छीन लिया है तूने। समझ ल, मैं तर दिये घन पर थूकती हूँ। उस माटी का ढेर मानती हूँ।

उस समय जोरावर बोला नहीं, मिर झुकाये खड़ा रहा। उसकी मा ने जीवन में पहली बार मृत्यु का उदघोष किया था। अपने पुत्र को खूनी और कायर बताया था। उम्मीद में मुह पर कहा था, तूने समाज के समझ मुझे अपराधी बनाया है। मेरा गौरव छीना है। मा का अभिमान पद दलित किया है।

उसी समय मा बोली— सुन र जोरावर! आज तूने अपने दम्भ का उदघोष किया है। मा संकहा है कि इतना रुपया दिया कि खर्च नहीं किया जा सकेगा। यही ना! तू अपने रुपये को लजा और किसी और का दे आ। मैं तो यही चाहूंगी कि तू लौट आ। घर का काम देख। विवाह कर। बच्चे पैदा कर। इस घर की बश-बेल बढ़ा। उसे पानी दे। देख, यह घर अब बरबाद हो चला है। तेरे पिता जिस दिन जायेंगे तो उसी दिन यह घर बंद हो जायेगा। मैं भी अब देर तक नहीं रहूंगी। बुढ़िया हूँ, थक चुकी हूँ। तेरे पिता लाठी के सहार चलते हैं। शरीर चलता रह। इसलिए थोड़ा बहुत खा लेत ह।

आश्चर्य कि जोरावर तब भी पत्थर की मूर्ति के समान खड़ा था। उमड़म बात का पता था कि माने पुत्रवती बनने के लिए बड़े प्रयत्न किये थे। लेकिन जब पुत्र पैदा हुआ, तो वह डाकू बना, इसान नहीं। दुर्दांत भेड़िया। तभी जगने लम्बा सास भरी और मा की ओर दया। मचमुच उसकी आँखें भर आयी थी। उसका प्राणो का कोलाहल बढ़ गया था। उसकी पाठा चेहरे पर उतर आयी थी। मानो कोई उसके सिर पर हथौड़ा बजा बठा था। वह निमम था, व्यथित था।

मा ने कहा— 'बेटा, अब भी समय है अपने का बदल दे। नहीं तो,

इस मा का मार द । ममाप्त कर द । इस घर की दुनिया का ।'

जोरावर जागे बड़ा और मा के पैर छूकर वहा से जाने को प्रस्तुत होता हुआ वाला—'अब यही होगा, मा तुम्हारा क्यन सत्य होगा ।' वह दीवार पर चढ़ा और मा के दखते-देखते दूमरी तरफ कूद गया । वहा गाव समाप्त था । चारा ओर जगल-ही-जगल था । जोरावर झाड चखारो मे भरे पथ पर आगे बढ गया था

16

जोरावर जिस ढग से सुखिया क पास जाया और बातो-बाता मे अपना पिस्तौत दिखाकर मार देने की धमकी दे बठा, वह सब सुखिया के लिए अवल्पित तो था ही, घृणा भी था । दर हो गयी कि जोरावर उस घर से पलायन करके अदृश्य हो चुका था । परन्तु देर तक सुखिया क मस्तिष्क मे वह अभद्र दृश्य घूमता रहा । फलस्वरूप, उसका मन भी कर्पला बना था । तभी अपनी चाल मे तेजी लिए एक युवती वहा आई और बोली—'क्यो भाभी, तुम्हारे पास एक साधु आया था । अभी जब पुलिस का आदमी आया ह वह कह रहा है, शायद जोरावर अभी मरा नही, जीवित है । वह साधु बना है ।'

सुखिया बोली—'यहा कोई साधु नही आया । उसका काम भी क्या था ।'

'अरी भाभी ! यह न पूछ कि उसका क्या काम था । डाकू कही भी पहुंच सकता है । छुप सकता है । उस युवती ने कहा—'अभी मेरी मा खेत से भस के लिए चारा लायी है । उसी ने बताया कि चौपाल पर दरोगा बठा है । तुम्ह पता तो होगा ही कि पुलिस ने जोरावर को मार देने का दावा किया है, घोषित इनाम भी पा लिया । वह धान के सब जादमियो म बट गया । अब बडा धानदार तो बदल गया, दूसरा आया है । अभी छोटा दरोगा है । कुछ सिपाही भी है । सुनती हू के भी

बदले जायेंगे। जा साधु गाव म जाया, जोरावर सं उमकी मूरत मिलती थी। साधु भी शरीर का लम्बा चौड़ा जवान था।'

सुखिया ने फिर भी अपन मुँह पर एसा भाव व्यक्त किया कि माना वह पूण रूप म अनजान हा। उमन कहा—'मैं ता बिस्तर पर गडो हू। अम्मा भी बच्चे को लेकर वही बाहर गयी है। पिताजी नेत पर हैं। आजकल कटाई चल रही है न इसलिये उनका भी घर पर बठना नहीं होता। उसने बात बदली—'मढका, तू चुना अपनी बात। जब कब ना रही है अपने पिया व घर। पिछने दिना ता मुना था कि मसुराल वाने नेने आ रह है।

'हा भाभी। एसा बात ता चली थी। लेकिन उह किमी दूसर शहर म जाना था, नौकरी का इण्टरव्यू देने के लिये अब शायद अगल महीन जा रहे ह।'

सुखिया ने चुटकी ली, जब ता तरा मन नहीं लग रहा होगा।

'ऐसी बात तो नहीं भाभी।'

'अरी मैं सब जानती हू। सडकी का जैसे ही विवाह हुआ वह पति की उसक घर की बात सोचने लगती है। असली टिकाव तो वही है न। सडकी की जात का एसा ही जीवन है। इसकी कोई जाति नहीं, कोई देश नहीं। जहा गयी, वही की हो गयी। वही उसका धम है, वही जाति।'

युवती ने सास भरकर कहा—'हा, भाभी। ऐसी ही स्थिति है, इस औरतजात की।' वह बोली—'तुम सावधान रहना। पुलिस मतक है। तुम्हारा तो देवर है ना जोरावर, कभी भी जा सकता है।'

सुखिया न स्वर पर जोर दिया—'यहा क्या जायेगा। क्या काम है उसका?'

युवती चलन को उद्यत हुई और बोली—'काम तो उसका है। तुम भाभी लगती हो। सलोनो और सुन्दर हा। भाग्य की बात है कि वैधव्य भी तुम्ह मिला है। जीवन एकाकी बना है। जोरावर डाकू ही तो है वसे सुन्दर है, बलिष्ठ है। आज भी वह जवान औरता के लिए आकर्षक बना है।

सुखिया को उस यौवनमयी मेनका का कथन ऐसा लगा कि मानो वह उसके मन के बुझत दीपक में तेल डाल रहा हो। उसे प्राणवान बनाने में समय हो। पिछले वप ही उस मेनका का विवाह हुआ था। बड़ी चंचल बड़ा हसोड़। विवाह से पूर्व उसके विषय में नाना प्रकार की बातें चलती थी। उसे जिस जिस की प्रेमिका बताया गया था। यद्यपि मेनका का रंग माफ नहीं था, कुछ क्लॉस पर था। परंतु किसी ने ठीक कहा है, जवानी में गधी भी परी लगती है। यही अवस्था उस मेनका की थी। यौवन उभार पर, जाखें बड़ी-बड़ी। जैसे कटेली का फूल। उसने सुखिया की मनचाही बात कह दी थी। जोरावर जवान भी था सुंदर भी था। वह सुखिया के मन में घुस कर बैठ चुका था। परंतु दोनों में से एक भी, एक-दूसरे की तरफ बढ़ने को तत्पर नहीं था। यद्यपि वधव्य पाकर सुखिया एकाकी हो उठी थी, वह रातो-रात जागकर आसमान के तार गिनती थी। परंतु उसकी संवेदनशीलता नारी की परम्परा और जीवन रेखा का पार करने के लिए तत्पर नहीं थी। और जब से उसने यह सुन पाया कि जोरावर एक अथ नारी से विवाह कर बैठा है, उसके अतस्य होने पर अच्छा स्वत ही, सुखिया की गोद में दे बैठा है, तब से मानो वह सुखिया न तो यौवन मयी नारी रह गयी थी, न रूप रस की खान। वह केवल एक नारी थी। अवस्मात् ही उस पर जोरावर न उत्तरदायित्व का बोझ डाल दिया था। उसने स्वत ही सुखिया में कहा था, अब तू मा है केवल मा। यह बच्चा तुझे सीपन का अथ ही यह है कि तेरे जीवन का हल्कापन नष्ट हो जाय। तेरे मन में यदि कोई भावना हो, अपेक्षा हो तो भी समय की धारा में डूब जाय

उसने मेनका से कहा - बठ न। चली जाना। आज तो आई है इतने दिन बाद। जब ससुराल जायेगी, तो भगवान जाने कब लौटना हो। नारी तो पराधीन है। पराजित है।'

मेनका बठ गयी और सास भरकर बोली—'हा, भाभी! मन्चाई यह है।'

सुखिया बोली—'लेकिन औरत इसी में आनन्द पाती है। पति पाकर मा-बाप को भूल जाती है। बचपन के साथी भी याद नहीं आत।

घर के आल-दिवाल भी रास्त पर से उतर जात है ।’

सूखे भाव से मेनका मुस्कराई—‘बेशक । वास्तविकता यही है ।’

सुखिया बाली—‘तुझे पति अच्छा मिला है । पढ़ा लिखा है । किसी दफ्तर में काम करेगा ।’

मेनका बोली—‘अभी तक ऐसा ही दीखता है । भाग्य की बात भगवान जाने ।’

‘अरी पगली ! भाग्य तो बनाया जाता है । औरत मद दोना प्रयत्न करते हैं । यह जिद्दगी तो सपनों का समूह है । औरत मद गाड़ी के दो पहिये ह । देखा मा, सुदामा का घर ! पति-पत्नी न पति को किस प्रकार ऊपर उठाया । दोनों ने रात दिन काम किया और गांव के समाज में अपना स्थान बना लिया । इसे कहते हैं पौरुष । सुदामा ने अपने पाप का वर्जा भी उतार दिया । साहूकार के पास रखा अपना खेत भी छोड़ा लिया । कई साल से उसकी फसल अच्छी हो रही है । भाग्य साथ दे रहा है ।’

उसी समय यशोदा घर में आई । वह राहुल को सुखिया के पान छोड़कर बोली—‘बहू, अब इसे सम्भाल । बहुत तग करता है । गांव में अब घोमचे वाल आने लगे हैं तो यह भी जिद्द करता है । मलखू के पिता ने चार आने के पानी के बतासे तो खिला दिये, फिर भी उसका पेट नहीं भरा ।’

सुखिया बोली—‘अब यह चटोरा हो गया है । पिटेगा ।’

राहुल बोला—‘नहीं मा ! मैं मार नहीं खाऊंगा ।’

‘तो जिद्द क्यों करता है, नालायक कही का !’

तब राहुल अपना मुह सुखिया की छाती पर डालकर कुछ बोला नहीं चुप रह गया ।

मेनका बाली—अच्छा, भाभी ! जब चलूगी ।

सुखिया बोली—‘आज ।’

तभी यशोदा ने मेनका की आर देखकर कहा—‘अरी चौपाल पर भीड़ कसी थी । दरोगा भी आया बठा था ।’

मेनका बोली—‘ताई, पुलिस को सदेह है कि जोरावर भाया था ।’

वह मरा नहीं, अभी जीवित है।'

यशोदा ने विस्मय के साथ कहा—'इतने दिन हो गये और वह अभी जीवित है न, न, पुलिस को धोखा हुआ होगा।'

'भगवान जान, ताई। बात यही थी।'

यशोदा बोली—'उमके मरने की ता गाव म मिठाई बट गयी। सुनती हूँ, उस रात बहुतों ने खूब माराब पी था। पुलिस को भी पिलायी थी।'

'हां, बात तो सब हो गयी ताई। मुरदा भी जल गया, उमकी तरहवीं भी हां गयी।' वह उठ चली।

तभी यशोदा के मन में आया कि सुखिया से पूछे—'तेरे पास तो जोरावर नहीं आया। परंतु वह मुह की बात रोब गयी। वह जानती थी, बहू कुछ नहीं बतायेगी। अतएव वह लौट गयी। बच्चा राहुल भी फिर बाहर की तरफ भाग गया। किन्तु तभी सुखिया के मानस में भूचाल-सा उठा। वह उस परबस ही, किसी तिनके के समान उड़ाने लगी। वह स्वत ही अपने-आप में खिन बनी थी। गली जा रही थी कि उसने जो कुछ जोरावर से कहा, वह ठीक नहीं था। मेरी तरह वह भी मुझे प्यार करने लगा था। जब तब मेरे पास आकर बैठता, तो जाने किस गहरी भावना के साथ मेरी आर देखता था। तभी-तब मैं उसकी उस पंती दृष्टि को नहीं देख पाती थी। सहार नहीं सकती थी। मुझे लगता जोरावर की ब आखें मेरे प्राणों में घुस रही थी। वहा हा हा कर पैदा कर रही थी। वह मेरे लिए कितना तमय था, नमपित था। इतना मैंने समझ लिया था। और उसकी यह चालाकी किसी भी दूरदर्शी व्यक्ति में कम नहीं थी कि उसने मुझको अपने-आपसे बाधने के लिए अपना बच्चा मेरी गोद में डाल दिया था। शायद जोरावर न समझ लिया होगा कि मैं कभी भी चली जाऊंगी। इस घर को छोड़ जाऊंगी। आश्चय तो यह, उसने एक बार भी अपने मुह से यह नहीं कहा कि वह मेरे प्रति समपित है, जागह्व प्रहरी के समान मेरे जीवन के चारों ओर घूम रहा है मुझे अपनी समझ बैठा है। आश्चय की बात तो यह है कि उसने किसी को भी नहीं बताया कि उमकी एक प्रेमिका थी विवाहिता थी। यह

राहुल उसी का बच्चा है। कसा यूँ प्रलाप है यह मेरा कि गाव में, पड़ोस में यह प्रचारित किया है कि नदी के किनारे यह बच्चा मिला था और-ता-और, स्वयं अपने मास-मसुर से भी मैंने यही कहा है राम ! राम ! कसा सफेद झूठ है, यह। घोखा है। छूल है। इस कपट की नारा में इतने झूठे प्रलाप मुन पाये, लेकिन इससे बड़ा झूठ भी कोई होगा, मैं नहा जानती। पता नहीं इतना बड़ा पाप मैं क्या ढो रही हूँ। मैं किस अदृश्य भावना पर आश्रित हूँ। मुझे न दिन में चैन मिलता है न रात में नींद आती है। समुद्र ने मुझे नया माग निर्देश दिया और सिलाई के स्कूल में दाखिल करा दिया। किन्तु उस दूरदर्शित लुटेरे जोरावर ने तो सबसे बड़ा खेल खेला है। मेरे साथ कि मैं उम्मीद बनकर कहीं का न जाऊँ। जीवन के सलाह में बहकर कहीं दूर न निकल जाऊँ। जवानी की गहराई न डूब न जाऊँ अरे जोरावर ! जाने तू किम दूषित मस्कारवश डाब् बना है। खूनी बना है। इसानियत का लुटेरा बना है। मैं तो तरी पूजा कर सकती हूँ। भला किसको पता है कि तू डाने का रुपया निधना अपाहिना और अभावग्रस्त लोगो में बाँटता है। कई लाख रुपय का ट्रस्ट बना रखा है, गरीब विद्यार्थियों के लिए तू तो एक प्रतीत सयामी है। तू एक मन्चा मानव है।

मुखिया उठकर बठ गयी। उसने अपने धाना हाथ सिर के बालों में द लिए। उन बालों को मानो मोचने लगी। उसे यह अच्छा नहीं लग रहा था, मन में तलखी आ गयी थी कि वह जोरावर का जान क्या-कुछ कह बठी थी। उसे कायर आर बुजदिल बना बँठी थी। काश ! वह अपने का नाच पाती। झिझोड़ पाती। अपना गला घाट पाती। उन ऐसा कल्पना करके अच्छा लग रहा था कि यदि जोरावर अपनी पिस्तौल में भरती गाली मुझ पर छाड़ देता, तो मेरे साथ याय करता। मुझे जीवन दान देता। परंतु हाय ! वह ऐसा नहीं कर पाया। वह भी ममता और मोह का शिकार बना था। मैंने देखा लिया था कि जब उसने मुझ पर पिस्तौल ताना तो उसका हाथ कांप रहा था। मुझे तो लगा कि वह लोह का टुकड़ा उमक हाथ में छूटकर धरती पर गिर पड़ेगा निराश्रय, यह मुझे मार नहीं सकता था। इतना बलिष्ठ नहीं था। वह बारू

ग। उस आग्नय गस्त्र से किमी का भी मार सकता था। परन्तु उसका मन शरीर के बल के समान बलवान नहीं था। वह मन से दुबल था प्रतिशोध ल सकता था, द नहीं सकता था। वह असामान्य नहीं था। सामान्य व्यक्ति के समान अपने जीवन की नाव को खे रहा था। उसकी नाव पुरानी पड़ चली थी। पनवार भी कमजोर थी। उस लकड़ी को चीटा न खा लिया था इन्सान का खून बरन वाला पथिव आत्मा से और मन से हीन बोगा, बलवान नहीं। यह आसुरी शक्ति टायर में भरी हवा के समान कुछ दूर तक मजिल पूरी करती है, बभी भी बीच रास्ते में समाप्त हो जाती है

सुखिया खुल पड़ी। वह रोती हुई बोली—‘यदि जोरावर मेरे जीवन की रक्षा के लिए यह बच्चा मुझे मौप सकता है, तो मैं भी उसे प्राणवान बनाने के लिए यह सब बहूगी जो उसके लिए शुभ होगा। वह मन में रागी है विपाकन बना है, उसे स्वस्थ बनाना न केवल उसके हित की बात है अपितु मेरे लिए भी शुभ है। उसने मेरे लिए कुछ त्याग किया है, तो मैं भी अपने आपको उस पर विसर्जित कर दूगी गाव की घटना जून ही वह दौड़ा आया। निश्चय ही। वह एक-दो व्यक्तियां था खून बर दता। मेरे लिए पागल वृत्त की तरह जाने किम किमको जहरील ज्ञातो से नाच लेता

तभी यशोदा बहा आई। वह सुखिया का रोती देख, एकाएक हृत्प्रभ रह गमी। तभी आग बढकर बोली—‘अरी, बहू ! क्या आ गया तेरे मन में। क्या याद आया।

तभी सुखिया फुफन पड़ी—‘अम्मा, मैं बड़ी दुखी हू। मैं मरना चाहती हू। तुम सबके लिए बाध बनी हू।

अम्मा ने कहा—‘तू तो पगली है, देख, मुनेश शहर से आया है। तेरे लिए न जान क्या-क्या ने आया है। सुबह उसने पिता ने सौ रुपय का नाट दिया था, तो सब खच कर आया। राहुल के लिए तमीज और नैव्य का बपडा लाया है और तुम्हारे लिए फल मिठाई। एच सूती धोती भी ने आया।

सुखिया ने कहा—‘अम्मा, मुनेश तो पगलों है। इतना खर्च

आया। वह धोती तुम ललना। तुम्हारे पान नहीं है। यह धोती भी फट चली है। कई जगह पबंद लगाये हूँ।'

'अरी, मेरा क्या हूँ बहूँ! मैं तो पट्टी-पुरानी पहनकर ही गुजारा कर लूगी।'

उसी समय मुकेश घर में आया। वह सुखिया के पर छूकर बोला—
'धाती देख ले भाभी। तुम्हें पसंद आयेगी।'

सुखिया बाली—'मुकेश भैया, वह धोती अम्मा को देना। देखा, अम्मा के पास दूसरी धोती नहीं। यह फट चली है। जब ईख का पमा आयेगा, तो तब मेरा और तुम्हारा कपड़ा आ जायेगा। पिताजी का भी सिर का सपट्टा फट चला है। कुरता और धोती का कपड़ा भी चाहिए। पिताजी चार आदमियों में जाकर बैठते हैं, उन्हें शऊर का कपड़ा पहनना जरूरी है।'

मुकेश बोला—'भाभी, तुम सबकी फिक्र करती हो, अपनी नहीं।'

यशोदा बोली—'बेटा, यह धोती अब तारी भाभी के लिए ठीक नहीं, अब तो मामूली औरतें भी टेरलीन और रेशम की धोती पहनती हैं। और तारी भाभी तो अब गांव के सभी छोटे-बड़े व्यक्ति की निगाह में आ चुकी हैं। गांव की औरतें भी इन्से अजूबा समझती हैं। गभी कहती हैं तुम्हारे घर में यह बहूँ क्या आई, आममान से उत्तरकर कई देवी अ गयी।'

सुखिया ने कहा—'अम्मा, मुझे आसमान में मत चढ़ा दो। सब भ्रम में हैं। मैंने कोई अजूबा काम नहीं किया। जो लडका मेरे छुरा मारकर भागा था। वह तो धुद शराब के नशे में था। ठाकर खाकर गिर पड़ा था। उसका छुरा मेरे हाथ आ गया। वह न गिटगिटाना, हाथ न जाड़ता तो मैं यह छुरा उसके पेट में घुसेड देती। मैं भी उस समय पागल बन चुकी थी। हमलावर का सामना करना मेरा धम था।'

मुकेश बोला—'भाभी, यह बाल शहर में पढ़चो है। चर्चा का विषय बनो है। हमारा प्रिन्सिपल कहता था शायद ऐसी बहादुर औरत को सरकार पुरस्कृत करेगी। तभी तो औरतों का बढ़ावा मिलेगा। अब समाज बदल रहा है, अम्मा! इंसान करबट ल रहा है। प्रतिराध और प्रतिश्रिया आरम्भ हो चुकी है। अब इन्मान पहले के समान औरतों पर

अयाय नहीं कर सकता ।'

सुखिया हस पड़ी—'अम्मा, हमारा देवर अब निसर्गदास हो गया है ।'

यशोदा बोली—'अब बच्चा नहीं रह गया है । सब कुछ भ्रष्ट हो चुका है । दो साल बाद घर का बाझ भी उठा लेगा ।'

मुकेश बाला—'अम्मा, यू बहा न, मुझे काल्ह का बँल बनाया जायेगा । हल में जोता जायगा ।'

मा ने सास भरी—'बेटा, यह सभी इन्सानो का दस्तूर है । औरत भी काल्ह का बँल बनती है । दिन रात घर के धंधो म लगी रहती ह ।' वह बोली—'अब तू डाक्टर के पास जा । यही कर जायेगा, तेरी भाभी का अभी जहम भरा नहीं, हरा है । बाह उठती नहीं । तेरी भाभी विस्तर छोडे तो मुझे छुट्टी मिले । मुझे तो घर और बाहर का सब काम देखना पडता ह । डाक्टर के पास से आकर सँस को सानी कर देना । अब दूध कम देती है । आजकल तुझे भी नहीं मिलता । तेरे पिता को भी नहीं । बहू को भी दिया जाता है, या राहुल को ।'

सुखिया बोली—'मेरा दूध बंद कर दो, मा । मुकेश का दो । यह पडता है । दिमाग पर बोझ पडता है ।'

उसी समय चौधरी रामदास घर में आया और बोला—'मलखू की मा, चौधरी विक्रम आये हैं, बहू को देखने । कमर में कुर्सी डाल दे ।'

साठी के सहारं विक्रम आया और बोला—'नहीं, नहीं, यह मेरा घर है, किसी गैर का नहीं । और उसने फलो की झोला आगे बढा दिया ।'

17

बूढ़ा विक्रम कुर्सी पर बठ गया । वह मकान पर बिहगम दृष्टि डालता हुआ बोला—'कैसी अजीब बात है, इस घर पर कभी नहीं आ पाया । यह छोटा-सा घर है, अच्छा है । यहाँ बैठने को मन करता है ।

उसन कहा—'चौधरी रामदास, जम क जहाँ अच्छाई है, वहाँ बुराई भा है । अच्छाई तो यह है कि पैसा आदमी को एव-दूसरे के पाम ले जाता है और बुराई यह है दूर-दूर भी कर देता है । ऊच-नीच, छोटा-बड़ा यह पमा ही सिखाता ह । मेरा पैसा बड़ा अपराध है कि तुम्हारा मलछू मरा तो मैं यहा तक नहीं आ पाया । कई दिन बाद मुझे पता चला था ।

रामदास प्रस्तुत बात को टाल गया । वह बोला—'दूध लोग या चाय ।

चौधरी बाला— एव प्याला चाय ल लूगा ।'

रामदास न कहा—'अब गाव म विग्रह अधिक बढ़ गया ह । आज की नयी सन्तति मुधारवादी नहीं, वह सब कुछ न्याय चाहती है । अब तो न मस्कृति की बात सोची जाती है न धम की । गाव क मंदिर पर भी गुण्टागर्दी बढ़ चली ह । और तो-और, गाव के गलियार म शराब बिकती है । जुआ खेला जाता है । कोई जवान बहू-बेटी निकने ता आवाजकशी की जाती है । आज तुम यहा किस प्रकार आ गय, यही अचरज की बात है । गाव के पण्ही छोर पर तुम्हारा विशाल भवन है, मैं ममखता हू बहा मे कभी निकलते नहीं । अब तो तुम्हारा बुढापा आ गया, जवानी म भी गाव मे किसी क यहा नहीं आत-जात थे ।

चाय आ गयी और चौधरी ने चुस्की ली । तभा वह चौधरा रामदास की ओर दग्नकर बोला— तुम ठीक कहते हा, चौधरी । उसने बिस्तर पर पडी सुखिया की आर इशारा किया—'तुम्हारी इस बहू न मुझे बुढाप म साख दी ह । कह सकता हू इसने समूचे गाव या पथ प्रदर्शन किया है । मुझे भी रास्ता दिखाया है । उसन फिर चाय पी और कहा—'मैंने तुम्हारे पास पाच हजार रुपय भेजे थे, वह तुमने नाली म फेंक दिव थ । जिसने मुयस जाकर कहा, तो तभी, मैंने स्वय अनुभव किया था, तुम स्वाभिमानी हा, सच्चे मद हा । लेकिन रुपये तो मैं आज भी लाया हू, रिश्वत क रूप म नहीं, बहू को शाबासी देन के रूप मे । ये रुपय स्कूल म लगाना । स्कूल चलाना । नारी समाज मे यह बहू कुछ काम कर सकगी । इसम प्रतिभा है, आज है । रात सजय की बहू भी आ गयी । वह गुसियारा तो है परतु बहुत ऊची बात सोचती है । वह भी

तुम्हारी बहू व माय राम बंगों । एर-दा दिन म अपनी साम व माय
यह आयेगी ।

चौधरी रामदास बोला—'रूपय न दा । आशीष दा ।

'हा, हा यह तो दूगा ही । अब म तुम्हारा हू, रामदान । उमा
कहाँ—जीवन तनी से आ रहा है । जस्ती वष का पार कर चुका हू ।
कभी भी डम गाव स चला जाऊगा । वह चाय का अन्तिम घूट लेकर
वाला—'तुम्हारी बहू न रास्ता दिनामा ह । पता कुछ नहीं, 'नगण्य ह ।
वास्तविक बात ह हमारी भावना की । अब मैं बूढ़ा हू न, तुम्हारी बहू
आशीष कर जा रहा हू । इन शय्या को इनाम समझो, मेरी आर से ।
चन मुझे पता चला है, बड़े दरोगा न तुम्हारी रूढ़ की बड़ी प्रशंसा लिख
नजी हू, अपन अधिकाग्या व पाम । हो सक्ता है, जिले के सदर मुकाम
मे बटे अधिकागी आये । तुम्हारी बहू का पुष्कृत करें । कुछ और नारिया
नी आग आये गमाज म काम करें, यही बड़े दरोगा की अपेक्षा है । वह
नी बड़े घर का है । रिश्वत लेना पाप मानता है ।' उमने जेब से पाच
हजार रूपय की गडडा निवाली और मुद्रिया व सिरहान रख दी ।
मुद्रिया मुह पर धाना का परेला डालकर पटी थी । जब चौधरी न रूपय
रखे, तो वह महसा उठ बैठी और आना हाव चौधरी व पैसे की आग
रक्षाकर हाथ जोड़ने लगी ।

विश्रम वाला—'तू बहादुर है । तुझ पर यह समूचा गाव गव कर
सक्ता है । अब मेरा सत्रय ठीक हू । कभी आयेगा, इस ओर । अब उसन
गराव पीनी छाड दी, बड़ी कीमती गरगव की बातले इकट्ठी कर रखी
थी उसने, सब तोड दी । शराव नाली म बहा दी । उसके साथियों म
जब एव भी ऐसा नहीं होगा, जो गराव पीयगा । मेरा घर नक बना था
रूढ़, तू न स्वप बना दिया ।'

चौधरी उठ चला । वह घूघट बाढे गड्डी यशोदा को देखकर बोला,
'बड़ी भाग्यवान है तू ऐसी बहू बड़न म भी नहीं मिलती । यही तरी बेटी
है, बेटी है । सम्भाल कर रखना' इम बहू को, कीमती हीरा है ।' वह
लौट पडा । गमगम दूर तक साथ गया । रास्त में ही विश्रम बोला—
जब हमको बदल दना चाहिये, अपन जापको । तभी गाव का भला
येगा । तुम्हारी बहू न बहुत ऊचा काम किया है । यह तो स त लो

काम था। जान कम इसक दिमाग म यात आयी। तुम्हारी बहू मेरे घर न जाती तो लडका नही बचता। पैसा प्रत्येक जगह काम नहीं देता। तुम्हारी बहू था पौगप अजेय था, अनोखा था। जब तुम घर जाओ। मैं चला जाऊगा।

रामदास न कहा — अच्छा राम राम।'

'राम राम, चौधरी।' वह जाग बढ़ गया। रामदाम भी घर की आर नही सौटा, अपने खेतों का आर चल पडा। उसने दूर से देखा कि चौधरी विन्नम का फाम लहलहा रहा था। देखकर यह बोला, 'उसे गेहू गाव म विन्मी क नही हगि। भाग्यशाली ह, विन्नम।' 'वह तजों स जाग बढ़ गया। उसक मन म यात थी कि जब भगवान दता है, तो छप्पर फाडकर दता ह एक समय बहुत बुरा आया था, इम विन्नम का। गाव से उअड जान वाला था। परंतु अपन को सम्भाल बठा। यही से रुपय की मदद मिल गयी, तो विपत्ति क उस अघड मे पार हो गया। सब मुना था इसकी समुराल न मदद की थी। वह घर भी पुराना ह विन्मी राजा स कम नही। बडी बात समझो कि जो आज बहू का पाच हजार रुपय द गया। अब झगडा तो काई रहा नही। दरोगा लिख-मड गया था। कौडी-कौडी पर जान दन वाला जाज इतना उदार बना शायद घर वाली ने कहा होगा। हा सकता ह इस काम मे बैठा भी अगुवा बना हो।

दूप तज हो चली थी। चौधरी रामदाम एक पड के नीचे छटा हो गया। आखा के सामने ही उसक खेत थ। अत्र उसके पास अधिब जमीन नही थी। थोडी जमीन मलखू की बीमारी म बेच दी थी। स्वय तो अब काशत कर नही पाता, बटाइ पर बरता था। बटाईदार जितना द दे, यह उस पर निभर था। रामदास जहा छडा था, यही पर उसके गेहू कटकर लाये जाते थे। महीना दाय चलती थीं। उस समय यशोदा जवान थी। गाव से पिया के लिए रोटी, छाछ लाती थी। रामदास रोटा खाता और यशोदा के रूप का रसपान करता था। कभी कभी यशोदा मिडवती, रोटी खाते ही या मुझे दघत हो। एक समय मे एक ही काम हाता है वा नही।

तब रामदाम आशुस हा उठता। वह मस्ती म भर जाता। अमहाप्ति

बनकर रहना है, मज करता है, तुम्हें दरो जाऊ। अफमोस तो यह है कि नू औरतजात है। सडका होनी तो साथ में काम करता। कधे म कथा मिलाकर चतता।'

नव योदा हस पडती 'ममझ लो, में सडका हू। कहो ता, साथ काम कर। मुझे तो घर में जाकर बैठना है नहीं वहा भी काम करना है।

उसी समय रामदाम की दृष्टि पड कर एक तो पर गयी, दा पथी परम्पर चोच मिलाये बँठे थ। उनकी आँखें बँद थी। न जाने वे दोना किम नैमर्गोक मुछ में छो गये थ। रामदाम एकटा दष्टि में देखता रहा। यह मोचन लगा, दाग। आदमी भी एसा ही सुछ प्राप्त कर सक्ता। यहा न अमियान है, न आशवा ह हा, यह विक्रम चौधरी रात म टीक स सो नहीं पाता। या तो बिस्तर पर बँठा रहता है, या घूमता है। नीकर हाय म बँदूक लिये रात भर पहरा देता है। भला पूछे कोई इतना बडा विशाल भवन बनवाकर क्या पाया, इसवे पुरखा ने। आज यदि बनवाया जाय, ता साधा रुपया लग। इटा का भट्टा भी अपना लगवाया था। पैसे की बात है मवान के सामने ही फाम ह। बाग है। तरह-तरह के आम सीची और सन्तरे पैदा होने हैं। शहर में बडे-बडे अधिकारियो की डाली भेजता है, जो भी बडा अफमर आता है, इसी में महा ठहरता है

चौधरी रामदाम लौट पडा। जब वह गांव की तरफ जा रहा था, तो एक व्यक्ति सामने स आता दिखाई दिया। वह भी किसान था। अपना खेत देखन जा रहा था पाम जाकर वह बोला—जाज सँस आय चौधरी।'

रामदास बोला—'चला आया था, खेत देखन।'

'इस बार ता तुम्हारा खेत की फमल अच्छी है।

'हा, अभी तक तो ठीक है।

कीन है, तुम्हारा बटाईदार —रामभरोसे।'

'हा, अभी तक तो गही है।

आदमी ता भला है। नक्नीयत भी है।

'अजी, क्या खाक भला है। मेरे इन खेतों की बदौलत दा भैंसे पाकता

“ दूध बचता है। भमा का चारा इही खेतो में जाता है। ”

उस व्यक्ति ने कहा—“चौधरी यह सब तो हागा। घाड़ी घात में यारी करे तो भूखी मर जाय। रामभरासे का भैंसें दूध इही खेतो की पत्नीलत देती है। वह वाला—‘अब तो तुम्हारा छोटा लडका बड़ा हा चला है। खुद काशत कराओ। बटाईदार से कुछ मिलता नहीं।’

‘अरे, भैया ! मलखू क्या मरा, मेरा, भाग्य फूट गया। मैं निरस्त्र हो गया। बूढ़ा हूँ इसलिए काम नहीं होता। छोटा लडका खेतों नहीं करगा। यह तो मेहनत का काम है। मिट्टी के साथ मिट्टी बनना पडता है !’

‘हा चौधरी ! यह तो सही है। मुझको ही दया, दोना लडका लगत है घरवाली लगती है। और मैं भी इन्ही खेतो के चारो तरफ घूमता हूँ। बड़ी मेहनत का क्या है यह किसानो का।

चौधरी रामदाम बोला—‘लकिन किसान फिर भी नहीं साबता। बल के साथ काम करन वाला अपना दिमाग भी बँल सरीखा रखता है। बात-बात पर लडाईं झगडे और धाना कचहरी इस किसान की मेहनत की कमाई शहर वाला की जेब में जाती है।’

बात सुनकर आग-तुक चुप रह गया। तभी वह अपनी लाठी एक इट पर बजाकर बोला—‘लेकिन चौधरी, तुम्हारे मलखू की वह बड़ी समझदार गिनती। तुम्हारी ता गाव के बडे घर से लडाईं छिड गयी थी बहू न वह बचा दी। शिवा की तरह जहर का घूट स्वयं पी लिया। दोना घरा को बचा दिया। मैंने सुना है दरोगा भी तुम्हारे पक्ष में था। विक्रम का हजारों रुपया पानी में चला जाता, और-ता और यह भी बान उड चली थी कि चौधरी विक्रम का पुत्र पुत्रिम न मारा था। वह अपमान को बरतास्त नहीं कर पाया। खून की उटी करन लगा था। लेकिन तुम्हारे मलखू की बहू चुटीली बनकर भी बहा गयी। उसके मन में बठा भय दूर कर जायी शाबाश उम औरत का ! जब भी कहीं चार आदमी बठन है, तो यह बात चलती है। अब तो सुनत है, विक्रम ने अपने को घन्त दिया है। चेतो चमार की लडकी का विवाह था। बारात का ठहरन के लिए कोई जगह नहीं था। चौपाल में बारात आकर नहीं ठहरी। लेकिन विक्रम चौधरी ने जब यह बात सुनी, तो चेतो का बुलाया। जनता दावान

ज्ञान चुनवा दिया। बागन के लिए ट्यूबवेल भी नलना था। बुद नी चना के घर गया और कुछ दे लाया

गमदान वाला—अब स्वयं बूटा हा गया ह। उन भी जान चाहिये। शहर में एक बड़ा बगना बनवा रखा है, मुना ह कि सडका बहा रहेगा। अब वह गाव मे रहना पमद नहीं करता। कहता है, यहा असभ्या और जाती नोगों की त्रमान है। नेकिन उसकी मा इतक दिनाफ है। यह अपने पति को उक्कारी ह। उनके बच्चे शहर के स्कूल में पढत हैं। उनकी दत्र-रेख के लिए आदमी रटना पडता ह। हफ्त न मोटर जानी हैं और बच्चा का ले जानी है।

तत्र नमने कह गया—चौधरी, सब माया का तल है। चौधरी विजय गाव के लोगो का न जोगी विरादरी मानता है न किमी न भाईचारा रखता ह। वह अपन को श्रेष्ठ ममथता ह। वह चन दिया।

तत्र गाव की आर चनते हुए, गमदान के मन म बात उठी इत इन्तान मे एकता कैसे हो ? भाईचारा कैसे हा। यहा तो सब अलग-अलग हैं। निमाग अलग, सोचन का ढग अलग। उमन पर तेज विसे चौर वाला—'यह पैसा ही मत्र विप्रह करता है। हमारे पुरखो ने इत पैसे न अपना मध्यस्थ बनाया, यह अच्छा नहीं किया। आदमी माने चाडी के सिक्कों का सचय करन लगा। अब मरकार ने नोट छापन शुरू कर दिये है, ताव भी जमीक्षेत्र जाने लग मुना नही 'किमी न कर' हजार रुपये के नाट चूल्ह की जड म गाड दिये थे। जब निकाने, तो बहा मिट्टी का बुराग हाय लगा। नोट दीमक ने चाट लिय।

घर जाकर द्रष्टा कि चरूतर पर मुकेश और उसकी मा। उसकी मा ने कहा—'तुम्हारा बटा पाम हो गया। अब कालेज म जायगा।

गमदान चारपाई पर बैठ गया और बोला—'कालेज का खर्चा कौन परदागन करगा।'

यगोदा बोली—वह कहती है, मुकेश का खच वह दगी।

चौधरी तीखी भाव मे मुस्कराया—'वह कैसे देगी। उनकी बना अलग काश्त होती है। दुकान चलती है या बारखाना ?

यगोदा न कहा—कुछ भी हो, जब सडका पडना चाहता है, तो

पढ़ाना पड़ेगा। हम अपना घर का खर्च कमकर देंगे। भगता दूध बच दिया जाएगा। उसकी आमदानी में मुकेश बचसेगा।

'जी हाँ! रात को जरा सा दूध मिल जाय तो तुम यह भी बंद कर पाओगे। रामदास बोला—'यह बात सुनन में तो अच्छी लगती है, परन्तु हमारा व्यवहार स्वरूप क्या है। उमन कहा—'मैं आज नेता पर गया था। कमल अच्छी है। परन्तु हम क्या भिनगा। इतना भगवान जान।'

यशोदा बोली—अब मैं पहल में अधिक चौकनी हो गयी हू। मैं कभी-कभी अंधेरे में नेता दू आती हू। जब पटेंगे गड़, तो अपना अधिक समय बड़ी पर दूगी। अपना मामने अनाज का बटवारा करूगी। मैंने देख लिया है। रामभरोस गालाक है। उसकी बटू भी मकरार है। और-तो जीर, उसके बच्चे अंधेरे उजाल में खेत में बरसी काट जान हैं। तभी तो भस पल रही हैं। कई-कई हजार की हू, वे भस।

मुकेश बोला—'आप न चाहता मैं पढ़ना बंद कर दूंगा। बस अब खेती में कुछ मिलता नहीं। पसा चाहिए आदमी चाहिए। बीज, खाद और पानी के लिए पैसा चाहिए।'

'हा बेटा! तू ठीक कहता है। अब खेती करना भी एक व्यापार है। सबकी शक्ति इस काम में कारगर नहीं हो सकती। तू पढ़। बीए कर लेगा, तो वही किसी अच्छी नौकरी पर लग जाएगा।

मुकेश बोला 'यह भी जरूरी नहीं पिताजी! सब सयाग की बात है।'

चौधरी रामदास ने पुत्र की ओर देखा, उसे सराटा। लड़का शरकर का बात कर रहा था। समझदार हो चला था।

उसी समय एक व्यक्ति वहा आया और हाथ में लिया अखबार लिखाता हुआ बोला—लो, पढो चौधरी! पुलिस के सदर मुकाम में जोरावर ने आत्म-समर्पण कर दिया। अपना गोलिया से भरा पिस्तौल पुलिस कप्तान को सौंप दिया।

चौधरी रामदास बिस्फारित हो उठा। वह कभी उस आदमी का देखता, कभी पास खड़ी यशोदा को। तब मुकेश वह अखबार लेकर घर में दौड़ गया, भाभा के पास।

किया अपन आपको जीवन की गंगा में डुबोए। उन दुहरे पत्र में अपन का पथक कर ले।

यो रात दिन सुधिया के प्राणा में जहरीला धुआ घुट रहा था। वह स्वत ही तड़पती। किसी घायल पछी की तरह पत्र फड़फड़ाना। निश्चय ही उन दिना सुधिया अपधिक पीडित थी। उमका कठिनाई यह थी कि अपन मन की कथा किमी के ममल प्रकट भी नहीं कर सकती थी। उस अवस्था में उमे भ्रष्ट रहा जाता। बुल लकिनी बताया जाता। और कोई कुछ कहता या नहीं, परंतु यशोदा नाच नोचकर उस घायल बना देती। सुधिया को पता था कि उमका मसुर निपट जनाडी था। निरक्षर तो था ही बुद्धिहीन भी था। वह गवार ग्वालिय के समान, आदमी को डार की तरह हाकता था। बात-बात में लाज उठाता था। आय दिन वह यशोदा में लडता था। गालिया बकता था। इसलिए घर में और बाहर काद भी व्यक्ति या औरत एसा नहीं थी कि जिससे सुधिया अपन मन की बात कह पाती। वह निपट एकाकी थी। यद्यपि वह गाव था। वहा स्त्री पुरुषों का ममाज था, लकिन सुधिया का अपना कोई भी हितू नहीं दिखान पडता था। वहा ऐसा शुभेच्छु नहीं था कि सहानुभूति के साथ सुधिया को बात सुन ले और उचित राय दे।

किन्तु एक दिन जब सुधिया देर तक चारपाइ से नहीं उठी, तो यशोदा उमके पास आई। वह अपन स्वर में नितांत ममता का भाव लेकर बोली—'बहू, आज उठेगी नहीं। दस दिन चढ गया। चौपाये भी जगल को चले गये। किसान अपन हल न गये। नर पिताजी भी चाय का एक प्याला पीकर सेतो की तरफ गये हैं। जब गहूआ की कटाई शुरू हो गयी है। वहा एक का रहना जरूरी है। तू उठ, मुह-हाथ धो। तेरे स्कूल का भी समय हो जायगा। मुझे भी धता पर जाना है। दाल राटी बना लेना।'

सुधिया उठ बैठी। परंतु वह उदाग था। उसकी आँखें भी लाला लाल दिखती थी। यही देखकर यशोदा बोली—'क्या बात है बहू, आज कल तू उदाम रहती है। बोल तो, कुछ मन में लिय है। वह अशाक किंग लिय आता है। क्या उसमें स्कूल का काम काम लेती है।'

सुधिया न बताया— आजकल अशाक में स्कूल का छुटिया है।

वह मुझे कुछ देर के लिए पढ़ा जाता है। वह अध्यापक है, इसलिए पढ़ाई की कला समझता है।'

'हां, यह तो है, बहू! परंतु उसे भी ममझकर रहना है। यह अशोक अंग्रेजी स्कूल का मास्टर है, मुझे तो ऐसे लोगो से डर लगता है।

उस समय सुखिया को यह अच्छा नहीं लगा कि अम्मा अभी पर मद्दह करती है। एक दिन वह जगजीवन आया था, तो उस पर भी शक करने लगी थी। जब तक वह मेर पाम बठा रहा, भर चारा ओर चक्कर काटती रही मडी हुई नाली इस अम्मा के मन में पाप ही भरा है। बदबू है, सडाव है। भला पूछे कोई हमसे जब किसी के मन में कोई आकाशा पैदा होगी, तो क्या यह राव लेगी चारा तरफ की दीवारें गडी करके भी उसे नहीं रावा जा सकता

वहा से जाती हुई यशोदा बोली—'जल्दी कर। अब मुकेश की भी फुट्टी हो जायेंगी। वह भी खेत पर आता-जाता रहगा। तुझे तो वह भी पढा सकेगा। दस जमात पढ चुका है, अब ग्यारहवीं में जा रहा है। दो-तीन वर्ष बाद बी० ए० कर लेगा। अब तब तो यह किसान का घर था, लेकिन आगे इसका रूप बदल जायगा। कमर में मेज कुर्सी लग जायेंगी सोफा और न जान क्या-क्या हा रात कह तो रहे थे मुकेश के पिताजी, मुकेश की बहू बेपदी नहीं होगी। अब तू पढी लिखी होती तो मास्टरनी हो जाती। हाकिम हुक्काम सभी तो तरे पक्ष में है। तारीफ करते हैं।

यशोदा बाहर चली गयी। चबूतर पर किसी से बात करने लगी। उसकी आवाज सुखिया के कानों में भी आती रही। तभी वह स्वत ही बोली—'न जाने किस धातु का गला बना है इस अम्मा का। जब दखो तब, बोलती रहती है। इस घर में दानों का गुस्सा तेज है पिता का गुस्सा भी नाक पर रखा रहता है। निपट गवार है दाना। जिंदगी पानी में बहा दी। एक बार भी नहीं सोचा कि इसान किस प्रकार तरक्की करता है। अपना भाग प्रशस्त करता है। लोग कहीं-से-कहीं पहुच गये और ये दोनों कूप-मण्डूप बने हैं। बाप-दादा द्वारा अजित थोड़ी-सी जमीन है। उसी पर इस गृहस्थ की गाडी को खींच रह है वेचारा मुकेश फटा कुरता पहने स्कूल जाता था। मैंने जब कपडा दिया, तो

दमरा कुरता मिल पाया । यदि मैं न रूँ तो जारावर का लडका भी भूख म बिलबिलाता फिर । यह कहा जाता है, किम्वे साथ खेलता है, यह जानन की किसी की आवश्यकता नहीं । मैं तो चाहती थी कि राहुल अपना ठिकान पर जाय । जारावर के माता पिता इस बालक को रखें । परन्तु जारावर का मेरा यह विचार पसन्द नहीं था । वह यह भी नहीं चाहता कि उसका माता पिता को पता चले कि राहुल उसका बच्चा है । सस्वार अच्छे नहीं ह इन बुजुर्गों के । जारावर ने जिस लडकी को अपनी पत्नी बनाया, वह किसी अच्छी जाति की तो थी नहीं शायद अत्यज थी । य दोना परिवार यदि यह सब जान लें, तो इस राहुल का रहन क लिए न यहा जगह मिलगी, न वहा जोरावर क घर पर । बडे म्लच्छ विचार ह इन लोगो के । इह पसा चाहिए, आदमी नहीं । जारावर की मा ने एक बार भी आकर नहीं कहा कि मेरा जोरावर अब नहीं मिलगा इस जीवन म मुझे दिखायी नहीं दगा । याक पडे इस मा जेठे के सम्बन्ध पर । लगता ह, यह औरत भी नहीं समझती कि न जाने किस सस्वारवश वह एक बच्च की मा बनी है । धम जीर सस्कृति का स्वर अब औरता के प्राणा म नहीं गूजता । ऐसी मा का नहीं झकझोरता । बट का मुह खिने के लिए याकुल नहीं करता ।

उभी समय पडोम की एक युवा लडका आयी । सुखिया को एकाकी देखकर बोली—‘अब तुम्हारा बहुत काम बढ गया है, भाभी । चाची ता खेत की तरफ जा रही थी ।’

सुखिया न कहा—‘हा, कटाई चल रही ह ।’

‘हा, भाभी । यही दिन है जब किसान अपनी महनत के चार दाने घर म लाता है । बाल-बच्चा की गुजर करता है । इही दिनो शादी-ध्याह भी किय जात है । अजीब जिदगी इस इंसान की । कशमकश से परिपूरित ।’

सुखिया मुस्करा दी ‘अब तो तू भी गंगा की धार पर चढ़ा दी गयी है । ध्याह हा गया तो जिम्मेदारी का बोझ सिर पर उठाने को बाध्य होगी ।

लडकी का नाम रामी था । वह बोली ‘भाभी, यहा मा-बाप के

घर भी क्या चैन स रोटी मिलती है। सुबह उठो तो चक्की पर बैठो। फिर बूल्ह पर। झाड़ू बुहाहू दो। एक काम तो नहीं अनेक काम हैं। रात को जब चारपाड़ पर पडती हूँ तो कमर टूट जाती है। उपर से तुराँ यह कि किमी छोट भाई-बहिन का पाम सुलाओ। टट्टी कर द, तो माफ करो। पेशाब कर द, तो कपडे बदलो।'

सुखिया हम पढी—रामी, मा-बाप का घर ही लडकी का स्कूल है। उही से सीख कर जाती है। खाना बनाना भी मा-बाप के घर सीखती चम पर भी, तमाशा यह साम महारानी की दस बातें सुनो। पति देवता को खुश करने के लिए रात की रानी बनो। माग चोटी करा। माग मे सिद्ध भगो। माथे पर विदी और अब तो लिपिस्टिक पाउडर लगाना भी आवश्यक बन गया है। आखा मे काजल लगाना भी जरूरी ह।' वह हम पढी। रामी भी हस दी। वह बोली 'आज पुरानी बातें जैसे याद आ गयी।'

सुखिया बोली—'मैंने यह सब नहीं किया। सुविधा नहीं थी। माग नहीं थी। तुम्हारे भया तो मीधे-मादे थे। घर मे हात तो रोटी खाकर पड जात। जब मैं घर के कामा मे निपट कर जाती, ता खगटि भरत होत। मैं जगाती, तो जागत।'

रामी हसती 'अमली बात रोकती हा भाभी।'

'अरी अमली क्या, नकली क्या? मेरा सोहाग तो कुछ दिन का पा। बसंत की बहार की तरह आया और निकल गया। अब बहार के दिन तो तुम्हारे हैं। मुना, कब प्रोग्राम ह पिया के घर जाने का।'

रामी बोली—'भाभी नहीं नौकरी लगी है। वहा रहने को जगह मिलेगी, तो जाना होगा। आजकल शहरा म यह सयस बडी पेशानी है।'

सुखिया वाली—अब जिदगी का मजा नहीं रहा। सोहाग क दिन भी हवा की तरह आते हैं और नियस जाते हैं। किमी को चैन नहीं। उसने कहा—'मैं स्कूल क काम से कुछ घरा भ जाती हूँ, जब वहा के करण दृश्य देखती हूँ, तो अपनी पीडा भूल जाती हूँ। तीमरी गली मे एक घर है, रामदीन का। उसका लडका महेश अभी कुछ दिन हुए

अपनी बहू को लाया है। लेकिन सिर मुड़ात ही बच्चार के सिर पर आल पड़े। इधर बहू को लाया, उधर नौकरी छूट गयी। लाला को एक सस्ता आदमी मिल गया। जिस दिन मैं उस घर गयी, ता दा दिन की भूखी थी उस महेश की बहू। घर मे दाना नहीं था। साम श्वमुर उस ताडना द रहे थे, यह कम्बख्त है, दुर्भागिनी है। तब मुझसे रहा नहीं गया। बड़ी लताड दी, उस महेश के बाप को और मां को। पान्न रुपय मेरे पास थे, वह दे आई।'

रामी ने कहा—'भाभी, घर घर यही अवस्था है। भर घर के बराबर म एक रहता है। बच्चार ने खेत काटा, अनाज निकालन व लिए रखा। किसी ने जलती हुई बीड़ी फेंक दी। रात म तज हवा चली। सब राख हो गया। वह इन्ही गर्मियों म लडकी का विवाह करने की बात मोच रहा था। परंतु सब धरा का धरा रह गया। अब राटी के लाले पड गय। रात मेरी मा उसकी बहू को थाडा सा आटा द आयी था। अब लोग सोच रहे हैं कि परस्पर चंदा करें और उमकी लडकी के हाथ पील कर दिय जाए। विवाह की तिथि भी तय कर दी थी।'

सुखिया ने गहरी मास भरी—हा, बीबी। दुखा की कोई सामा नहीं। किस पर किस विपत्ति का पहाड टूटे, कोई नहीं जानता। उसने रोटी बनाकर कटोरदान म रख दी। फिर अपन को तयार बग्ने के लिए चल पडी। जब सुखिया स्नान करने और कपडे बदलकर तयार हुई ता तभी सास-ससुर घर म आये। यशादा ने घर के चौक म लडी हाकर कहा—'बहू, मैं तुमम सुबह बहती थी न, इन आजकल क लडका का कोई भरोसा नहीं। दख रामनरायन की लडकी रात स गायब है। बट हिमाशु है न वह उस पढाता था। रात स वह भी घर पर नहीं।'

सुनकर सुखिया चकित बनी—'पुलिस म रिपोर्ट कर दो होगा।'

न बहू! लडका या बाप रिपाट करने तो जा रहा था परंतु नोगा न राक दिया। लडका भी ता कुटुम्बी था। एक जाघ दिजाए तो नगी दूसरी दिग्गण तो नगी

उस ममय चौधरी घर म जाया। बोला—राटी दा। भूख लगी है।

नब सुत्रिया न रोटी परोम दी और चौधरी के सामने रख दी ।

यशोदा बोली—'पावल गाव मे क्या हो रहा है, यह मैंने बहू का बता दिया है ।

चौधरी वाला—'तू तो पागल है । इतनी बड़ी दुनिया है । कुछ-न कुछ तो होगा ही । जब हवा ऐसी चल रही ह, तो कौन रोक सकेगा ?' उनने कहा—'अभी चार दिन हुए मन्दिर पर भी एत घटना घटी थी । मन्दिर पर एक माधु आ गया था । किसी ने उसे मन्दिर के पीछे एक गड्ढे म पड़े देग लिया था एक लडकी के साथ । वह लडकी जिसकी भी उसना तो नाम लिया नही गया । साधु को मारा पीटा । यह बेपारा बना गया ।

'तो तुम उमे 'बचारा' कहते हो । उसका गला काटना चाहिए था ।'

'जी हा ! तुम्हारा राज हो तो मही सब चलेगा । क्या लडकी का कोई दोष नही । जवान लडकिया दीयानी बनी फिरती हैं, गांव के गलि हागे मे । उह भी ता मजा मिलनी चाहिए । लेकिन धोर धोर सब मीमेर भाई' की कहावत चरिताथ हो रही है । घर म बँठवर लोग शराब पीते है । बच्चे-बच्चिया सब देखते है । मुझे पता चल गया था कि वह लडकी किसकी था । वाप मे जमाने भर के ऐब हैं । शराबी है, जुआरी है और दूसरो की बहू-बेटिया को हडप जागे वाला ।

यशोदा ने कहा—'रणजीत होगा ?'

'अरी छाड न ? तू तो बाल की ग्यान निवालती है । गाला पार था, तुझे क्या !'

'अजी सोचना तो सबका पडता है । गाव की बेटी, सबकी बेटी !'

'अब बट जमाना नही रहा ।' चौधरी गड्ढा हो गया । 'मुंह साफ करके जब बाहर चला तो कहता गया, सिलाम मे आम रख देता । और उमन स्वर पर जोर दिया—'बहू तर स्कूल का समय हो गया । औरतों आन लगी ह । अग, अशोक भी आ गया ।'

अशोक' शब्द यशाग के माना म अटक गया । परतु उसने कहा कुछ नहीं । जब सुत्रिया सिलाम के कमर म गयी, तो यह अशोक घोटा ।

मुखिया ने कहा—‘गटी तो कई दिन म ल जाते हैं । मुझसे ता आज कहा, नहीं तो चुपचाप निकालकर ले जान थे ।’

यशोदा का मन व्याकुल हो उठा । उस कुछ म-दह हुआ और चुपचाप घर में निकलकर तोता के घर की ओर चल पड़ी । गाव के बाहर जहा मदा हुआ पानी भरा था, बदन उठती थी, उसी के समीप तोता का घर था । घर क्या था, माटी का धगोदा था । कोठरी के द्वार पर जात ही, यशोदा ने देखा कि उगवा पति रामदाम उस बूढ़े तोता का बैठाकर अपने हाथ से रोटी खिला रहा था । यशोदा के लिए वह बड़ा ही अवलम्बित दृश्य था । आँखें भर आई । वह अत्याधिक अनुमूनि से आविर्भूत हो उठी । उसकी इच्छा आई कि अ-दर जाये, परन्तु वह बाहर से लौट पड़ी । उसे लगा कि उसका पति अब बदल रहा है । जीवन भर वह उसे जिम रास्ता से नटाने का प्रयत्न करती रही, अब वह स्वत ही उससे हट रहा है । पशु भाव छोड़ रहा है और सात्विक स्थान प्राप्त कर रहा है । उसे पता था कि यह ताता नित्य ही मन्दिर पर जाता और चबूतर पर एक तरफ बैठा आँखें बंद किये, दोना हाया की तालिया बजाता हुआ हरे रामा, हरे राम का जाप करता था । जब अधिक बूढा हो गया है । अशक्त हो चला है । दियाई भी कम देता है ।

घर लौटकर यशोदा ने मुखिया को बताया कि अब तरा समुर मीग मारन वाला भैंसा नहीं रहा, सीधा-मादा आदमी बना है । उम तोता का अपने हाथ में रोटी खिला रहा है ।’

मुखिया बोली—‘अम्मा, ममय अब कुछ कराता है । जाँमी भी बदलता है ।’

यशोदा बोली— मुखिस नहीं कहा और घर से चुपचाप रोटी न जा कर तोता को खिलाइ जाती है ।

मुखिया हस दी—‘तुम रोज दती अम्मा । रोटी से जान देख झगडा करती ।’

नही री । मैं ऐसी मूख तो नहीं । यह तो पुण्य का काम था ।

मुखिया बोली—‘तुम भिन्नारी का ता दो चुकटी आटा दे नहीं पाती, रोटी कैसे ल जाने देती ।

वात बहवी थी, लेकिन माफ थी। यशादा चुप रह गयी, यह नौकर व लिंग गटी लेकर खेत की तरफ चल दी। उगी समय वाली—'तू कही जाए, ता बाहर का कुण्डा लगा जाना। देख, तरा घर घर जाना अच्छा नहीं लगता। अब तुझे घर का काम करने का भी समय नहीं मिलता। इस तरह किस काम चलगा?'

सुखिया बानी—'अम्मा, जब तर काम करना शुरू किया ह, तब उम आर भी देखना पड़ेगा।'

यशादा घर में जा बात मन में लिय थी, जब वह बह बहठी, तो वह चुप नहीं रही। वह की बात सुनकर वाली—'तब तो घर का काम करने व लिए किमी नौकर या नौकरानी की दरवार होगी। अपने समुर स कहना घर का इन्तजाम करें। मैं जगल के खेत भी देखू और घर का काम भी सम्मालू, यह मुझ से नहीं होगा।' वह चली गयी।

तभी सुखिया के मन में आया, इस अम्मा को मरू नहीं। काइ जालमी मुझसे आवर वाल ता वह भी लगता। वह अशोक आता है तो इस अम्मा की गडता ह। इसका वस नहीं चलता, मर परा में जजीर बंद कर दे और ताला लगा दे दगा, कितनी घर पहुँच गयी। आखो मैं देख आर्ट कि रोटा और

जल्दी-जल्दी घर के काम निपटा कर जब पु लिए धोनी बदलने लगी, ता स्वत ही बोला, 'अम्मा! इनक पट में चार रहता ह। जब वह मिलाई की मशीनें गाफ करने लगी ता बोली, मैं जाऊगा। घर में बिद्राह ना होगा, बात का नहीं सबती। बच् जारावर मेर कहन पर ही आत्म क्या पता सरकार उम कौन-सा दण्ड देगी। ज जारावर अब ज्ञासी नहीं जा सकता, लम्बी सजा पागा, तो जल्दी जेल से मुक्त कर दिया जा। सरकार न बहुत से यूनी डाकू अवधि से पूव ही छोट

दिया है और वे बाहर जाकर अपना सरकार का काम करने लगें हैं
सरकार का मसला उनके सुधार का लक्ष्य है, न कि प्रतिशोध का ।

यह सत्याग्रही की बात थी कि उसी समय नीचे से जगधर की आवाज
आई—‘भाभी हू क्या !’

ऊपर कमरे में मुखिया ने कहा—‘ऊपर आओ, भैया !’

जगधर ऊपर आ गया। बोला— आज छुट्टी थी। तुम्हारा आवेदन
पत्र जेल अधिकारियों के पास पहुँच गया। मिलाने करने वाली में ताऊ
रामदास का भी नाम है।

सूत्र भाव से मुखिया मुस्कराई— भगवान जान वह जायें या
नहीं।

जगधर बोला—‘मैंने नाम लिख दिया था। न जाय, उनकी इच्छा।
जब शायद तुम्हारा जकन जाना पसन्द न आता।

मुखिया बोली—‘भैया बड़ी कठिनाई है। अभी कुछ दूर पहन
लम्बा लड्डू नहीं है। कहती है तब घर घर जाना शुभ नहीं। घर का
का काम कौन करें? उसने कहा काट पूछे इनमें, मिलाई के स्कूल से जो
पता जाता है, वह तो लत बुरा नहीं लगता और मेरा इस काम में लगना
पसन्द नहीं आता। अब तो घर का आधा खर्च वह स्कूल वहन करता है।
मुँह की पढाई का खर्च, मुँह देना पड़ता है।

जगधर बोला— भाभी, यह जगली लोग की बस्ती है। यह अच्छा
हूँ कि तुमने अपने आपका ऊपर उठा लिया। इस बात से बाहर
कर लिया। मचमुच, तुमने इस जीवन की धारा में अपने आपका पखाव
है। तुम्हें वैधव्य तो मिला लेकिन किसी दूसरे जन्म का मस्कारो ने तुम्हें
उजागर बनाया है।

मुखिया सहज भाव से मुस्कराई। मोती सरीसृप दाता से हस दी।
तभी उसका मन में आया कि जगधर से कह दे, मैंने उम जोरावर को भी
बचर और दुर्दान्त बने खूनी जीवन से बाहर निकाला है। वह मेरे
अनुरोध पर ही आत्म समर्पण कर बैठा है। परंतु मन का वह उद्गार
वह राक बैठी। वह तुरंत ही समझ गयी कि मुह से निकली बात उनके
लिए काल बन जायेगी। यह जगधर गात्र में फला देगा और तिल का

वान बटवी थी, लेकिन माफ थी। यशादा चुप रह गयीं, वह नौकर के लिए राटी लेकर घत ती तरफ चल दी। उमी समय वाली—'तू बट्टी जाए, तो ग्राहर का कुण्डा लगा जाना। दख, तरा घर-घर जाना अच्छा नही लगता। जत्र तुझे घर का काम करन का भी समय नही मिलता। इस तरह कैसे काम चलेगा?'

मुखिया बानी—अम्मा, जब तत्र काम करना शुरू किया ह, तब उम ओर भी दखना पड़ेगा।'

यशादा देर से जो बात मन म लिय थी, जब वह बट्ट बठी, तो वह चुप नही रही। वह की बात मुनवर वाली—'तब तो घर का काम करन के लिए किसी नौकर या नौकराती की दरवार होगी। अपने ममुर स रहना घर का इन्तजाम करें। मैं जगल के खेत भी देखू और घर का काम भी मम्मालू, यह मुझ से नही हागा।' वह चली गयी।

तभी मुखिया ने मन म आया, इस अम्मा को मेरा काम पसन्द नही। कोई जादमी मुझमे आवर बोले तो वह भी इस अच्छा नही लगता। वह अशाक आता ह तो इस अम्मा की आंखो म शूल की तरह गडता ह। इसका बस नही चलता, मेर पैरा म जजीर डाल द। कोठे मे बन्द कर दे और ताला लगा द देखा, कितना चालाक ह तोता व घर पहुच गयी। आखो! सख आइ कि रोटी वही गयी ह या नही और

जल्नी-जल्नी घर के काम निपटा कर जब मुखिया स्कूल म जान के लिए धोती बदलने लगी, तो स्वत ही बोली, मिजाज की गक्की है, यह अम्मा। इनक पट मे चोर रहता ह। जब वह ऊपर कमरे म जाकर सिलार्द की मशीने माफ करने लगी ता बोली, मैं जोरावर के पाग जरूर जाऊंगी। घर म विद्राह तो होगा, बात का बतगड बनगा, परंतु मैं रुक नही सकती। वह जोरावर मेर कहन पर ही आत्म समपण कर बैठा ह। क्या पता मरवार उमे कौन-मा दण्ड दगी। जगधर बताता था कि जोरावर अब शासी नही जा सकता, लम्बी सजा पायगा। चाल चलन ठीक होगा, तो जल्नी जेल स मुक्त कर दिया जायगा जगधर कहता था, मरकार ने बहुत से खूनी डाकू अवधि स पूव ही छाड दिए ह, उह समझा

दिया है और वे बाहर जाकर अपना सरकार का काम करने लग है
सरकार के समक्ष उनके सुधार का लक्ष्य है, न कि प्रतिशोध का ।

यह सत्याग की बात थी कि उसी समय नीचे से जगधर की आवाज
आता—'भाभी हू क्या !'

ऊपर कमरे में सुखिया ने कहा—'ऊपर आओ, भैया ।'

जगधर ऊपर आ गया । बोला—'आज छुट्टी थी । तुम्हारा आवेदन
पत्र जेल अधिकारियों के पास पहुँच गया । मिलाई करने वालों में ताऊ
रामदाम का भी नाम है ।

सूख भाव में सुखिया मुस्कराती—'भगवान जान, वह जायें या
नहीं ।

जगधर बोला—'मैं नाम लिख दिया था । न जाय, उनकी इच्छा ।
मैं तब जाऊँ तुम्हारा जरूरी जाना पसंद न आता ।

सुखिया बोली—'भैया बड़ी पठिनाई है । अभी कुछ तर पहल
अम्मा लटकर गयी है । कहती है, तब घर-घर जाना शुभ नहीं । घर का
का काम कान करें ?' उसने कहा बात पूछ इनमें, मिलाई के स्कूल से जा
पमा जाता है, वह तो तब बुग नहीं लगता और मरा इस काम में लगना
पसंद नहीं आता । अब तो घर का आधा खर्च यह स्कूल वहन करता है ।
मुँहश की पढाई का खर्च, मुझे दना पडता है ।

जगधर बोला—'भाभी, यह जगली लोग की बस्ती है । यह अच्छा
हूँ कि तुमने अपने आपको ऊपर उठा लिया । इस बात घरे से बाहर
कर लिया । सचमुच, तुमने इस जीवन की धारा में अपने आपका पखारा
है । तुम्हें वधव्य तो मिला लेकिन किसी दूसरे जन्म के मस्कारों ने तुम्हें
उजागर बनाया है ।

सुखिया सहज भाव से मुस्कराया । मोती मरीचे दाता से हस दी ।
तभी उसका मन में जाया कि जगधर से कह दे, मैं उन जोरावर को भी
बकर और दुर्दान्त बने खूनी जीवन से बाहर निकाला है । वह मेरे
अनुरोध पर ही आत्म समर्पण कर बैठा है । परंतु मन का वह उदगार
वह राख बैठी । वह तुरंत ही समझ गयी कि मुझे स निकली बात उमकें
लिए काल बन जायेगी । यह जगधर गाव में फटा दगा और तिल का

आदमी का तिनका की तरह तोड़ा, वहाँ रहकर वे गिड़गिड़ाते रहते हैं, याचक की तरह दात निचोरते हैं। काण, उसी जेल में सुखिया पहुँच पाती। अब वह उम्र दिन का वापस फिर कर नहीं दे पा सकती कि जब मन्मथदास जोरावर उसके पास आया था। वह उसके विवाह के पूर्व ही डाकू बन चुका था। किंतु जब सुखिया सुहाग की चूड़ी पहनकर उम्र का पति मलखू जोरावर का हाथ पकड़े वहाँ आया था। उनसे सुखिया को बताया था यह है, तुम्हारा देवर। नाम जोरावर। चाचा का लटका है।

सुनते ही सुखिया मुस्करा दी—'अच्छा ता तुम्ही हो, इमान का गाजर मूली की तरह काट देने वाले।'

जोरावर बोला—'यह बात ता फिर कभी की है, भाभी। अब ता मरा प्रणाम ला। यह भट ला।' और उसने गेशमी रुमाल में बंधे मोनक नजदित बगन सुखिया की ओर बढ़ा लिया था। उत बगनो को देख, सुखिया न बहा—'मुझे डर लगता है।'

'किससे? इन बगनो से, या मुझसे?'

सुखिया लजा गयी—'तुमसे ता डर नहीं लगता। इन बगनो से लगता है। जाने किसके हैं? वहाँ से जाये है? किसके होंगे? वह मार दी होगी, उसका घुम कर दिया होगा।'

जोरावर हँसा—'नहीं, भाभी। यह ता एक सूदखोर की तिजोरी से आये है। वह जन्म मारा गया। मेरी पिस्तौल की एक ही गोली से उसका काम तमाम हो गया।'

'ह राम, बड़े पत्थर हो तुम। लगत ता एम नहा।'

मलखू पास खड़ा था। बोला—'दिल का कोमल है, यह जोरावर। हमारे पापा ने दा घर कर लिया थे। मैं ता चाहूँगा, इन दा घरों की दीवार तोड़ दी जाय। दो घर एक हो जायें।'

जोरावर बोला—'समय आयेगा ता य घर एक बन जायेंगे। बीच की दीवार गिरा दी जायगी।'

सुखिया हर्षित हो उठी—'बड़ा शुभ दिन हागा वह उसने कहा— और करनी होगी। यह डाकू का पशा भी छोड़ दना पड़ेगा।'

ताट बनाकर दहगा वि मैं उन जाराव को प्यार करती हूँ। उमा समय तीन-चार युवा लडकिया और बहूए आइ। जगाधर उठ चला। जान-जाने बोला—'जब आवेदन का उत्तर आयेगा, तो मैं खबर कर दूंगा। वैसे अब मैं जल्दी नहीं आ पाऊंगा। शायद मेरा तबादला अयन हो जायेगा। अब पत्नी का गाव मैं छोड़ जाऊंगा। वह भी तुम्हारी जिप्या बन जायेगी। अच्छा है सिलार्ड का काम सीख लेगी।'

मुखिया बोली—'यह धंधा बुरा नहीं। मैं स्वयं बीम रूपय नित्य उमा नती हूँ। दा बनाऊज तैयार कर दिये ता इतन रूपय नहीं नहीं गये। स्कूल से जो पीस मिलती है, वह जलग। कुछ बहूए और लडकिया मुफ्त में काम सीखती हैं। वे गरीब हैं और छोटी जाती की हैं। गन्नाग ने जा मनायता दी, उमगे मशीन और इमका सामान आ चुका है।'

गदगद बनकर जगधर बोला—'भाभी, तुम अप्रब हो। ममूचा गार तुम्हारी प्रशंसा करता है।' उसने कहा—'बुरा न मानो तो एक बात कहूँ, तुम्हें ससुगल अच्छी नहीं मिली। य माम-ससुर दखन में हाड काम का आदमी तो है, लेकिन ह पशु। तुम्हाग मसुर तो पूरा जगली ह। माम ईर्षालु और कुटिल।'

मुखिया ने गहरी माम नरी और छोड़ दी। जब जगधर वहा में जाने लगा, ता वह उस बडे रहस्यमय ढंग से लखती रह गयी। जब तक वह सीढिया में उतरा नहीं, मुखिया उसके जूता की पद चाप मुनती रही। उसी समय एक युवा लडकी बोली—'इम जगधर की वह भा मिलार्ड का काम सीखेगी, बल कहती थी।'

मुखिया ने कहा— जो नी आये उसका स्वागत ह।

चिन्तु उम समय वह यौवनमयी मुखिया गाव से दूर, बल्पना का गहार उम जेल के द्वार पर जा पहुची थी जिसका अदर जाराव बनी का जीवन व्यतीत कर रहा था। वह लौह द्वार कितना बटोर था कि मुखिया अपनी शक्ति लगाकर भी उम नहीं खान मरनी थी। वह कभी किसी जेल के द्वार पर नहीं गया। परन्तु मुन गया था कि यहा हथियार बंद सिपाही रात दिन पहन लगात ह। वार्ड परिदा भी वहा पर नहीं मार सकता। उम जेल में खयाग कदी बंद रहत है। जिहनि कभी

आदमी को तिनक की तरह ताड़ा, वहाँ रहकर वे गिड़गिड़ाते रहते हैं, याचक की तरह दात निचोरते हैं काश, उमी जेल में सुखिया पहुँच पाती। अब वह उम्र दिन का वापस फिर कर नहीं दे पाती कि जब मधुप्रदम जोरावर उसके पास आया था। वह उसके विवाह के पूरे ही डाकू बन चुका था। किंतु जब सुखिया सुहाग की चूड़ी पहनकर उम्र का पति मलखू जोरावर का हाथ पकड़े बहा आया था। उनसे सुखिया को बताया था यह है मुझ्जारा देवर। नाम जोरावर। चाचा का लडका है।

सुनते ही सुखिया मुस्करा दी—‘अच्छा, ता तुम्ही हो, इतना का गाजर मूली की तरह काट देने वाला।’

जोरावर बोला—‘यह बात तो फिर अभी की है भाभी। अब ता मग प्रणाम ला। यह भेट लो। और उसने गंभीर रूप से सोन के अनजन्म बगन सुखिया की ओर बढ़ा दिये थे। उत कगना को देख, सुखिया ने कहा—‘मुझे डर लगता है।’

किससे ? इन बगनों से, या मुझ्जारा ?

सुखिया लजा गयी—‘तुमसे ता डर नहीं लगता। इन बगना में लगता है। जाने किसके है ? कहा में जाय है ? किसके होंगे ? वह मार दी होगा, उसका पूरा कर दिया होगा।’

जोरावर हँसा—‘नहीं, भाभी। यह ता एक सूदखोर की तिजोरी से आये है। वह अदर मारा गया। मेरी पिस्तौल की एक ही गोली में उसका काम समाप्त हो गया।’

‘ह राम, ! बड़े पत्थर हो तुम ! लगते ता एम नहीं !’

मलखू पाम खरा था। बोला—‘दिल का कोमल है, यह जोरावर ! हमारे पापा ने दा घर कर दिया थे। मैं तो आइगा, इन दा घरा की दीवार तोड़ दी जाय। दा घर एक हा जायें।’

जोरावर बोला—‘समय आयेगा तो य घर एक बन जायेंगे। बीच की दीवार गिरा दी जायगी।’

सुखिया हँसित हो उठी—‘बड़ा शुभ दिन हागा वह उसने कहा—‘एक बात और करनी होगी। यह डाकू का पंशा भी छोड़ देना पड़ेगा।’

‘हा, भारी ! समय आयगा तो यह भी छूट जायगा । भगवान की इच्छा सर्वोपरि है । उगी के निर्देश पर हमारी जिदगी का कारवा चलता है ।’

बलात मुटिया उम भूतकाल की बात का एकाएक छाड बैठी । एक लटकी उसके पास आकर पडी थी और कह रही थी, ‘बहिन जी आप मेरी बहिन की फ्राक गी दना । उसका क्या दना होगा, बता देना ।’

मुटिया जैम आममान मे धरती पर आ गिरी है । चौंकर लडकी की जग दखने लगी । तब भी वह जम जाग्रत स्वप्न म्म रही थी । जोगवर नित नित उसकी ओर बढ़ रहा था । वह बरबस ही उसका प्राणा म घुम जाना चाहता था । वह जवान जोर बलिष्ठ तो था ही, मुदर भी था । मुटिया जब-तब उम दखती, अपन ममक्ष उस खडा पाती, तो के क्षण उम जलभ्य लगत । मानो के उसके जीवन के श्रेष्ठ पक्ष थे । उसे विधाता न उम सौगात के रूप म न्थि थ । किन्तु मुटिया अपने उन दिना का म्हेन कर प्राणो क परकाटे मे छुपाकर रख सन्ती थी । किमी को बतान या न्थिान की स्थिति म नही थी । और जब उसन स्वय जोरावर न मुह स यह सुन पाया कि वह एक कुमारी म विवाह कर चुका है । उसी का पुत्र मुटिया का मापता है, तो तब उम यौवनमयी मुटिया के मन लोक म हा-हारार ता उठा, वह उम रोमाचित भी कर बैठा, परन्तु उम पीडा को, अपने मानस म अभाव को एन बार भी जोरावर को नही बताया । उम पर यह प्रदर्शित या प्रकट नही किया कि वह भी उमे प्यार करती है वह भी तारी की अनुभूति और अभिसार की भावना उम समर्पित कर चुकी है । मुटिया के मन का जोर जीवन का यह मयम जपूव तो था ही, निस्पह भी था । कदाचित इसी भावना के सहार वह जोगवर क बच्चे को छाता मे लगा बठी थी उसे पाल पोस रही था ।

मामने खडी लटकी न फिर कहा—‘हा, क्या कहती हा बहिनजी ! कुछ माच रही हा ।’

मचमुच मुटिया लजा गया । उम लटकी म वाली—‘हा, क्या कहा नुमन !’

सड़की न बपडा दियाकर कहा—'इम फाव की बात । क्या दना हागा ।'

मुखिया न कहा—आज बना दूगी । जो कुछ र्गी तरी मा, न भूगी ।' और वह बरबस मुस्करा कर रह गयी ।

20

वह दिन ता मुखिया क लिए नितात अपूव था । जब पाम क वस्व म उम एक आयाजन म धामत्रित किया गया । वहा जिले के अनेय विशिष्ट मरनारी अपमर उपस्थिन थे । गाव के भी कई जमीदार पहुंच हुए थ । चौधरी विभ्रम जीर उमका पुत्र भी था । एक मन्त्री ने मुखिया का पाच हजार रुपय का चक प्रदान किया और कहा, यह युवती हमारे ममाज की शाभा है । जिम प्रकार इमन अपन आत्रामक को पकडा, वह एक सगहनीय काय था । मन्त्री न नारी ममाज का आवाहन किया और चाहा, समाज म नारिया अपना पोम्प प्रदर्शित करें । गुण्डा न मामना करे, उह आगे न बढ़ने दें ।

मुखिया के साथ चौधरी रामदाम और मुखेश भी था । जब व उस जलमे से लौट चले, तो तभी मुखिया बोली - 'पिताजी आज कसर म आय हैं ता कुछ खरीद लें । तुम्हारा कुरता फट रहा ह । सिर का दुपट्टा भी जीण हो चला ह कुछ बपला खरीद लिया जाय । यह मुखेश जब कालज जाने लगा है, तो इसे भी शऊर का बपडा चाहिए ।

रामदास बोला 'जब गेह घर म जाया है । कुछ बेच दिया जायगा । जब पसा आयेगा, तो तब कुछ खरीद लिया जायेगा । इन मुखेश की मा के पाम भी घोती नही, तो उसे भी कुछ लिया जायेगा ।'

मुखिया ने कहा—'दुकान पर चला । रुपया मेर पाम है । गाव स चलत समय मुझे ध्यान था ।' और वह स्वत ही बजाज की दुकान की

तरफ बग चली। तब रामदास अवरगध नहीं कर पाया। स्पष्टतः वह अभावग्रस्त था। गत रात में ही वह यशोदा से घर के अभाव की बात कर रहा था। तब यशोदा ने कहा था, 'रुग्णा तो हूँ—उहक पास।' अतना कमानी हूँ हेर माग, वह कहा जाता है। कुछ थोड़ा माँ देती हूँ अरुगत पडने पर। तब रामदास न बहता था, 'मैं उहूँ में कुछ नहीं माग सकता। उमके परिश्रम का पमा हूँ वर उमी का हूँ यह सुनकर यशोदा बुण्डा ने भर उठी थी। उह तुरन्त बोली, 'चौधरी विक्रम ने पाच हजार दिया, वह भी उमी पर है। एम धमात्मा बनने में क्या नहीं चनेगा, तुमने बग का बहुत सिर पर चढ़ा लिया है। वह दती हूँ एव दिन तुम्हें मूड पकड़कर राना पडेगा।

यह सुनत ही, चौधरी रामदास क्षुब्ध हो उठा था। तुरन्त बोला— 'तू मूछा है। तूने मन में ईर्ष्या है, कुण्डा हूँ।' अरुती नहीं, बहूँ की जवानी पानी में बहो जा रही है। उमका पति चला गया। अरु जवानी में विधवा बना गया। उह पर तम त्र।'

यशोदा तुना उठी—'आ हा तुममें बहूँ की जवानी और विधवा बनने की बात तो उठा दी। कभी यह भी सोचा, जिस लडके को मन नौ भास पट मरजा, पाला-बामा वह मेरी छाती पर धूना मारकर चला गयी। मर मन की पीडा किमी ने समझी है।'

उम समय मुखिया पर की दहलीज में खडी थी। वह मास श्वसुर की धातें मुगमता से मुन रही थी।

तभी यशोदा ने कहा—'तुम्हारी बहूँ की करतूतें मेरी दली-सुनी हैं। तुम्हें तो लाज आती नहीं, परंतु मैं अपना भास रोके पडी हूँ। तुम्हारे भाद का लडका जारावर कब कब यहा आया है यह मैं सब देख चुकी हूँ। लडिन चुप रही। अपने दुरदिना की मार से स्वयं घायल बनी हूँ।

आश्चर्य, चौधरी रामदास तब भी चुप था। वह अपने प्राणी स्वभाव के विपरीत बना क्षान्त भाव से हुक्के में घूट भर रहा था। यशोदा पति से कुछ नहीं सुन पायी, तो वह स्वच्छ की बोली— 'उहे हूँ, मर की यह अवस्था रही, तो बग मभी को

‘पिताजी ! सुखिया का स्वर बाहर आया ।

‘अरी, उठ न ! देख, कितना दिन चढ़ आया । आज बम्ब म भी जाना है ।’ रामदास जहरीला पट भर बाहर की तरफ चन दिया । उसने घर की ड्यौड़ी में छड़े होकर वहाँ— जग मेरी चिन्म म आग रख द । एक प्याला चाय भी द द ।’ वह बाहर चबूतर पर जा बैठा । निश्चय ही उम समय उसे सुखिया का साते रहना नितात अशुभ लगा । परंतु वह थक चुका था । साप बूढा हा गया था । अब उमकं मुह म दात नही रह गय थ । फुफ्फुआग्ना भी उसकी शक्ति म पग था ।

जब यशादा चिलम भर कर लायी तो तभी रामदास वाला - तरी सब बात सही ह, यशोदा ! म भी सब कुछ देखता हू । बहू अब हमारी पकड से बाहर हं । देख, आज जिस आयोजन म यह निमन्त्रित की गइ हं वह भी अपुव है । एसा सौभाग्य प्रयक औरत का नमीत्र नही हाता, नू चुपचाप अपना रास्ता तर्क कर ले । मैं भी बूढा हू । एक-न एव दिन इस घर की बागडोर त्स बहू क हाथ म आयगी । इसी को यह घर चलाना पडेगा । जा एक प्याला चाय और ले जा । कनेजा निक्ला जा रहा हं ।

यशोदा बोली— चूल्ह म आग मुलगा दी है । जब शहर जाना हं तो चार पराठे बना दूगी, एक दो या जाना । अचार रख दूगी । मुकेश भी तो जायेगा । भाभी-दवर मे गत बातें चल रही थी मेरी कोई बान माने या न मान, भाभी की बात जरूर मानगा । कानज जाता है, ता भाभी से कुछ कुछ ल जाता हं ।’

‘यह अच्छा है । भाभी-दवर का व्यवहार मधुर हा, ता इस घर क लिए शुभ रहेगा । वह हुक्का पीन लगा ।

जब यशादा घर म लौटी ता विस्मित बनकर दखन लगी, मुकेश चूल्हे क पाम बैठा भाभी के साथ हस बाल रहा था और चाय क साथ पराठा खा रहा था । वह कह रहा था—‘आज मुझे पट वा और गुप्त घट वा कहडा दिलाता, भाभी ! अब मैं अच्छे कपडे वा पैण्ट लाऊगा । गाब के दर्जी वा कपडा नही दूगा ।’

तब सुखिया कह रही थी—‘अच्छा अच्छा, तू मनपसंद कपडा न

नेना । अपनी इच्छा मत मारना ।'

तभी यशोदा पास पहुँचकर बोली—'ब्या र, पिताजी का चाय नहीं देगा । चाय के साथ पराठा भी देकर आ खुद । खाने बठ गया । स्वार्थी रही बा ।'

मुकेश तो कुछ बोला नहीं, लेकिन सुखिया ने कहा—'तुम पिताजी से बातें कर रही थी । अब दे आयेगा । ला, अब तुम आ गई हो तो द आओ । यह खाते हुए क्या उठेगा ?' उसने प्याले में चाय और तश्तरी में पराठा रख दिया । जब यशोदा बाहर की आर चली, तो मुकेश बोला—'देखा भाभी, मा को पिताजी का ध्याय रहता है हमारा नहीं ।'

सुखिया हस पडी—'ऐसा ही होता है रे । पति पत्नी का सम्बन्ध अधिक निक्कट का होता है । क्रिसी ने कहा तो है, मा के बाद पत्नी ध्यान रखती है अपने पति का, कोई और नहीं ।'

मुकेश बोला—'ये सब स्वाय का सम्बन्ध है, भाभी ।'

'अरे स्वाय तो सब कुछ है ही । यह ससार इसी भावना पर टिका है । यह अशुभ नहीं । स्वाय ही प्रेम पैदा करता है । यही तो लगाव है, एक दूसरे को आकर्षित करने का । ले, एक पराठा और ल जा पिताजी को ।'

जब मुकेश पराठा लेकर बाहर गया तो देखा, वहाँ पिता के पास एक-दो व्यक्ति आ बठे थे । वे सब नगर में सम्पन्न होने वाले आयोजन की चर्चा कर रहे थे । एक आदमी यशोदा से कह रहा था, तुम भी चलना, चाची । तुम्हारी बहू ने इन घर का तो मुह उजाला किया ही, गाव भी उजागर कर दिया । इस आयोजन का समाचार सभी अध्वारा में निकलेगा । तुम्हारी बहू का फाटो भी छपगा ।' वह बोला—'इसे कहत हैं समय की बलिहारी । तुम्हारी बहू को भगवान ने ऐसा साहस दिया, अपना पौरुष प्रदर्शित किया, यह कम साहस की बात नहीं थी । कोई दूसरी औरत होती, तो छुरा धाकर भी मुह न उठा पाती । भय से स्वय ही मर जाती ।

रामदास ने चाय पी ली और पराठा खा लिया । वह यशोदा की ओर देखकर बोला—'बहू से कहो, तैयार हो जाये । दस बजे का समय

रहा ह। हम जल्दी पहुँचना है। नदी पर नाव का इंतजार करना पड़ेगा।'

उसमें कहा गया—'चायती बिनाम भी तो जायगा। उसकी मोटर म जाना। गाड़ी तो पुल स जायेगा।'

'नहीं भया। वह बड़ा आदमी है। हमें तो अपनी औकात देकर चलना पड़ेगा।'

अजी, उसने लड्डे की बदौलत तो यह सब हा रहा है। वह गुण्डे को न भेजता तो क्या यह सब होता। उसने भाग्य ही बदल दिया तुम्हारा। इस कहते ह, बुलंदी पर चमकता सितारा।'

रामदास ने बात सुन ली, चुप रह गया। आग तुक एक-एक कर लौट चने। उसी समय मुखेश घर म न थाया और बोला—'चलो चाचा। भाभी तैयार हैं।'

चौधरी न जूती पहन ली, सिर पर दुपट्टा रच लिया और हाथ में लाठी तजर चले दिया। तीना नदी की आर बढ़ चले। जब वे सब मोहल्ले से निकल तो कई औरतों न मुखिया को टाका, 'अच्छा जा रही है, नू। मिठाई लाना। अकेली मत ला जाना।'

जब यह आयोजन समाप्त हुआ और सुखिया पिता-पुत्र को लेकर बजाज की दुकान पर पहुँची, तो उसने कई सा रुपये का कपडा खरीदा। यशोदा के लिए एक रेशमी साडी ली एक सूती। पिता-पुत्र को कपडा दिलाने के साथ अपने लिय भी एक धोती खरीद ली। राहुल के लिए भी नकर और रुमीज का कपडा। उस समय रामदास चुप था। घर में कपडे की आवश्यकता थी, यह वह अनुभव कर रहा था। परन्तु बहू अपन लिए और सबके लिए कपडे ले रही थी, यह सब उसे पसंद न था। मानो उसका घर म एक नया दस्तूर शुरू हो रहा था। यह उसके पुष्टत्व पर और स्वाभिमान पर चोट कर रहा था।

जब वे लौट चले तो मुखेश बोला—'भाभी मिठाई नहीं लोगी। परसाद तो वादोगी न।'

'किस बात का रे?'

'वाह, तुम्हें बहादुरी का इशारा मिला है। इसका खुशी तो सबका

हागी न !'

'अच्छा र ! बाल क्या लगा ? दख, वह है हलवाई की दुकान । सेर भर जलेबी ल ले ।'

'नहीं भाभी ! जलेबी नहीं कलाकद ।'

'अरे कलाकद कितनी को बाटेगा ।' रामदास बोला— थोडा परसाद मन्दिर पर भी चढा आना । बूदी ले ला ।'

सुखिया न पत्र निकाने और मुवेश ने कहा— 'दा मेर लेना । तुझे कलाकद पसन्द है, ता वह भी ले लेना ।'

दिन ढलते वे सब गाव मे लौट आए । घर पर आते ही यशोदा न एक लिफाफा सुखिया के हाथ पर रखा, यह जेल मे आया है । जोरावर न कुछ लिखा होगा । दख तो क्या लिखा है ।'

सुखिया ने लिफाफा खोलकर देखा । जेल अधिकारी का पत्र था । जोरावर से मुलाकात के लिए दिन और समय नियत किया था । तब मुकेश न भी वह पत्र पढा और सबको आगत पत्र का उद्देश्य बता दिया । सुनत ही यशोदा बोली— 'हाय राम ! अब यह बहू जेल पर भी जाएगी । वहा क्या भले घरों की औरतें जाती होगी ।'

पत्नी की बात सुनत ही रामदास वाला— जरी पगली ! अब तू इस बहू को पहली आखी स मत देख । आज मन्त्री कह रहा था । ऐसी बहादुर औरतो को घर से बाहर निबलकर जनता का काम करना चाहिए । उने जनता के वोटो स जिताकर असेम्बली मे भेजना चाहिए ।'

उस समय सुखिया घर म जा चुकी थी । वह दख रही थी कि कई सौ रुपये बात-की-बात मे चले गए । कपडा भी आना था । जो पैसा वह बचाकर लाई वह उसी स्थान पर सुरक्षित रूप से रख दिया गया कि जहा उसका संचित कोप था । वह कमरे के एक कोन म माटी हटाकर हडिया मे रखा गया था । उसी हडिया म शेष रुपये रखकर वहा माटी का समवार कर दिया और अपने आप वहा, यह रुपया यहा नही रखना चाहिए । यह स्थान सुरक्षित नही । सब पसा बको मे डालना पडेगा ।'

उसी समय घर के बाहर चबूतरे पर पति पत्नी मे विवाद चला

या, बहू जेत पर जाय या नही। पति रा मत था, जाएगा। लेकिन यशोदा अपनी बात पर अड़ी थी बहू गयी, तो मैं अपन प्राण छो दूगी। तुमन बहू छट र दी है, इग औरत का। अब नाब बटन म दर रही।'

लेकिन रामदास का मत था—नाब तो बट बट, अब इग पर क वागडार भी बहू के हाथ म उली गई।

21

घर म चले लम्ब विवाद और विग्रह न एव गहरी खाई खोद दा था उस खाई के एक किनार मुखिया थी और दूसरी ओर यशोदा। पुरान और नये विचारो का मघप ही उम घर म विवाद का कारण बना था। रामदास दुमई की तरह कभी बहू की आर झुकता कभी अपनी पत्नी यशोदा की ओर। उस विवाद की जड म था जोरावर। यद्यपि अब वह जैन मे बंद था, परंतु यशोदा को लगता कि वह कालफूट की तरह उस घर का अस्तित्व समाप्त करन पर तुला था। उमके बेट की बहू को जोरावर साफ सटक जाना चाहता था। वह उसके प्रभाव म थी। यद्यपि यशोदा ने कई बार सुधिया से कहा था कि वह जोरावर चोरी छुपे घर म आता है, मुझे अच्छा नहीं लगता। वह डाकू है। घूनी है। दुराचारी है। मेरा लडका मर गया तो इमका यह अब नहीं कि इसकी विधवा बहू क मन पर कोई दूसरा छा जाये। लुक छुपकर उसने पास आकर बैठे।

लेकिन जब-तब यशोदा न अपना प्रतिरोध व्यक्त किया, तो तभी तब सुधिया ने साफ कहा—'जोरावर डाकू है ता, घूनी ह ता है तो अपना हो जश। खेद है। मगा-महात्तर ह। उसे कैसे राका जाय। किस मुह मे कहा जाय। एक बार उसने माफ कह दिया था—'अम्मा, जोरावर को तुम रोक मरती हा नो रोक दो। मैं कुछ नहीं बहूगी।

जोर बहू की उम स्पष्ट बात को सुन यशोदा क्षुब्ध हो उठी थी—
 'हा, तू क्यों कहागी। राट, माड, सयासी की बहावत तो जानी पहचानी
 है। मैं समय गई, तू भी इस घर का मुह काला करेगी।

उस दिन सुखिया स्वभाव के विपरीत चीख उठी थी—'मा, ऐसी
 अशुभ बात मुह स मत निवाला। लाक-नाज को ताब पर मत रख दो।

सुनते हो यशोदा ने अपने माथे में हाथ मारा—'हाय राम। कसा
 चीखती है। देखो, ता कौसी जवान चलाती है। जोर बहू स्वत ही उस
 विवाद को बीच में छोड वाहर दरवाजे पर जा बैठी थी। तब यह बात
 यशोदा ने और चौधरी रामदास ने दर तक मन से नहीं निकाली कि
 नाम बहू के उस विवाद में दो दिन तक उस घर की क्षितिज पर विपाद
 के काने वादल मडरात रहू थ। यदि रामदास मध्यस्थ न बनता, ता
 सुखिया न ता राटी खाती और न ही घर का कोई काम कर पाती।
 वह दो दिन तक भूखी पडी रही। न घर में वाड-बुहा दी, न रोटी
 बनाई। लेकिन तीसर दिन स्वयं रामदास ने स्थिति को सम्भाला। बहू
 को समझाया। उस अवसर पर यशोदा को भी बुग भला कहा। यद्यपि
 वह स्वयं जगली था लडाकू स्वभाव का था, परंतु उस दिन पूरा
 व्यावहारिक और राजनीतिक बनकर अपन-आपको घर का मरपच सिद्ध
 करने में सफल बना था। उस अवसर पर वह सुखिया की भावना का
 समर्थक भी था और विरोधी भी। जोरावर उस परिवार का अंग था।
 इसलिए उसका बहू के पास आने का अधिकार था, परंतु उमका यह भी
 मत था कि वह मेना बेकार है जा कान फाडे डाकू और खूनी
 जोरावर इस परिवार के लिए शुभ नहीं हो सकता। वह जिसके पास
 बठेगा। वह भी कानूनी अपराधी बनेगा। पुलिस उस वल्लेगी नहीं।
 माप में खेलने का अर्थ था, अपने प्राणा को खतर में डालना

लेकिन वह बीती बात अब भुला दी गई थी। जब जोरावर स जेल
 में मिलने की बात आई सुखिया न चुपचाप ही जेल अधिकारियों को
 आवेदन पत्र भेजा, तो तब सध्या के झुरपट में जब रामदास रोटी खाकर
 टुकका पी रहा था, यशोदा न पास आकर कहा—'देखा, यह है बहू का
 रग रूप। मैं कहती थी, चुप-चुप जोरावर की जोर इस बहू की माठ-

गाठ चलती थी न जाने जापस म मया कुछ कहा जाता था । जब जेल पर जाकर उससे मिलन की बात मूझी है । जिस बात को गाव नहीं समझता था । अब समझ जायेगा । घर म न तुमसे सलाह की, न मुझसे शट से लिखकर भेज दिया यह कई लडके पास आकर बैठते हैं, वे ही यह सलाह देते हागे इस घर मे आग लगे और वे हाथ सके, यन् भला किसे बुरा लगगा

रामदास उठकर बैठ गया और बाला— अब तू यह बता, जब हाथी के दात बाहर निकल आते ह, तो वे मया फिर अदर हो जाते है अब बहू इस घर के दायर से बाहर निकल चुकी है । सुना नहीं सापन जो बच्चे देती है उसम से कुछ खा जाती है । जो बच्चे उसकी कुण्डली मे बाहर निकल जात ह, वे बच्चे रहत है । वे नाग बनत ह और इमान के लिए बाल सिद्ध होते है । बम, ममझ ल, तरी यह बह इम घर की कुण्डली से बाहर जाकर न तेरी बात सुनेगी न भेरी । मैं भूला नहीं ह इस बात को, जब इस जोरावर के नाम पर बहू न दा दिन तक रोटी नहीं खाई थी । घर म क्लेश किया था । मैंन तभी समझ लिया था, अब इस घर की हवा बदल गई । म बूढा हो गया, तू बुडिया । जब इम घर के दिन भीघे होने, तो तुम्हारा हाथी सरीखा बटा नैस मर जाना । इम घर का चिराग ता उसी दिन युव मया था ।

मशोदा वाली— तो तुम्हारा मतलब ह बहू का जेल पर जाना होगा । उन डाबू म मिलना जरूरी होगा ।

रामदास न गहरा नाम ली— 'हा मतलब की मा । अब हालात बदल चुकी है ।'

'ता अनेली जाएगी या साथ म काद और ?'

रामदास बोला— 'अर्जी म मेरा नाम लिखा है । मुझका ही जाना पड़ेगा ।'

'तो तुम भी मिलान उस घुनी से ।

'नहीं नहीं यह मुलाकात करगी । मैं ता उसकी मूरत भा दखनी नहीं चाहता ।

'उसक मा-बाप नहीं जाएल मया ?

रामदास धुन्ध हा उठा—'और पोई नहीं जाएगा। बाप ता जेल के नाम से डरता है।'

यशोदा ने चुटकी ली—'बेट की बमाई तो खूब खाई। वह दोलत जमीन में दाबकर रख ली। गम नहीं आई, डाकू का माल खाते।'

'जो-हो। तू तो बाल की खाल निकालती ह। रामदास बोला—'जोरावर तुझे कुछ देता तो क्या फेंक देती? पैसा सभी को प्यारा होता है।'

'और लोग क्या रहेंगे, जब सुनेंगे कि तुम बाप को जेल पर गए हो, उस जोरावर से मिलने।'

रामदास तीखा हो उठा—'तो मैं क्या करूँ? कह दिया जब इस घर की बागडोर मेरे या तेरे हाथ में नहीं, बहू के हाथ में है। आज कड़ सौ रुपये का कपड़ा लाई है। मेरा-तुम्हारा दलदर भी दूर कर दिया। मेरा दो कुरतो का कपड़ा है। साफा अलग है। तेरी भी दो घोतिया है, ब्लाउज का कपड़ा भी। मुकेश तो उछलता है कि अब उसकी पेंट बनेगी और ब्रुशअट। वह भी एव नहीं दो दा। मैं कहा भी, इतना खर्च करना ठीक नहीं, तो बहू ने कहा—'यह मुकेश कपड़े जल्दी फाड़ता है। खेलता-कूदता है। बहू ने अपनी भी एक या दो साडी ली थी।'

यशोदा ने सांस भरी—'हाँ, यह सब तो है पर तु मेरा बलज्जा दहलता ह। यह बहू तेजी से उस जोरावर की तरफ जा रही है। इतना तो समझती है कि अब वह बाहर नहीं जाएगा। फामी नहीं पाएगा, लम्बी सजा तो पाएगा। वह मरने में पहले बाहर नहीं आ सकेगा।'

रामदास ने भी सांस खींची और कहा—'हाँ, हाँ, त तो एमे ही है। बहुत अपराध ह उसका नाम पर।'

'क्या जी यह क्या सूझी उसे कि वात्म समर्पण कर बठा। उस दिन गाव के बाहर पुलिस के घेरे में जाकर भी निबल गया। कई सिपाहियों को घायल कर गया।'

रामदास बोला—'उनमें से एक सिपाही तो अस्पताल में मर गया था।'

'हाँ, यही ता। पुलिस भी उसके नाम से घबराता थी। यह भी

मुना था कि कुछ पुलिस वाले उमंगी मदद करते थे ।

'वेशक' । यह बात सही थी । रामदास बोला—'पिछले माल जब थानेदार की लड़की का विवाह हुआ, तो जोरावर न लड़के को स्कूटर दिया था । वह शायद दस हजार में ऊपर आया था । लड़की का साड़ी और हाथ की मोने की चूड़िया दी ।'

तो उसने दरोगा की लड़की के विवाह का दावत भी खाई होगी ?'

क्या नहीं ? मैं तो सुना उस रात में उसने सायिया सहित खूब शराब पी थी । थाने के आसपास की किमी मकान में रहा था ।'

सूखे भाव से विपाकत बनकर यशोदा मुस्करा दी—'इसे कहते हैं, वही छिनरे को चाली के साथ

रामदाम हम पडा—'इसका नाम दुनिया है । इस समझना कठिन है । 'मत्तर में पडू और माप के भट्ट में हाथ तू द यह कहावत तो सुनी होगी । इस गाय में ऐसे बंद आदमी हैं कि जा जोरावर की मुखबरी करते थे । पुलिस की सब रिपोर्ट उमके पाम पहुंचाने थे ।

हा हा, ऐसे तो कई हैं । तिलकधारी हैं । और-तो-और, मंदिर का पुजारी भी है । जिस रात पुजारी की लड़की का विवाह हुआ, जोरावर गांव में था । पुलिस भी थी । आख मिचौनी की तरह दोना एक दूसरे को देखकर छुप रहे थे ।

यशोदा उठ चली । घर में जाकर देखा, सुखिया सो गई थी । बच्चा भी पाम में सो रहा था । चादनी रात थी । चाद की चादनी सुखिया के मुह पर पड रही थी । उसका गोरा शरीर, यौवन में भरा बदन देखते ही यशोदा की छाती पर घूसा सा लगा । वह सब भूल गयी कि यह बहू जोरावर की तर्फ खिंच रही है । तब स्वत ही उसके मन में आया, कोई आए, उस कोइ दिखाइ दे, तो इस बहू का हाथ पकडा दगी इसकी यह सुहावनी जिदगी बरवाद नहीं हाने दगी

यशोदा चारपाई पर पड गई । कुछ ही देर में सो गई । किंतु वह दर तब सा नहीं पाई । बलात चौककर जाग गई । वह विस्फारित बन कर चारा आर देखने लगी । चारों ओर स्वत चादनी फैली थी । बडा सुहावना मौसम था । स्वप्न में ही यशोदा ने देखा कि वह नव-वधु बन-

वर उस घर में आई थी। यह एसी ही चादनी मतिपकी के चारपाई पाम खड़ी थी। पति कह रहा था, आ बठ जा। दब्र बार बार नहीं जाएगा, यह मौमम यह तेरी जवानी यह ह्पहली चादनी जिन्दगी की यह सबम बडी नियामत ह मौगात है, प्रकृति की

'ह राम! कहा-की उहा पहुच गई म तो। ऐसी गहरी नाद आई।' यशादा न कहा—'बडी जजीब रानें थी वे भी और यह मलखू का चाचा हिण्ण री तरह चौकडी भरता फिरता था, मेरी चारपाई वे चारो ओर इन जाल्मी को न मा की गरम थी न बाप की। सारी लाक ताज नाम पर उठाकर रण दी था जब तोपहर का खत पर रोटी लेकर जाता तो तब भी मुझे देखकर अगडाई भरता था भगवान ही जा किस तरह खत पर काम करता होगा

यशादा ने बात छोड दनी चाही। उमन दूर साती हुई सुधिया की आर देखा। वह बसुध थी। छाती पर स धोती हटी थी। नसी हुई छातिया माना उसकी अगिया के कपडे का फाडकर बाहर निकलना चाहती थी भरी जवानी थी उसकी। इतना दय यशादा के मनमें आया कि सुधिया के पाम जाए। तकिए पर बिखरे उसक जूडे के बाला को हाथ में ल ल और चूम ल। उम याल जाया, उसकी लडकी शारदा यदि जीवित हाती तो इतनी ही बडी होती। ऐसी ही शकल-सूरत की होती। यशादा के मन में आरहा था। सचमुच बडी दुभांगी है, यह सुधिया। इसका नाम तो 'दुधिया' होता तो ठीक था। भला क्या देखा इमने ससुराल में घर आकर। इसके शरीर में हल्दी का उबटन भी नहीं छूटा कि भगवान न विघवा बना दी। अच्छा ही हुआ कि यह सिलाई का काम सीख गई। चार पैसे कमान लगी। हमारा क्या है, आज है कल नहीं। जो इमने भाग्य में होगा मिनता। यह भागगी। उसने कहा—'अब इन यह के आसार तो अच्छे दीए हैं। इसके पास हुनर ह, चार पैसे है। काई भी मिल जाएगा। औरत का रूप और यौवन तो एसा चुम्बक ह कि दूर पडे आदमी को भी अपनी ओर खींच लेता है हा, इस सुधिया ने वह कला है। वह मिथ्या है इसके पास

यशादा फिर पड गई। सा गई। प्रात जब दर में आस्य खुली तो

बाहर की बात चूल्ह पर बँठी सुखिया व भी काना म पड़ी। वह बोली—'जम्मा, जरा सुनो तो कौन मर गया।'

यशोदा बोली—'मैंन बात सुन ली। वह रोता था न, वह मर गया। न उसका वफन ह न चिता के लिए इधन। पटौसी उता रहा है, तो चौधरियो के पास गया और खाली हाथ लौट आया।'

हे राम ! ऐसे मालदार लोग भी एक पाई नहीं दे पाए।' सुखिया बोली—'लो जम्मा ! पिताजी को बत्तेवा ले जाओ। उनसे वह दा मे वफन के लिए चादर दे दूगी।'

यशोदा बोली—'हमार गिटार म उपल (कण्डे) ल लिए जागग। काम हो जायेगा।'

सुखिया ने कहा—'मेर पास कुछ रुपये रक्खे ह मन्दिर पर परमाद चढाने के लिए। इससे बडा मन्त्रि और पुण्य का काम और कौन सा हागा। मैं वे रुपये द दूगी।'

यशोदा बाहर गई और सुखिया की बात वह आइ। लौटकर बोली चादर दे दे। रुपये भी निकाल दे। मैं ब्रद बिटारा खोले देती ह। दा जादमी आगग और कण्डे चादर मे बाधगर ले जागग।

22

अन्तत वह दिन जा गया कि जब चौधरी रामदाम और उसकी पुत्र की वह सुखिया जिले की सदर जेल म जाने को उद्यत हुए। जिन युवन के द्वारा जावेदन पत्र दिया गया था वह जिन म ही कायरत था। सुखिया न उसम कह दिया था यह गाव का मामला है इस बात का अपने तक ही मामित रखना जरूरी है। परंतु वह युवक तो अपना प्रण निभान म मफल हो गया, किंतु जब यशोदा की और रामदास की जोरावर व प्रकरणको लेकर बात चली, तो जोरावर की मा न सुन ली थी। वह घर के बाहर आकर भस का दूध निकाल रही थी। जब चोगवर

का वह चार नाम उसका जाना जाता तो वह चाक उठी वह । यशोदा की भस की जाड में जाकर खड़ी हा गइ । फलस्वरूप, वह पति पतिन के मध्य चलती सभी बातें सुगमता न सुनन म सक्षम थी ।

यह सब विदिन था कि यशोदा और जारावर की मा गगा म कइ वष स बालचाल बढ थी । उन दोना नारियो क बन्धवरूप न इन दा परिवारो का पृथक् तो किया ही, मन से भी जुगा कर दिया ग । परतु जारावर उम घर आता था । वह माता पिता की आकाक्षा का सबथा उपक्षा कर बठा था । मलानू में उसका अत्यधिक स्नेह था । उसे बडा भया मानता था ।

परतु प्रात हा ही जारावर की मा उस घर आई जार मीधी यशादा के सामन खड़ी टाकर बोली—‘यह कौन स जन्म क बढने न रही हा जैटानी ! तुम्हारी वहु जारावर स जेल म मिलन जा रहा है । जेठ जी भी जा रह है ।

उपक्षा भाव स यशादा वाली— म इस विषय मे कुछ नहीं जानती । जेठ मे बात कर ।’

‘उमसे क्या बात कर । साप का मौसी ता तुम हा ।’

तब यशादा क्षुध हो उठी— इवान सुधारकर बाल । माप की मौसी हागी तेरी मा तरा त्राप ।

किंतु गगा गरज उठी— मैं इस मिली भगत का खूब जानती हू । वह को आग बढा दिया है । मेरा लडका त्रिक्म्मा ता बना ही, तुम्हारी बहू ने अपने रूप के जाल म भीफमाया हू । अब तब तो मे चुप थी परतु अब कहती ह तुम्हारी वहु न सापन बनकर उमे डमा ह । उमसा म्पया कमाया है ।

इतना सुनना था कि यशोदा आप म बाहर हो ग । उसका हाथ उठा और तड मे गगा क मुह पर तमाचा मारकर वाली हरामजादी बकवास करती ह । कब-कब का बर निवालन जाई है तू ! अपने लडके पर तो जार चला नहीं यहा बदनमीजी की बात करने आ पहुची । चुडल कही ना ।

गगा का ऊँचा स्वर था। वह उसक पति क वान म भा जा पहुँचा। यद्यपि वह कमजोर था, परन्तु लाठी निकाल लाया। रामदास चबूतर पर हुक्का पी रहा था। उसक पास आत ही वाला - देखा भया, जय हमारा तुम्हारा मेल नहीं बालचाल नहीं, तब जारावर के पास जान सी बात क्यो है। इतने बर्षों की चुप्पी के बाद फिर पानी म जाग लगाई जा रही ह। भाभी को समझा ला। मेरा लडका ता कैदखान चला ही गया। अब हम म मे कोई बहा न जा बैठे। यह ममझ ला।

रामदास विस्मित था। घर की आवाज वह भी सुन रहा था। परन्तु यह पता नहीं था जोरावर क नाम पर यह सब हा रहा था। छोट भाई का उग्र दख, वह स्वभाव क विपरीत बनकर बोला— जगधर, तुम किम किस पर बंधन लगाआग। तुम्हारे लडके स काइ मिलन जाता ह, तो तुम्ह आपत्ति क्या। तुम चाहत हा, उसका कोई मिलन वाला न हा। काइ मित्र या सखा न हो। वह तुम्हारा पुत्र ह, दुश्मन नहीं। बहू उसके पास जाना चाहती है, ता जान दो। मैं तो उसे नहीं रोका। यह काम मेरा था। मरी प्रतिष्ठा का सवाल था।

जगधर चुप रह गया। किन्तु रामदास घर म गया और जगधर की रू का टोककर बोला— 'गगा, तू उल्टी गगा बहती है। जा बात तू करती ह, वह यशोदा को करनी चाहिए थी। मुझे बहनी थी। सुखिया हमारी बहू है। इस घर की इज्जत है। लेकिन जब यह स्वय जारावर से मिलन को उत्सुक है ता हम क्यो रोकें। वहा जेल म उसके पास धन तो है नहीं जा मिलाई करके कोई ले जायेगा। यह बहू भी उसक लिए कुछ नहीं ल जा सकती। जारावर डाकू और खूनी है। उस पर सगीन मामला है। बाहर के लोग उसे कुछ भी खाने को नहीं दे सकत।'।

गगा अपने जेठ से बोलती कम थी। घूँघट करती थी। उस समय उसके मन का जोश निवृत्त चुका था। जेठ के घर म आते ही रहा-सहा पानी भी जाता रहा। वह लौट चली। तज चाल से चलकर अपने घर म जा बठी। वहा जाते ही पति से बानी— 'मलखू की बहू भी बड़ी चुडैल है। एक शब्द भी नहीं बोली। मैं तो उसी को सुनाने गयी थी। उम गफेन कबूतरी ने जरूर लडके पर डोरे डाल ह।

जगधर वाला — 'सब धकार हूँ। जोरावर जेल स बहार नहीं आयगा। हमन तो समझ लिया कि वह गया। भगवान का प्यारा हो गया। हमारा भाग्य ही लोटा था। घर में एक लड़का पैदा हुआ तो वह भी डाकू और खूनी बना है। मेरा तो गाव में निकलना भी दूभर हो गया है। जाने कितनी बार ध्यान में गया। वहाँ पुलिस न प्रताड़ित किया भगवान बचाये ऐस जीवन में ऐसी औलाद स '

गंगा बोली — 'औलाद के कारण ही जान तुम्हें मुह की ग्रानी पड़ी' जा कुछ न मुनना था वह भी सुन आई। और देखो कसी बात वह चूड़ल वह चुपचाप कमरे के दरवाजे पर खड़ी रही। दौरानी जिठानी की सडाई दपती रही।

जगधर बोला — तुझे नहीं जाना था। भया न जा कुछ वहाँ उम मुनकर तो मुझे भी शमिदा बनना पडा उमका कहना ठीक ही था। लज्जा उम आनी चाहिए थी न कि हगको। हमारा तो लड़का है। चाह जैसा है, मद बच्चा ता है। उमकी तो बहू है। विधवा है। कोई जवाय ह उसके पाम, गाव के किमी भी आदमी की बात का कि वह क्यों मिलन जा रही है। क्या स्वाय ह उसका। वह औरत बेशम है नगी हो चुकी है, मेर बेट के पीछे दीवानी बनी है। उसने अपन घर का लाज भी उतार फेकी है

गंगा ने पति को घुरा — 'यही बात ता मैं कहने गयी थी। लेकिन जेठानी ने तो सब पट में उतार ली। डकार तक नहीं ली। मैं समझ गयी जेठ जिठानी वह ने मामने झुक गय हैं। वह चार पैस कमाती है ता उनके मुह बंद कर बठी है।'

अजी, क्या न झुकत। दो सौ रुपय माहवार सरकार देती है। बहू सिलाई का काम करती है, उसकी आमदनी अलग। कम-स कम तीस चालीस बहुए और जवान लड़किया आती है, उनकी पीस अलग। बीस रुपय माहवार सबउ। लिया जाता है। कितनी चतुराई है, जब स्कूल खोला, तो दस रुपय माहवार व। बढत-बढत इतने हो गय।'

'तुम दस रुपय की बात कहत हो, स्कूल खोलत समय मुफ्त में शिक्षा देने की बात थी।'

'सो ह, यही। बहू क्या ह, कामधेनु गाव है। आम-बे-आम, गुट

लिया व दाम। नाममान के लिए मुफ्त में दो चार धीरता को सिलाई
मिखाती है।'

इसे कहते हैं भाग्य की करामान ! इसका लडका भी कालज म
चला गया। वह चुपचाप मेर पाम आता है और कुछ-न-कुछ खा पी
जाता है। मुखेश का मटठा पीने का शौक है, ताजी निकला पी जाता
है। मैं साथ में गुड की डली भी दे दती हूँ। वह तो कहता है समय
आएगा, मैं बीच की दीवार ताड़ दूंगा। दाना घर एक कर दूंगा।

'अजी जब नदी की धारा पट गयी तो क्या मुडता है।

अगले दिन सुखिया का श्वसुर के पास जाना था, तो वह जधेरे में
नदी पर पहुच गयी। हाल में ही रामनाम न कह दिया था कि गाव का
कोई आदमी न टाके। सुखिया। 'तुल का भी तयार कर लिया था।
उसे नय कपडे पहनाये थे, सिर व बाल कप्रे से सवार थ। आख में
स्याही लगा दी थी। यशोदा व कहन पर एक मिर पर स्याही का
टीका लगा दिया था। लडका शकल सूरत का अच्छा था। इसलिए
वही नजर न लग जाए, इस बात का सँदह यशोदा को हो गया था।

दापहर होने तक वे लोग जेठ के द्वार पर पहुच गये। समय पर
जावाज लगी। रामदास बोला—'बहू, तू जा। मैं यहा बैठा हूँ। लडके
को ले जा।'

सुखिया उस लौह-द्वार पर पहुच गयी। जब वह फाटक के ज-दर
गयी तो एक और सीकचा का द्वार उसे मिला। वही पर उसे रकना
पड। कुछ ही देर में बेडिया में जकडा जारावर यहा जाया। उसे
देखते ही सुखिया नीचे झुकी और उसके पर छूनर जब सीधी खडी हुई,
तो जोरावर मुस्कराया—'यह उल्टी गगा बहा दी है तुमने। मुझे
तुम्हारे चरण छून थे। तुम्हारी प्रेरणा से मैं यहा आया हूँ। बडा अच्छा
व्यवहार किया जा रहा है मेरे साथ। अभी मुकद्दमा शुरू नहीं हुआ।
वच होगा, यह भी नहीं कहा जा सकता। यहा एक अलग मजिस्ट्रेट
नियुक्त होगा। दूसरे देश से मुद्ध चल रहा है, तो सरकार का ध्यान
उधर है। कुछ पुराने डाकू मुद्ध के काम में लगे हैं। वे मार्च पर लड रहे
हैं।'

इतना सुनत ही सुखिया गदगद हा उठी—‘तुम भा न निए जाओगे क्या?’

‘नही, नही, मैं ता नया हू। मर अपराध भी जघन्य ह।’ उसन कहा ‘अच्छा ही हुआ कि मैं जेल म आ बटा। यहा निश्चितता है कोई भय नही। कही छुपने का सवाल नही। सूबह जेलर आता है तो बडे शालीन भाव से वान करता है। शुरु म मैं किस कोठरी मे रखा गया, वह काल कोठरी थी। परंतु जल्दी ही यहा म बदल दिया गया आम कैदिया से कम मिलना हाता ह, फिर भी मुझे यहा मानसिक मुश्क मिला है। डाका डालकर, किमी ना खून करवे लगना था कि मैं इन्सान नही, पशु था, राक्षस था। तुमन मुने इस पय स हटाने वा प्रयत्न किना, इस कारण मैं तुम्हारा जम जम का आमारी हू। यह सीउ किसी और न नही दी। शायद लाग मुझसे डरते थे। मुझे खूबार भेडिया मानत थे। उसन कहा—‘अब यह राहुल भी बडा हो चला ह। तुम यह मानना कि यह तुम्हारा ही पुत्र है। चोरी क मामल म गाव का हिरिया तुम्हार यहा जाया है, कैदी बनकर। उसने बताया था कि तुम्हारा स्कूल खूब चल रहा है।’ यह कहते ही उसने सुखिया की बहता आखो पर जेल का पहना हुआ कुरत का एक भाग रखा। तभी बाला

रोना व्यथ है, भाभी। हम दानों ने जान किस शुभ घडी म एक दूसरे को देखा था। जब भैया मलखू था, ता तब मैं अपने मन की भावना व्यक्त नही कर पाया। जब वह मरा ता तब भी तुम्हारा वैधय देखकर मैं कराह उठा था। तुमसे न कुछ अपक्षा कर पाया, न कह पाया। तभी ता मैंने एक अन्य युवती से विवाह कर लिया था। यह केवल इस कारण था कि मैं अपने मन की दुबलता तुम पर व्यक्त न कर बैठू। तुम्हारी जीवन के प्रति प्रगट हुई निष्ठा का मैं पतित करने की क्षमता रखता था। डाकू बनकर भी, ऐसा गाव मेरे मन मे था।’

सुखिया की आखें तब भी प्रवाहित थी। वे उसक गालो पर तर रही थी। तभी जमादार आया और बोला— चलो जवान। समय हा गया।

जोरावर बाला— भाभी, अब यहा मत जाना। शायद मैं स्थानांतरित कर दिया जाऊ। यहा गर्मी अधिक है।

सुखिया ने कहा—'देखो, तुम मेरे अवलम्ब हो। जेल में रहो या बाहर, मेरे अपन हो। मुझे पैसा नहीं चाहिए, भावना चाहिए। वह तुमने मुझे दी। तुम मेरे कहने से आत्म समर्पण कर चुके हो, एक जघन्य कृत्य से दूर हो गये हो, यही मेरे लिए बहुत है। वह मकती हूँ। मेरे सोहाग का यह सबसे बड़ा मिह्र है जो तुमने मेरी मांग में लगाया है। मैं नारी हूँ, तो पुरुष चाहती हूँ। लेकिन जिस आकाशा से नारी पुरुष की लोलुप बनती है वह अपेक्षा मुझ में नहीं। मुझे पुरुष की अनुभूति चाहिए। प्रेरणा चाहिए। उसके जीवन का सच्चा सङ्कल्प चाहिए। यह बच्चा तुमने मेरे पास छोड़ा है तो मुझे माँ कहता है। इतना सुनकर मैं सुख पाती हूँ। मैं चाहती हूँ तुम जीवन के पुनीत लक्ष्य की ओर बढ़ते रहो। तुम भी इस बात को समझो गंगा की धारा के समान ही यह जीवन है। यह परम है, पुनीत है। इस भावना की रक्षा करो। अपनी इस आकाशा को पूरी करने के लिए यह सुखिया बड़े-से बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहगी।' वह नीचे झुकी और फिर जोरावर के परो को छू कर बोली—'अब शुरू लगता है कि तुम एक सच्चे मद हो। तुम जीवन की पूजा करनी जानते हो। जीवन को समझते हो।'

जोरावर बोला—'ताई और ताऊ को प्रणाम कहना। तुम चाहो तो मेरी माँ और पिता को भी मेरा अभिवादन कहला भेजना।'

सुखिया बोली—'तुम्हारे ताऊ तो बाहर बैठे हैं। उनका दिल कच्चा है, तुम्हें देखते ही रो पड़ेंगे। चाचा और चाची के पास मैं स्वयं जाऊंगी वल्ल चाची आकर लड़ी थी कि मैं क्यों जा रही हूँ उसके पुत्र के पास। उह भला कस बताती कि उनका पुत्र मरा भी कुछ है।'

जोरावर बोला—'माँ नादान है पगली है। उसने कहा—'भाभी एक बात कहता हूँ उसे मान लेना। विचार करना। अच्छा यही है कि तुम अपना दूसरा विवाह कर लेना। भावना में मत बहना। मैं तो अब बाहर आ नहीं सकता। आपा भी तो तब तक बूढ़ा हो जाऊंगा। बमर झुक जायगी, जीवन बेकार हो जाएगा।'

सुखिया सूखे भाव से मुस्करा दी अभी तो इतनी बात कही तुमरो वही बात मैं अपने से कहती हूँ। जीवन एक पूजा है। साधना है। मुझे

भी यह अवसर मिला है। पाँच-दम थप के बाद बूढ़ी हो जाऊगी। हो सकता है तब तक मर भी जाऊ। जो बात मर मन म आ गयी है, तुम सोचते हा मैंने पदा की है। यह भी भगवान की वाणी है, उसी की आवाज है। मुझे आदमी नहीं चाहिए जो औरत को भोगे। आम की गुठली की तरह चूसे। मुझे भावना की अपक्षा हे। वह मैं पा चुकी हूँ; इसीलिए तो मैं निर्वाध बनकर अहने पथ पर बढी जा रही हूँ। तुम्हार पास तक आयी हूँ, समाज का सभी नीति तोड आयी हूँ।

जारावर वाला— तुमने गाव म जिस साहस का प्रदशन किया, वह अपूव था, बदनीय था। मुझे एक एक बात का पता है।’

वह भी भगवान का आशीष था। जाने किस प्रकार मेरे प्राणों म बल आया।’

जारावर बोला— मैंने जेल अधिकारिया को पत्र दिया है, जिला धीश के नाम। मेरा ट्रस्ट अभी तर गुप चुप चल रहा था। नेकिन अब उसे प्रकाश म उतारा है। जिलाधीश उसका अध्यक्ष हो और मंत्री भार का एक विशिष्ट व्यक्ति पाच जादमिया की एक समिति होगी उसम एक तुम्हारा भी नाम होगा।’

सुखिया बोली — वह रुपया सरकार जब्त कर लेगी।

नही नही, वह ट्रस्ट के अधीन है। मैंने जेलर से बात कर ली है। वह ट्रस्ट अभी वाजाप्ता नही, अब आगे उसे स्थायी रूप दिया जा सकेगा।’

जमादार वाला—‘अब चलो जवान।’

‘हा-हा चला।’ जोरावर ने सुखिया से विदा ली और बच्चे का गाल थपथपाया। वह हाथ जोडकर उम स्थान मे पीछे हट गया। सुखिया द्वार के बाहर निकल आइ। जब वह घास मे बठे रामदास के पाम पहुची शो वह वाला—‘बहुत देर की। इतनी देर मिलाई नही हीती। और तुम रो भी रही हो। आखें अब भी भरी हैं। वह खडा हो गया और कहने लगा— भाग्य की बात है, जोरावर मरीया लडका गाव म दूमरा नही। बुद्धिमान भी है, सुन्दर भी है। ठीक कहा है किसी न—इंसान को उसके सस्कार बनाते हैं। उसी को हम भाग्य

कहते ह । आओ वस अड्डे पर चल । गाडी मिल जायगी । शाम तक गाव म पहुच जाएगे ।

23

एक दिन जब चौधरी रामदास हाथ मे लाठी लिए अपन खना की तरफ जा रहा था, तो तभी पीछे स गाव के एग नौजवान भगवत ा आवाज दी—‘अरे ताऊ जरा सुनना ।

आवाज सुनी तो रामदास रुक गया । पास आत हुए भगवत की ओर देखने लगा । वह शहर म किसी आफिस मे बाबूगिरी करता था । अच्छी कमाई करता था । पिछले दिना जब उसने अपनी बहिन का विवाह किया, तो अच्छे-अच्छे नाक वाले देखत रह गये । बहिन का बडा अच्छा दहेज दिया । लडका भी ऊचे घर का मिला । उस विवाह की एक विशेषता यह थी कि बराती केवल गिनती के आय थे । शहर के बडे-बडे आफीसर और रईस उमदा उस उत्सव म सम्मिलित हुए थे । बाजा भी अग्रेजी नहीं था, गाँव का था, ढाल डपरा । फिर भी उस विवाह की शोभा देखते बनती थी ।

जब भगवत पास आया तो हाथ म लिया अखवार दिखाकर वाला—‘ताऊ, कमाल कर दिया जाराबर न । उसका जेल का रिवाड इतना अच्छा बना है कि जेल अधीक्षक ने उस फौज मे जाकर शत्रु से लडने की सिफारिश की है । फौज का कमाण्डर उसकी निशानबाजी देख कर चकित बना था । आशा यही है कि वह फौज म लडन के लिए भेज दिया जायेगा—वहा शत्रु की गोली खाकर मरा तो मुक्ति पा जाएगा । और जीवित रहा, तो सरकार उसके सभी अपराध क्षमा कर दगी । वह फिर गाव म लौट आएगा । यह सब आज के समाचार पत्र म आया है ।’

अपनी बात कहकर भगवत अपने रास्त पर चला गया । उस समाचार से रामदास को इतनी प्रसन्नता हुई कि खेत पर न जाकर घर की

और मुड़ गया। वह सीधा घर में जाकर ऊँच स्वर से बाला—'मलखू की मा।

मलखू की माँ यशोदा ऊपर कोठे पर गोबर के कण्डे पाय रही थी पति की आवाज सुनकर बोली—'क्या है? कैसे चीख रहे हो? मैं ठाली नहीं बैठी काम में लगी हूँ।'

'अरी, भागवान यहाँ ता आ। तेरी बहू कहा है। उसे भी बुला।

यशोदा ने कण्डे पायने बन्द कर दिये। वह चौक के ऊपर छज्जे पर खड़ी होकर बोली—'क्या है क्या बात है ऐसी अछूवा, जो सुनाने को वेताब हो। बहू तो अपनी बलास में है। उस बाहर से आवाज दो।

चौधरी बाला—'आओ। बहू का भी बुला लो। बात ऐसी है कि तुम्हें गिना बताए रहा नहीं जायगा। बहू का भी बताना जरूरी है। देखा जाए, तो बात उसी का है, न मेरी है, न तुम्हारी।

यशोदा आँखों से हँस दी—'ऐसी क्या बात है। वह बाली—'अब तुम पहली बहुत बुझात हो। बात तो बतात नहीं। मैं कोठे पर से काम छोड़कर आ गयी। कई दिन का गोबर पड़ा था। बहू तो हाथ लगाता नहीं मुझको ही करना पड़ता है। एक तो वह थी ही कामचोर, तुमने और अधिक सिर पर चढा ली है। जब मैं मर जाऊँगी तो देखना कौसा दूध पियोग? छटाक आध पाये घोसी से ल लिया करना और चाय बनवा कर पी लना। अब चौधरी को रोटी भी चुपडी जाती है। दाल में भी दो चार बूद पड़ जाता है। सुबह को गरमा गरम पराठा खा लिया जाता है।'

'ओ हो, तूने तो भागवत ही खोल दी। अरी, भागवान! जिस गाँव में मुर्गा नहीं बाला तो क्या वहाँ दिन नहीं निकलता! तू समझती है मैं बैठा कहूँगा। मेरा बात गाँव में बाध ले। तुझसे पहल जाऊँगा। तेरा चूडिया टूटेंगी और मेरी अर्धों पर रखी जाएगी।

यशोदा लाल आँखें निकाल बठी—'यह अपशकुन की बात छोड़ो। सुबह-सुबह मेरा दिमाग खराब मत करो। तुम्हें तो कोई काम है नहीं। बस, हुक्का पीना या गप्प मारना। मेरे तो हजार काम हैं। बहूजी जब

से सिलाई की क्लास घोल बैठी ह, उहाने घर के कामा से छुट्टी पा ली है। साच लिया है न, घर मे नौकरानी है, मरेगी और खपेगी।'

सयोग से उसी समय मुखिया ऊपर कमरे मे उतर आई। उसे देखते ही यशोदा बोली—'लौ आ गयी बहू भी। अब वताआ, क्या रात है ?'

चौधरी बोला—'सुनो बहू अभी भगवत आया था। उसके पास अखवार था। जेल व अधीक्षक न जोरावर की तारीफ लिखकर ऊपर अधिकारियाके पास भेज दी ह। सुना ह फौज के कप्तान न उसका निशाने बाजी देखकर प्रशंसा की है। उम्मीद यह है कि जोरावर का शायद जेल स निकालकर लडाई के मोरच पर भेज दिया जाय।'

'हे, राम! भगवान बडा माय करता है। अच्छा है लडका इस मूसीबत मे निकल गया।' यशोदा के चेहर पर प्रसन्नता थी। बाणी मरुप।

चौधरी वाला—'मलखू की मा, मोरच पर लडका यदि वह जीवित रहा तो उसे जेल म नही रखा जाएगा। सरकार उसे क्षमा कर देगी।'

यशोदा बोली 'मैने तो सुना है कि सरकार अजराधिया को क्षमा करन व साथ कुछ काम करन के लिए रुपया देती है। जमीन दती है।'

उसी समय सुधिया पत्थर क समान भूतित्त खडी थी। पैर के अगूठे स जमीन कुरेद रही थी।

रामदास बोला—'भाग्य बहुत बडी चीज है, मलखू की मा। आदमी कही-स-कही पहुच जाता है। मेरा मन चाहता है कि जोरावर सरकवी करगा। वह गाव का और इस जिले का विशिष्ट व्यक्ति बनेगा। उसकी मा के बाना मे भी यह बात पहुचा देना। बाप न भा कहला भेजना।

'अजी, गगा ता फाड खान को आती है।' वह बोली—'अब त तुम्हारा मुकेश भी कालेज के लडको मे फौजी कवायद करता है। भाभी मे लड षगडकर कुछ रुपये ल गया था वर्दी बनवाने के लिए। वह

कूट वार है। उगम भर्ती हुआ है। नाम नी ता एम रम है नि समये नहीं जात। अब अगन मही मही पहाट पर जायगा। वहा कम लगगा। न जाने क्या-क्या बातें करता है, भाभी मे। मैं तो दू दोनो की गिट पिट समझ नहीं पाती।'

रामदाग बाहर की ओर चल दिया और कहता गया—'अब खेत पर नगी जाऊंगा। एक चिलम तम्बाकू भर दू ता पीकर मन्दिर पर जाऊंगा। कुछ दूर वहा जाकर बैठूंगा।'

तभी सुखिया बोली—'जेल में जोरावर इस बात का जिक्र करता था। नकिन अभी पता क्या है नि वह मोचें पर भेज भी दिया जाएगा। वहा जाना नी पानी से बदतर है। जो वहा जाता है बडे भाग्य समझा कि लौट आये। कार्द मरता है और कोई अधमरा बनकर अस्पताल में पडा मिसकता है।'

यशोदा ने मास भरी—'हा, बहू। जा फौज में भर्ती हाकर जाते हैं जोखिम का आघात ही उह उसओर खीच कर ले जाता है।

सुखिया बोली—'अम्मा उसमें अपना भला भी होता है और परमाय भी। दश की रक्षा ता फौज का सिपाही करता है। वह अपने अपने प्राण हथेली पर लिय रहता है। वह बहादुर है। दश का प्रहरी है।'

यशोदा बहू की सब बात नहीं समझ पाई। वह बाहर गयी और हुक्के से चिलम उतार लाई। उसमें तम्बाकू रखा और और आग रखकर चिलम हुक्के पर रख आयी। उसी समय सुखिया अपनी क्लाम में गयी और एक युवा लडकी को अपने पास बुलाकर बोली—'रमिया तरा भया तो घर होगा। ते ये पाच रुपय। वह हलवाई की दुकान में पाच रुपय की नुकती दाना ले आयगा।

रमिया श्वेत दाता से हम पडी—'क्या करोगी इतनी नुकती का ?

सुखिया बोली—'कुछ बाटनी है। कुछ मन्दिर पर चढानी है। तू जा।

रमिया चली गयी तभी सुखिया स्वत ही बोली—'यह अच्छा

ममाचार है। सुखवर है। भगवान बड़ा दयानु है।'

सध्या होते ही वह नुक्तीदाना सुखिया ने यशोदा का दिया और कहा—'अब मंदिर पर पुजारी पूजा करेगा। यह मिठाईं ले जाओ। कुछ देवता पर घड़ा देना, कुछ वहा पर आये बच्चो को बाट देना।'

आश्चय, यशोदा ने कोई टिप्पणी नहीं की। वह पति के पास जा कर बोली—'आओ, चलते हा, मंदिर पर। वहू परमाद बाट रही है। यह नुक्तीदाना मगाया है।'

प्रसन भाव म रामदास वाला—अच्छा तो है। वहू को सबसे बड़ी खुशी हुई है।'

लेकिन सुबह ता मुह से भी नहीं बोली।'

'क्या बोलती। सास श्वसुर के सामने चुप रहना ही ठीक था। यह समझ ले, अब बहू की मनचीती होगी, हमारी तुम्हारी नहीं।'

यशोदा बोली—'यह सब देखकर तो मेरा मन कापता ह।'

'तू तो मूख है। जोरावर गैर नहीं। उसका देवर है। जो तर मन म है वह मेरे भी पास है। लेकिन चुप रह। वहू की खुशी म ही अपनी खुशी समझ।' वह बोला—'जेल पर जाने का मतलब क्या था। इतनी बात न समची जाय तो क्या भगवान आकर समझाएगा। चल मंदिर पर। खुशी की बात ह, परसाद बाटना ही चाहिए, यही क्या कम है कि वहू स्वय न जाकर तुम्हे भेज रही है। यह आदर भी कम नहीं। दाता द और पत्ला पसारकर लो।' दोनो चल दिए। परसाद कुछ देवता को चढाया, कुछ वहा पर एकत्र बच्चो और स्त्रियो को बाट दिया। आश्चय रामदास या यशोदा ने परसाद बाटने का उद्देश्य नहीं बताया। उनसे पूछा भी गया ता टाल दिया।

अभी पूरा सप्ताह नहीं बीता था कि सार गाव मे यह खबर विजली की तरह फल चुकी थी कि जोरावर शत्रु से लडने के लिए मोर्चे पर भेज दिया गया। इस बात को वीत अभी सप्ताह हुआ था कि शहर मे प्रकाशित कइ अखबार गाव म आ गए, जोरावर बड़ी बहादुरी के साथ युद्धरत है। सरकारी अधिकारियो मे उसकी मुक्त कण्ठ सप्रशसा की जा रही है। स्वय फौज के अफसर उस जवान को पाकर गौरवान्वित

है ।

लावन एक दिन नगर में और गाव में यह समाचार फैलत दर नहीं लगी शत्रु दल जिस स्थान पर बढजा करना चाहता था, वह विफल कर दिया गया । बहुत मे शत्रु मार गय, सय सामग्री छोडकर भाग गए । परंतु अपन दश की मुहिम पर नियुक्त जोरावर घायल हो गया । वह फौजी अस्पताल में दाखिल कर दिया गया । डाक्टरा ने उसका एक हाथ काट दिया ।

सुखिया ने कुछ दिन के लिए अपना स्कूल बंद कर दिया था । उसने अपना भैया बुलाया था और उसके साथ माता पिता से मिलने चली गयी थी । किंतु अपने गाव में कुछ दिन रहकर वह जोरावर के पास पहुंच गयी थी । एक मास अस्पताल में रहकर जोरावर स्वस्थ हो चला था । सरकार ने उसे गाव जाने की अनुमति दे दी थी । जब वह अस्पताल से मुक्त हुआ, तो तभी यह सन्नाचार मिला, सरकार ने जोरावर का विशिष्ट पदक और सम्मान प्रदान करने का निश्चय किया है । उसे अपने ही गाव में सौ बीघा जमीन दी है और एक लघु रूपया ।

सुखिया एक सप्ताह से जोरावर के पास थी । उसके बाए हाथ की बांह कंधे से काट दी गयी । गोलियों के आघात शरीर के उसी भाग पर हुए थे । जब सुखिया गाव लौटी तो वह एकाकी नहीं थी, जोरावर साथ था । सरकार ने उसे नभी थपराघी से मुक्त कर दिया था । जब वह गाव में आया, तो उससे पूर्व ही सुखिया ने और निक्कट के धानदार ने गाव में प्रचारित कर दिया था, जोरावर आ रहा है । उसका सम्मान किया जाना जरूरी है । अतएव नदी तट पर गाव का जन-समूह एकत्र था । गाव के युवकों ने उसका विशेष सम्मान करने का निश्चय किया था । नाव से उतरते ही जोरावर फूलों की माला से लाद दिया गया । उस समूह में जोरावर के माता पिता तो थे ही, रामदास और यशोदा भी थी । नाव से उतरते ही जोरावर ने रामदास और यशोदा की चरण रज ली । वह दूर पडे माता पिता के चरणों में झुक गया । गाव निवा

है ।

लाकन एक दिन नगर में
लगी शत्रु दल जिस स्थान में
कर दिया गया । बहुत से
गए । परंतु अपने दश की मुर्तियां
वह फौजी अस्पताल में दाखिल
हाथ काट दिया ।

सुखिया ने कुछ दिन
उसने अपना भैया बुलाया था
चला गया थी । किंतु अपने
के पास पहुंच गयी थी । एक
ही चला था । सरकार ने उसे
वह अस्पताल से मुक्त हुआ,
जोरावर का विशिष्ट पदक
है । उसे अपने ही गांव में
रखा ।

सुखिया एक सप्ताह से
बाह्र बंधे से काट दी गयी ।
हुए थे । जब सुखिया गांव लौ
था । सरकार ने उसे नभी
गांव में आया, तो उससे पूछ
गांव में प्रचारित कर दिया
किया जाना जरूरी है । अतए
था । गांव के युवकों ने उसका
था । नाब से उतरते ही जोरा
उस समूह में जोरावर के माता
भी थी । नाब से उतरते ही जा
रज ली । वह दूर छड़े माता ।

घड़ी बर दी थी, मैं उसे तोड़ दूंगा। माता-पिता क समान ताऊ और ताई भी मेरे पूजनीय है, मैं उनकी सेवा मे अपने को अर्पित कर दूंगा।'

युवको ने जोरावर को कंधे पर उठा लिया और सभा का भ्रमापन करने से पूव चौधरी विक्रम ने कहा—'हम वद्ध हुए। अब मजिल के अन्त पर आ गए। अब युवको का समय है। अब इही का उत्तरदायित्व है, गाव को और जन-जन को दिशा बोध प्रदान करें।

श्री राम शर्मा राम

13 5-87

श्याम नगर,

लिसाडी गेट, मेरठ—2

